लोक कथाओं में अक्लमन्द आदमी

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Cover Title : Lok Kathaon Mein Aklamand Aadmi (Intelligent Men in Folktales)
Cover Page picture : Snake Charmer
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Web Site: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5

लोक कथाओं में अक्लमन्द आदमी 7

1 नरसिंह और राम की कहानी 9

2 चतुर सँपेरा 15

3 अनाथ राजकुमार 20

4 अनन्सी मछली पकड़ने चला 22

5 लैरी गोरमन की कहानी 36

6 सोने की लीद करने वाला घोड़ा 39

7 होशियार चरवाहा 51

8 एक विद्यार्थी की कहानी 58

9 अमीन और गुल 64

10 चीते के शरीर पर धारियाँ कैसे 74

11 एक बछड़ा जो तीन बार बेचा गया 79

12 बहादुर इगोरी और जिप्सी 84

13 आधी धूप आधी छाँह 93

14 बीरबल स्वर्ग गये 97

15 दुनियाँ का सबसे होशियार आदमी 102

16 पागल, चालाक और कॉटा 117

17 बतख़ों का बँटवारा 124

18 एक पत्नी जो हवा पर ज़िन्दा थी 136

19 पैसा परमेश्वर है 146

20 सात ख़ुश गाँव वाले 153

20 नौ भाई 158

22 एक राजा जो बूढ़ों से नफरत करता था 162

23 होशियार राजकुमारी 169

24 होशियार किसान 177

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज़ के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

लोक कथाओं में अक्लमन्द आदमी

हिन्दी में एक कहावत है "अक्ल बड़ी कि भैंस"। जिसका मतलब होता है कि अक्ल ज़्यादा फायदेमन्द होती है या फिर ताकत ज़्यादा बड़ी होती है। अब देखने में तो भैंस ही बड़ी होती है अक्ल तो दिखायी भी नहीं देती। पर कौन बड़ा होता है यह तो समय आने पर ही पता चलता है। यह हम एक साधारण से उदाहरण से समझा सकते हैं। यह उदाहरण एक ऐसा उदाहरण है जिसमें साफ साफ पता चलता है कि इसमें जितनी अक्लमन्दी की जरूरत है उतनी ताकत की नहीं।

जैसे कि अगर एक बहुत बड़ा भारी पत्थर रखा हो और अगर उसको तुम्हें लुढ़काने के लिये कहा जाये तो तुम कहोगे कि यह पत्थर तो बहुत बड़ा है इसको तो हिलाने के लिये भी बहुत ताकत की जरूरत है फिर मैं इसे कैसे लुढ़का सकता हूँ पर एक अक्लमन्द आदमी उसे बिना अपनी ताकत के केवल अपनी अक्लमन्दी से ही लुढ़का ही नहीं सकता बल्कि उसको उठा कर ऊपर भी ले जा सकता है। यह है अक्लमन्दी का कमाल।

दुनियॉ मे दो तरह के लोग होते हैं – एक तो अक्लमन्द और दूसरे बेवकूफ। ये लोग आदमी, औरत या जानवर कोई भी हो सकते हैं। अक्लमन्द लोग अपनी अक्लमन्दी से खराब से खराब हालतों में भी अपना काम बना लेते हैं और बेवकूफ लोग अच्छे से अच्छे हालात में भी अपने काम बिगाड़ लेते हैं और अपना बहुत कुछ खो देते हैं। एक अक्लमन्द आदमी या जानवर एक ताकतवर आदमी या जानवर से ज़्यादा अच्छा होता है।

अक्लमन्द आदमियों की लोक कथाऐं भी दो तरह की पायी जाती हैं। एक तो वे जिनमें उन्होंने अपनी अक्लमन्दी या बेवकूफी का इस्तेमाल अपने लिये किया है और वे उसकी वजह से या तो किसी परेशानी में से निकल आये हैं या फॅस गये हैं। और दूसरी वे जिनमें उन्होंने अपनी अक्लमन्दी या बेवकूफी का इस्तेमाल दूसरों के लिये इस्तेमाल किया है और उससे दूसरे लोगों को फायदा या नुकसान कराया है। हर हालत में दोनों ही अक्लमन्द होते हैं।

इससे पहले हमने एक पुस्तक प्रकाशित की थी जिसमें हमने अक्लमन्द जानवरों की कुछ ऐसी लोक कथाऐं प्रकाशित की थीं जिनमें उन्होंने अपनी अक्लमन्दी अपने लिये ही इस्तेमाल की थी। इस पुस्तक में वे कथाऐं दी गयी हैं जिनमें आदमियों ने अपनी अक्लमन्दी अपने लिये इस्तेमाल की है।

तो लो पढ़ो ये इतनी सारी लोक कथाऐं आदमियों की अक्लमन्दी और बेवकूफी की.... । और जानो कि अक्लमन्दी शरीर की ताकत से ज़्यादा बड़ी कैसे होती है। ये सारी लोक कथाऐं हमने तुम्हारे लिये बहुत सारी जगहों से खास तौर पर इकट्ठी की हैं।

1 नरसिंह और राम की कहानी[1]

यहॉ हम पहली दो कहानियॉ हिन्दू धर्म शास्त्रों से ली गयी दे रहे हैं। इन दोनों कहानियों में दो लोगों ने अमर होने की इच्छा से ऐसे वरदान मॉग लिये हैं जिससे उनको मारना असम्भव सा हो गया है।

भगवान खुद चिन्तित थे कि वह उनको कैसे मारें। तुम खुद सोच कर देखना कि अगर तुम उस स्थिति में होते तो तुम उनको कैसे मारते।

जब ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की तो उन्होंने दस मानस पुत्रों को पैदा किया जिनमें एक का नाम था महर्षि कश्यप जी उनका एक पुत्र और था उसका नाम था दक्ष। दक्ष के साठ बेटियॉ थीं जिनमें से उन्होंने अपनी तेरह बेटियों की शादी कश्यप जी से कर दी थी। इनमें से उनकी दो पत्नियों का नाम था अदिति और दिति।

अदिति एक बहुत अच्छी मॉ थी उसके बच्चे देवता कहलाये क्योंकि उसने अपने बच्चों को अच्छे गुण सिखाये थे। दिति वैसा नहीं कर सकी सो उसके बच्चे दैत्य कहलाये। वे मनुष्यों पर बहुत अत्याचार करते रहते थे।

[1] The Story of Narsinh. A Hindu religious story

नरसिंह की कहानी

उनमें से एक दैत्य का नाम था हिरण्यकश्यप। यह एक बहुत ही बलशाली दैत्य था। इसका एक भाई भी था वह भी बहुत बलशाली था जिसको भगवान ने पहले ही मार दिया था।

अपने भाई की हत्या का बदला लेने के लिये इसने विष्णु को मारने की सोची। देवताओं को मारना आसान नहीं था उनको मारने के लिये अतिरिक्त शक्ति की आवश्यकता था जिसके लिये उसके गुरू ने उसे तप करने का सुझाव दिया।

उसने बहुत सालों तक ब्रह्मा जी का तप किया। उसके तप की गर्मी से सारा संसार जलने लगा तो ब्रह्मा जी ने उसे दर्शन दिये और उससे वर मॉगने के लिये कहा।

हिरण्यकश्यप ने अमर होने का वरदान मॉगा। ब्रह्मा जी न कहा — "अमर तो मैं भी नहीं हॅू फिर मैं तुम्हें अमर होने का वरदान कैसे दॅू। हॉ तुम अपनी मृत्यु किसी ऐसी दशा में मॉग लो जो असम्भव सी हो। इससे तुम बहुत दिनों तक जी सकोगे।"

हिरण्यकश्यप राजी हो गया। उसने सोच विचार कर ब्रह्मा जी से कहा कि वह "न तो दिन में मरे न रात में मरे। न घर के बाहर मरे न घर के बाहर मरे। न किसी आदमी से मरे और न किसी जानवर से मरे। न किसी अस्त्र से मरे और न ही किसी शस्त्र से मरे। न धरती पर मरे और न आसमान में मरे।"

बह्मा जी वरदान देने के लिये वचनबद्ध थे सो दुखी मन से वह उसे यह वरदान दे कर अपने लोक को चले गये। अब क्या था अब तो हिरण्यकश्यप की चॉदी ही चॉदी थी। अब वह निडर हो कर संसार में घूमता था और अत्याचार करता था। उसने देव लोक पर अपना अधिकार कर लिया था और लोगों को मजबूर किया कि वे उसे भगवान मानें और उसकी पूजा करें।

जब उसके पापों का घड़ा भर गया तब विष्णु ने नरसिंह का रूप धारण किया और उसे मारा। आओ तुम्हें बताते हैं कि उन्होंने उसे कैसे मारा।

नरसिंह रूप में उनका सिर सिंह यानी शेर का था और धड़ आदमी का था। हाथ शेर के पंजे जैसे थे। यानी न तो वह जानवर ही थे और न ही आदमी।

उन्होंने उसे शाम के समय मारा सो उस समय न दिन था और न रात थी। उन्होंने उसे अपने घुटनों पर लिटा कर मारा सो उन्होंने उसे न धरती पर मारा और न आसमान में मारा।

उन्होंने अपने नाखूनों से उसका पेट फाड़ कर मारा सो उन्होंने न तो कोई अस्त्र ही इस्तेमाल किया और न शस्त्र ही इस्तेमाल किया। उन्होंने उसको दरवाजे की देहरी पर मारा जिससे उन्होंने उसे न घर के भीतर मारा न घर के बाहर ही मारा।

इस तरह उन्होंने उसे उसकी रखी हुई पॉच शर्तों को पूरा करते हुए मार दिया।

राम की कहानी

दूसरी कहानी राक्षसराज रावण की कहानी है। रावण भी बहुत महत्वाकांक्षी था। वह भी अमर होना चाहता था। उसने भी हजारों साल ब्रह्मा जी के लिये तप किया। तप की समाप्ति पर ब्रह्मा जी प्रसन्न हुए और उसे दर्शन दे कर कहा कि वह जो वर चाहे वह वह वर माँग ले।

रावण को अपने बल का बहुत घमंड था। वह भी त्रिलोक पर राज करना चाहता था सो उसने भी उनसे अमर होने का वर माँगा पर ब्रह्मा जी ने उसको भी यह कहते हुए उस वर के लिये मना कर दिया कि यह वर देना उनके वश में नहीं था पर वह कोई ऐसा वर माँग सकता था जिससे उसका मरना असम्भव सा हो जाये।

यह सुन कर रावण ने उनसे यह वर माँगा कि वह न तो किसी देवता के हाथों मरे न किसी राक्षस के हाथों मरे। इसके अलावा जब भी कभी कोई उसका कोई सिर हाथ या पैर काटे तो वह वहाँ फिर से नया उत्पन्न हो जाये।

ब्रह्मा जी ने पूछा — "क्या तुम बस यही माँगना चाहते होऋ"

रावण बोला — "जी हाँ।"

ब्रह्मा जी ने कहा — "और आदमी और बन्दरऋ"

रावण ने कहा — "उँह। आदमी और बन्दर तो हमारा भोजन हैं मैं उनसे नहीं डरता।"

ब्रह्मा जी ने तथास्तु कहा और अपने लोक को चले गये।

अब क्या था अब तो रावण को कोईमार नहीं सकता था सो वह विश्व विजय के लिये निकल पड़ा। उसने इन्द्र को बन्दी बना लिया। नौओं ग्रहों को अपने नियन्त्रण में ले लिया और उनको मुँह नीचा कर के अपने सिंहासन की सीढ़यॉ बना कर इस्तेमाल करता था।

वह दो लोगों से हार जरूर गया पर मारा किसी से नहीं गया। वानरराज बालि उसे अपनी बगल में दबा कर तीन दिनों तक घूमता रहा। महाबली सहस्त्रबाहु भी उसको पकड़ कर ले गया था और उसे ले जा कर अपनी घुड़साल में बन्द कर दिया था। तब रावण के बाबा पुलस्त्य ऋषि उसको छुड़ा कर ले गये थे।

अब ऐसे राक्षस को कैसे मारा जाये। बच्चो तुम्हें याद होगा कि रावण ने आदमी और बन्दर से अपनी रक्षा नहीं मॉगी थी सो विष्णु ने आदमी का अवतार लिया बन्दरों की सेना इकट्ठी की और तब रावण को मारा।

मारते समय राम जब भी उसके शरीर का कोई अंग काटते कोई बॉह सिर या टॉग तो उसकी जगह दूसरी बॉह सिर या टॉग प्रगट हो जाती। इसके अलावा उसकी नाभि में अमृत कुंड था सो वह वैसे भी नहीं मर रहा था।

इसके लिय राम ने उसके शरीर में इकत्तीस बाण एक साथ मारे – दस बाण दस सिरों के लिये बीस बाण उसकी बीस भुजाओं के

लिये और एक बाण उसकी नाभि का अमृत कुंड तोड़ने के लिये। तब कहीं जा कर रावण मरा।

ये कहानियॉ हमने तुम्हारे पढ़ने के लिये यहॉ इसलिये नहीं दी हैं क्योंकि ये हमारे भगवान की कहानियॉ हैं बल्कि इसलिये दी हैं ताकि तुम यह समझो कि सब कुछ मॉगने पर भी फिर भी कुछ न कुछ ऐसा रह ही जाता है जिससे अपना काम किया जा सकता है।

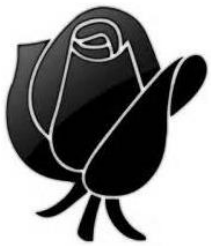

2 चतुर सॅपेरा[2]

अक्लमन्दी की यह सबसे पहली कहानी हमने तुम्हारे लिये अफ्रीका के मोरक्को देश की कहानियों से ली है। इसमें देखने वाली बात यह है कि एक अक्लमन्द सॅपेरा एक खब्ती सुलतान से अपनी केवल जान ही नहीं बचाता बल्कि उससे इनाम के पैसे भी ऐंठ लेता है।

खुदा सुलतान ज़ादी[3] का भला करे कि एक बार उसका अपने महल में मन नहीं लग रहा था सो उसने अपने एक बाजा बजाने वाले को जिसका नाम मुहम्मद था बुलाया।

कुछ दिन उसने उस बाजा बजाने वाले के संगीत का आनन्द लिया और फिर अपने अच्छे मूड में आ गया। उसने फिर से हॅसना शुरू कर दिया और सबसे हॅसी मजाक करना शुरू कर दिया।

पर इस बात को बहुत दिन नहीं बीते थे कि वह अपने बाजा बजाने वाले से थक गया और उसने उस बदकिस्मत का सिर कटवा दिया।

फिर उसने अपने हार्प[4] बजाने वाले को जिसका नाम जोसेफ था उसको बुलाया। पर कुछ दिनों में हार्प का

[2] The Clever Snake Charmer – a folktale from Morocco, Northern Africa, Africa
Translated from "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela.
[3] King Zaadee
[4] Harp is a western kind of string musical instrument. See its picture above.

संगीत भी उसके कानों में चुभने लगा और उसने उस हार्प बजाने वाले का सिर भी कटवा दिया।

और भी बहुत सारे लोग सुलतान का दिल बहलाने के लिये आये पर हर बार वह केवल कुछ ही दिनों के लिये खुश होता उसके बाद वह फिर बेचैन और गुस्सा सा हो जाता। सो वह फिर अपने सिपाहियों को बुलाता और उनके सिर काटने का हुक्म दे देता।

ये हालात इतने बिगड़े कि अब उसके राज्य में हर आदमी बैठा बैठा कॉपने लगता। हर आदमी यही सोचता कि पता नहीं कब सुलतान उसको बुला ले और फिर कुछ दिन बाद उसको तलवार से मारने का हुक्म दे दे।

जल्दी ही हर आदमी उस सुलतान के शहर को छोड़ छोड़ कर जाने लगा — कहानी कहने वाले, गाने बजाने वाले, नाचने वाले, मदारी आदि आदि।

लेकिन एक सुबह सेल्हम[5] नाम का एक सॅपेरा महल में आया और उसने बड़ी बहादुरी से यह ऐलान किया कि वह सुलतान का दिल बहलायेगा।

सुलतान के नौकर उसको सुलतान के पास ले आये। सुलतान ने भी उस सॅपेरे की तरफ बड़े शौक से देखा जो अपनी बॉसुरी की धुन पर सॉपों को

[5] Selham – the name of a Muslim snake charmer

खिलाता था। वह जब बॉसुरी बजाता था तो वे सॉप उसके थैले, टॉगें और गर्दन के चारों तरफ लिपट जाते थे।

उसने भी कुछ दिन सुलतान का दिल बहलाया पर बहुत दिन बीतने से पहले ही सुलतान का उससे भी दिल भर गया। वह अब उस सॅपेरे को सॉपों के साथ खेलते देखना नहीं चाहता था।

उस शाम सेल्हम जब अपनी बॉसुरी बजाने बैठा और उसके सॉप इधर उधर घूमने लगे तो सुलतान बोला — "दोस्त, अब तुम्हारी यह बॉसुरी और तुम्हारे ये सॉप काफी हो गये अब मैं अपने नौकरों को तुम्हारा सिर काटने का हुक्म दूँगा।"

सेल्हम डर कर बोला — "जहॉपनाह, जैसे आपकी मर्जी होगी वैसा ही होगा। पर आप मुझे एक मौका और दें। अगर आप मुझे एक मौका और देंगे तो यह आप ही के भले के लिये होगा।"

सुलतान ने कहा — "ठीक है। मैं खुशी से तुमको एक मौका और दूँगा पर तुमको यह मौका मुझसे लेना पड़ेगा। तुमको यह मौका तब मिलेगा जब तुम कल मेरे सामने एक सवार और एक पैदल दोनों के रूप में एक साथ आओगे।

यह मेरा हुक्म है। और जो मेरा हुक्म नहीं मानते मैं उनको तलवार से मरवा दिया करता हूँ।"

सेल्हम ने सुलतान को सिर झुकाया और चला गया। अगले दिन सुबह सवेरे उस सॅपेरे को देखने से पहले सुलतान अपने छत पर खड़ा हुआ था।

जब महल के दरवाजे खुले तो सुलतान की ऑखें तो फटी की फटी रह गयीं। वह कुछ बोल ही नहीं सका। सेल्हम एक बहुत ही छोटे से गधे पर चढ़ा दरवाजे में से हो कर अन्दर आ रहा था। इतना छोटा गधा सुलतान ने पहले कभी नहीं देखा था।

यह गधा इतना छोटा था कि कि सेल्हम के उस पर बैठने के बावजूद उसके दोनों पैर जमीन को छू रहे थे। सो जब वह सुलतान के सामने आया तो वह एक सवार भी था क्योंकि वह गधे पर सवार था और वह एक पैदल चलने वाला भी था क्योंकि उसके दोनों पैर जमीन से छू रहे थे।

सुलतान यह देख कर बहुत खुश हुआ और बोला — "बहुत अच्छे। तुमने वही किया जो तुम्हें करना था। पर अभी तुमने अपना काम पूरा नहीं किया है।

अगर तुम यह चाहते हो कि मैं तुमको तलवार वाले आदमी के हवाले न करूँ तो तुमको मेरे तीन सवालों के जवाब भी देने होंगे। मेरा पहला सवाल है – आसमान में कितने तारे हैं?"

सँपेरा बोला — "जहाँपनाह, आसमान में उतने ही तारे हैं जितने कि मेरे गधे के शरीर पर बाल हैं, उसकी पूँछ के बालों को छोड़ कर। आप चाहें तो गिन सकते हैं।"

सुलतान उसकी तारीफ करते हुए बोला — "बहुत अच्छे। अब मेरा दूसरा सवाल है – हम धरती के कौन से हिस्से में हैं?"

सॅपेरा बोला — "हम लोग धरती के बीच के हिस्से में है जहॉपनाह।"

यह सुन कर सुलतान फिर हॅस दिया और फिर बोला — "मेरा तीसरा और आखिरी सवाल। मेरी दाढ़ी में कितने बाल हैं?"

सॅपेरा बोला — "आपकी दाढ़ी में उतने ही बाल हैं जितने बाल मेरे गधे की पूॅछ में हैं। आप अपनी दाढ़ी कटवा दें और मैं अपने गधे की पूॅछ कटवा देता हूॅ फिर हम उनको साथ साथ गिन सकते हैं।"

आखीर में सुलतान बोला — "नहीं नहीं, इसकी कोई जरूरत नहीं। तुम बहुत चतुर हो। ऐसा कोई सवाल नहीं जिसका जवाब तुम नहीं दे सकते।"

उसने अपने एक दरबारी को बुलाया और उसको कुछ लाने के लिये कहा। कुछ ही देर में दरबारी वापस आया और उसने सेल्हम के हाथों में सोने के सिक्कों की एक थैली रख दी।

सॅपेरे ने काफी झुक कर सुलतान को सलाम किया और बाहर खड़े अपने गधे के पास चला गया।

सुलतान एक बार फिर उस चतुर सॅपेरे को अपने महल के दरवाजे से बाहर उस गधे पर सवार होते हुए और उसी समय पैदल चलते हुए देखने के लिये अपनी छत पर गया।

सेल्हम अपने उस छोटे से गधे पर सवार होते हुए और पैदल चलते हुए अपने घर की तरफ चलता चला जा रहा था।

3 अनाथ राजकुमार[6]

एक बार की बात है कि एक ज़ार[7] अपनी ज़ारिट्ज़ा[8] के साथ रहता था जिनके केवल एक ही बेटा था। एक बार ज़ार को किसी काम से कहीं बाहर जाना पड़ा तो उसके पीछे उसको परिवार के बुरे दिन आ गये।

ज़ारेविच[9] कहीं गायब हो गया। सबने ज़ारेविच को बहुत ढूँढा बहुत ढूँढा पर न तो उसकी कोई सॉस ही सुनायी दी और न ही कोई उसकी आवाज ही सुनायी दी।

इसी तरह से पन्द्रह साल गुजर गये कि ज़ार ने एक खबर सुनी कि एक गॉव में एक किसान को एक बच्चा मिला है जो अपनी सुन्दरता और चतुरायी के लिये बहुत मशहूर हो गया है।

सो ज़ार ने उसको अपने उस बच्चे को उसके पास जल्दी से जल्दी लाने के लिये कहा। जब वह आ गया तो ज़ार ने उससे पूछा कि उसको यह बच्चा कहॉ से मिला। किसान ने उसे बताया कि यह बच्चा उसे पन्द्रह साल पहले मक्का के एक भंडारघर में मिला था।

---

[6] The Foundling Prince – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book :
"Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief and Translated by Leonard Arthur Magnus. This book is available in Hindi too from hindifolktales@gmail.com in e-book form free of charge.

[7] Tsar, or Tzar is the title of King in Russia before 1917.

[8] Tzaritsa is the Queen of Tzar, means King in Russia.

[9] Tzarevich means the child of Tzar – it may be a son or a daughter – here it means the Prince,

उसके शरीर पर कुछ अजीब से शाही कपड़े थे सो उसको लगा कि वह ज़रूर ज़ार का ही बेटा होगा।"

तब ज़ार ने किसान से कहा — "अपने उस पाये हुए बच्चे से कहना कि वह मेरे पास न तो नंगा ही आये और न ही कपड़े पहन कर आये। न तो पैदल आये और न ही घोड़े पर सवार आये। न तो दिन में आये और न रात में आये। न ही वह गली में आये न ही वह ऑगन में आये।"

यह सुन कर किसान घर चला गया। घर जा कर वह बहुत रोया और अपनी समस्या बता कर बोला कि ऐसा कैसे होगा। बेटा बोला — "यह तो बहुत आसान है पिता जी। मैं इस पहेली का जवाब दे दूँगा।"

सो उसने अपने सारे कपड़े उतार कर एक जाली से अपने नंगे बदन को ढॉप लिया। एक बकरे पर सवार हुआ और ज़ार के पास सुबह सूरज निकलने से पहले वाले धुँधलके में आया और आ कर उसके बकरे के दो पैर ज़ार के ऑगन में रखे और उसके पिछले दो पैर गली में रखे।

जब ज़ार ने उसको इस तरह आते देखा तो उसको विश्वास हो गया कि यही मेरा बेटा है।

4 अनन्सी मछली पकड़ने चला[10]

अक्लमन्दी की यह कहानी अफ्रीका के घाना देश की है। इसमें एक अक्लमन्द आदमी अपने आपको बहुत अक्लमन्द समझने वाले मकड़े को भी अपनी अक्लमन्दी से धोखा दे देता है।

एक बार अशान्ती देश[11] में जंगल के किनारे के पास एक आदमी रहता था जो मीलों तक सब लोगों में बहुत मशहूर था। उसका नाम था अनन्सी।

अनन्सी कोई बहुत बड़ा शिकारी नहीं था या कोई बहुत बड़ा काम करने वाला नहीं था या फिर कोई बहुत बड़ा लड़ने वाला भी नहीं था। उसकी खासियत तो बस उसकी बात करने की चतुरायी में थी।

वह बहुत चतुर था। वह सबको अपनी चतुरायी से जीत लेता था। वह अच्छी तरह रहना चाहता था पर चाहता था कि दूसरे लोग उसके लिये काम करें।

पर क्योंकि देश के सभी लोग अनन्सी को अच्छी तरह जानते थे और उसकी वजह से कई बार मुश्किल में फॅस चुके थे इसलिये वे

[10] Anansi's Fishing Expedition – a folktale from Ghana, West Africa. Hindi translation of this book in e-book form can be obtained free of charge from hindifolktales@gmail.com .

[11] Long before Ghana was known as Gold Coast. Ashanti was a large tribe there and ruled the Ashanti Kingdom for long time. This kingdom was named on the name of that tribe.

अब उसकी चालाकियों में नहीं फॅसते थे। इसलिये अब उसको उनको बेवकूफ बनाने का कोई और तरीका निकालना था।

एक दिन अनन्सी गॉव में बैठा हुआ था कि उसके पास ओसान्सा[12] नाम का एक आदमी आया।

अनन्सी उससे बोला — "मेरे दिमाग में एक विचार आया है क्यों न हम लोग अपने मछली पकड़ने के जाल साथ साथ डालें? फिर हम उन जालों से जो मछलियॉ पकड़ेंगे उन मछलियों को बाजार में बेच लेंगे और अमीर हो जायेंगे।"

पर ओसान्सा अनन्सी की साख अच्छी तरह जानता था सो वह बोला — "नहीं अनन्सी भाई नहीं। मेरे पास तो अभी काफी खाना है खाने के लिये भी और बेचने के लिये भी। अच्छा तो यही होगा कि तुम अपना मछली पकड़ने का जाल अपने आप ही फेंक लो।"

अनन्सी ज़ोर से हॅसा और बोला — "मछली पकड़ना और अकेले? तब तो मुझ अकेले को ही सारा काम करना पड़ेगा। मुझको तो एक ऐसे बेवकूफ साथी की जरूरत है जो मेरा सारा काम वह करे और मछली बेच कर अमीर मैं बनूॅ।"

यह सुन कर ओसान्सा वहॉ से चला गया। कुछ देर बाद एक और आदमी वहॉ आया। उसका नाम था अनेने[13]।

[12] Osansa – a name of a man of Ghana

[13] Anene – a name of a man of Ghana

अनन्सी उससे भी बोला — "मेरे दिमाग में एक विचार आया है क्यों न हम लोग अपने मछली पकड़ने के जाल साथ साथ डालें? फिर हम उन जालों से जो मछलियॉ पकड़ेंगे उन मछलियों को बाजार में बेच लेंगे और अमीर हो जायेंगे।"

हालॉकि अनेने भी अनन्सी को बहुत अच्छी तरह जानता था पर उसने अनन्सी की बात बड़े ध्यान से सुनी और बोला — "यह तो बहुत ही अच्छा विचार है अनन्सी भाई। दो लोग एक आदमी से बहुत ज़्यादा मछली पकड़ सकते हैं। चलो मैं तैयार हूॅ।"

अब क्या था गॉव में यह खबर बहुत जल्दी ही चारों तरफ फैल गयी कि अनन्सी और अनेने दोनों एक साथ मछली पकड़ने जा रहे हैं।

ओसान्सा अनेने से बाजार में मिला और बोला — "हमने सुना है कि तुम अनन्सी के साथ मछली पकड़ने जा रहे हो। क्या तुम नहीं जानते कि वह तुम्हारा बेवकूफ बनाने जा रहा है?

वह तो हर एक से यही कहता है कि उसको मछली पकड़ने के लिये साथ जाने के लिये एक बेवकूफ आदमी की जरूरत है और मैं नहीं समझता कि तुम उसके हाथों बेवकूफ बनना पसन्द करोगे।

असल में उसको कोई ऐसा आदमी चाहिये जो उसके लिये जाल फेंक सके और और भी कई सारे काम कर सके जबकि पकड़ी हुई मछली बेच कर उसके सारे पैसे वह खुद ले सके।"

अनेने बोला — "तुम चिन्ता न करो दोस्त ओसान्सा। अनन्सी मुझे बेवकूफ नहीं बना पायेगा।"

अगले दिन अनन्सी और अनेने दोनों मछली पकड़ने का जाल बनाने के लिये जंगल में पाम के पेड़ की कुछ शाखाऐं काटने गये। अनन्सी तो सारे रास्ते बस यही सोचता रहा कि वह अनेने से कैसे ज़्यादा से ज़्यादा काम ले सकता है।

वे दोनों जंगल में वहाँ पहुँचे जहाँ बहुत सारे पाम के पेड़ उगे हुए थे तो अनेने बोला — "अनन्सी, तुम चाकू मुझे दे दो। मैं मछली के जाल बनाने के लिये पाम के पेड़ की शाखाऐं काटता हूँ। हम लोग साथी हैं न इसलिये हम सब काम साझेदारी में करेंगे। मेरा काम शाखाऐं काटने का है। तुम्हारा काम मुझसे थक जाने का है।"

अनन्सी बोला — "ज़रा रुको। मुझे सोचने दो।"

कुछ पल बाद वह बोला — "मैं ही क्यों थकूँ?"

अनेने बोला — "जब कुछ काम करने के लिये होता है तो किसी न किसी को तो थकना ही होता है न? यही तो तरीका है काम करने का। सो अगर मैं शाखाऐं काटूँगा तो कम से कम तुम यही कर सकते हो कि तुम मेरे लिये थक ही जाओ।"

अनन्सी बोला — "तुमने क्या मुझे बेवकूफ समझ रखा है? लाओ चाकू मुझे दो मैं शाखाऐं काटता हूँ और तुम मेरे लिये थको। मैं किसी के लिये थक नहीं सकता।"

अनेने ने सीधे स्वभाव चाकू अनन्सी को दे दिया। अनन्सी ने चाकू लिया और पाम के पेड़ से उसकी शाखाऐं काटने लगा और अनेने पास में खड़े हो कर उसे देखने लगा। अब हर बार जब भी अनन्सी कोई शाख काटता तो अनेने थकान की एक आह भरता।

फिर थकान का बहाना करते हुए अनेने पास में लगे एक पेड़ की छाया में बैठ गया और थकान की वजह से आह ओह करने लगा जबकि अनन्सी शाखाऐं काटता रहा और पसीने में तर बतर होता रहा।

आखीर में जब सारी शाखाऐं कट गयीं तो अनन्सी ने उन सब शाखाओं को एक बड़े से गट्ठर में बॉध लिया। अनेने भी अपनी कमर पकड़े कराहता हुआ जमीन पर से उठा और बोला — "अनन्सी, मैं बहुत थक चुका हूँ। लाओ लकड़ियों का यह गट्ठर मैं ले चलता हूँ। अब तुम मेरे लिये थक सकते हो। मैं तुम्हारे लिये काफी थक लिया।"

अनन्सी बोला — "अरे नहीं नहीं मेरे दोस्त। अब मैं इतना भी बेवकूफ नहीं हूँ जो यह न समझ सकूँ कि मुझे क्या करना चाहिये। मैं यह लकड़ी लिये चलता हूँ तुम मेरे लिये थकान ले कर चलो।"

सो अनेने ने वह लकड़ी का गट्ठर अनन्सी के सिर के ऊपर रख दिया और दोनों गॉव की तरफ वापस चल दिये।

अनेने रास्ते भर आह ओह करता रहा और अनन्सी से कहता रहा — "ओह अनन्सी धीरे से, सॅभाल के। आह।"

जब वे गॉव के पास आ गये तो अनेने बोला — "लाओ अनन्सी, अब मैं इन शाखाओं के मछली पकड़ने वाले जाल बनाता हूॅ। तुम अब थोड़ी देर बैठ जाओ और मेरे लिये थकते रहो। मैं अब काफी थक चुका हूॅ।"

अनन्सी बोला — "ओह नहीं अनेने। तुम उसी तरह से रहो जैसे हो। मैं खुद ही जाल बना लूॅगा।"

और वह मछली पकड़ने वाला जाल बनाने बैठ गया।

अनेने एक पेड़ की छाया में ऑखें बन्द कर के लेट गया। वह वहॉ लेट कर आह ओह करता रहा जैसे कि वह बहुत थक गया हो।

अनन्सी गर्मी में बैठा बैठा जाल बनाता रहा। पसीना उसके चेहरे पर से टपक टपक कर उसकी छाती पर टपक रहा था।

अनन्सी ने देखा कि अनेने बेचारा उसकी थकान और दुखती हुई मॉस पेशियॉ ले कर वहॉ लेटा हुआ था। उसको उसके ऊपर तरस आने लगा कि वह उसकी थकान ले कर कितना परेशान था सो उसने अपना सिर हिलाया और अपनी जीभ काट ली।

फिर अपने आपसे बोला — "अनेने सोचता है कि वह बहुत अक्लमन्द है। पर देखो तो वह बेचारा कितना दुखी हो कर लेटा हुआ है। लगता है कि वह तो मेरी थकान से ही मरा जा रहा है।"

जब मछली पकड़ने वाले जाल बन गये तो अनेने उठ खड़ा हुआ और बोला — "अनन्सी मेरे दोस्त, कम से कम अब तो मुझे

इन जालों को पानी के पास ले जाने दो और अब तुम मेरे लिये थक जाओ। देखो न मैं तुम्हारे लिये कितना थक चुका हूँ।"

अनन्सी बोला — "अरे नहीं नहीं अनेने नहीं, तुम बस मेरे साथ आ जाओ और अपने हिस्से का काम करते रहो। मैं इनको ले कर चलता हूँ और तुम मेरे लिये थकते रहो।

सो वे दोनों पानी के पास चले – अनन्सी जाल उठाये हुए और अनेने कराहते हुए।

जब वे पानी के पास पहुँच गये तो अनेने ने अनन्सी से कहा — "यहाँ ज़रा सा रुको अनन्सी। अब हमको यहाँ पर कुछ विचार कर लेना चाहिये।

देखो यहाँ इस पानी में बहुत सारी शार्क मछलियाँ हैं। हममें से किसी को भी यहाँ चोट लग सकती है इसलिये मेहरबानी कर के अब तुम मुझे पानी में जाने दो और वहाँ मछली पकड़ने के लिये जाल बिछाने दो। क्योंकि अगर कोई शार्क मछली मुझे काटती भी है तो कम से कम तुम मेरे लिये मर तो सकते हो।"

अनन्सी ज़ोर से चिल्ला कर बोला — "वाह क्या बात कही है तुमने मेरे दोस्त अनेने। देखो अनेने, तुम एक बात कान खोल कर सुन लो। तुमने मुझे समझ क्या रखा है। तुम मुझे इतना बेवकूफ नहीं बना सकते जितना तुम सोचते हो। क्या मैं खुद के होते हुए तुमको खतरे में डालूँगा?

नहीं नहीं। मैं खुद पानी में जाऊँगा और मछली पकड़ने का जाल बिछाऊँगा। अगर कोई शार्क मुझे काट भी ले तो कोई बात नहीं तुम मेरी जगह मर जाना।"

कह कर अनन्सी ने मछली पकड़ने के जाल उठाये और पानी के अन्दर चला गया। वहाँ उसने जाल बिछाये और जाल बिछा कर दोनों गाँव वापस आ गये।

अगली सुबह जब वे अपने जाल देखने के लिये गये तो जाल में केवल चार मछलियाँ थीं। अनेने जल्दी से बोला — "अनन्सी, यहाँ तो केवल चार ही मछलियाँ हैं। इनको तुम ले लो। कल शायद जाल में और ज़्यादा मछलियाँ फँस जायें तो कल उन मछलियों को मैं ले लूँगा।"

अनन्सी बोला — "तुम मुझे क्या समझते हो? क्या मैं इतना बेवकूफ हूँ? नहीं अनेने नहीं, ये चारों मछलियाँ तुम ही रख लो मैं अपना हिस्सा कल ले लूँगा।"

सो अनेने ने वे चारों मछलियाँ ले लीं और उनको शहर ले जा कर बाजार में बेच आया। अगले दिन जब वे मछली का जाल देखने आये तो उनको वहाँ आठ मछलियाँ मिलीं।

अनेने बोला — "मुझे खुशी है कि आज तुम्हारी बारी है क्योंकि मुझे यकीन है कि कल इससे भी ज्यादा मछलियाँ जाल में फँसेंगीं।"

अनन्सी बोला — "एक मिनट, एक मिनट, तो क्या तुम यह कहना चाहते हो कि आज की पकड़ी मछलियॉ मैं ले जाऊॅ ताकि ज़्यादा मछलियॉ कल तुम घर ले जा सको?

ओह नहीं नहीं ऐसा नहीं हो सकता। ये सब मछलियॉ तुम्हारी हैं, मेरे दोस्त। तुम इन सबको ले जाओ। मैं अपने हिस्से की मछलियॉ कल ले लूॅगा।" सो अनेने ने वे आठों मछलियॉ उठायीं और उनको शहर ले जा कर बेच आया।

अगले दिन जब वे नदी पर आये तो उन्होंने देखा कि उनके जाल में तो सोलह मछलियॉ फॅसी पड़ी हैं।

अनेने बोला — "मैंने कल कहा था न कि कल और ज़्यादा मछलियॉ फॅसेंगीं सो देखो आज इन जालों में कल से दोगुनी मछलियॉ फॅसीं हैं। इनमें कुछ छोटी मछलियॉ भी हैं। मैं अपना हिस्सा कल ले लूॅगा आज इन मछलियों को तुम ले जाओ।"

अनन्सी बोला — "हॉ ठीक है तुम अपना हिस्सा कल ले लेना। आज मेरी बारी है मछलियॉ लेने की।"

लेकिन फिर उसने कुछ सोचा और बोला — "तुम मेरा फिर से बेवकूफ बना रहे हो अनेने, यह बात ठीक नहीं है। तुम मेरे दोस्त हो अनेने, तुमको मेरा भी तो कुछ फायदा सोचना चाहिये।

तुम चाहते हो कि मैं ये सोलह छोटी छोटी मछलियॉ ले जाऊॅ ताकि कल की बड़ी बड़ी मछलियॉ तुम ले जाओ। नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।

यह तो अच्छा है कि मैं सावधान हूॅ नहीं तो तुम तो मेरा बिल्कुल ही बेवकूफ बना देते। आज तुम ये सोलह मछलियॉ ले जाओ कल की मछलियॉ मैं ले जाऊॅगा।"

इस तरह अनेने ने उस दिन भी मछलियॉ उठायीं और उनको ले जा कर शहर के बाजार में बेच आया। अगले दिन वे फिर नदी पर अपना शिकार देखने के लिये आये और जाल में से मछलियॉ निकालने के लिये पानी में से जाल निकाला।

अनेने बोला — "अनन्सी भाई आज मछली ले जाने की तुम्हारी बारी है। आज मैं मछलियों को हाथ भी नहीं लगाऊॅगा वे सब तुम्हारी है। आज मैं इस बात के लिये बहुत खुश हूॅ।

और ये मछली पकड़ने के जाल भी अब फट गये हैं और सड़ भी गये हैं। अब हम इनको दोबारा इस्तेमाल नहीं कर सकते। मैं तुमको एक बात बताऊॅ – आज तुम ये मछलियॉ शहर ले जाओ और इनको बेच दो।

मैं ये सड़े हुए जाल ले लेता हूॅ और इनको बेच दूॅगा। ये सड़े हुए जाल तो बहुत ही अच्छी कीमत पर बिक जायेंगे। कितना अच्छा विचार है, है न?"

जब उन्होंने पानी में से अपना मछली पकड़ने वाला जाल निकाला तो उसमें काफी मछलियॉ थीं।

अनन्सी बोला — "हॅू। पर ज़रा रुको। इतनी जल्दी मत करो। अगर इनकी अच्छी कीमत मिलती है तो फिर ये मछली पकड़ने वाले जाल मैं ले लेता हॅू और इनको मैं खुद ही बेच लॅूगा। यह अच्छी कीमत तुम्हारी बजाय मुझे क्यों नहीं मिलनी चाहिये।

तुम ऐसा करो दोस्त, कि तुम ये पकड़ी हुई मछलियॉ बेचने के लिये ले जाओ और मैं ये मछली पकड़ने वाले जाल बेचने के लिये ले जाता हॅू।"

कह कर अनन्सी ने वे सड़े हुए मछली पकड़ने वाले जाल खुद उठाये, अपने सिर पर रखे और शहर की तरफ चल दिया। अनेने भी अपनी मछलियॉ ले कर उसके पीछे पीछे चल दिया।

जब वे शहर में आये तो अनेने ने तो अपनी मछलियॉ बाजार में बेच दीं पर अनन्सी ज़ोर ज़ोर से गाता हुआ आगे पीछे घूमता रहा — "मैं अपने ये सड़े हुए मछली पकड़ने के जाल बेच रहा हॅू। मैं अपने ये सड़े हुए मछली पकड़ने के जाल बेच रहा हॅू। कोई इन्हें खरीद लो, कोई इन्हें खरीद लो।"

पर कोई भी उसके सड़े हुए मछली के जाल खरीदना नहीं चाहता था। बल्कि शहर के लोग तो उससे इसी बात पर बहुत नाराज हो गये कि अनन्सी ने उनको इतना बेवकूफ समझा कि वे उसके सड़े हुए मछली पकड़ने के जाल खरीद लेंगे।

अनन्सी वहॉ सारा दिन गाता हुआ घूमता रहा — "मैं अपने ये सड़े हुए मछली पकड़ने के जाल बेच रहा हूॅ। मैं अपने ये सड़े हुए मछली पकड़ने के जाल बेच रहा हूॅ। कोई इन्हें खरीद लो, कोई इन्हें खरीद लो।" पर किसी ने उसके सड़े हुए जाल नहीं खरीदे।

आखिर शहर के सरदार ने भी अनन्सी को यह चिल्लाते हुए सुना तो वह भी बहुत गुस्सा हुआ। उसने अनन्सी को लाने के लिये अपने कुछ आदमी भेजे।

जब वे अनन्सी को पकड़ कर लाये तो सरदार ने उससे पूछा — "तुम क्या सोचते हो अनन्सी कि तुम क्या कर रहे हो? और यह क्या बदतमीजी है कि तुम ये सड़े हुए मछली पकड़ने वाले जालों को शहर के लोगों के ऊपर लाद रहे हो।"

अनन्सी बोला — "मैं तो अपने सड़े हुए मछली पकड़ने वाले जालों को बेच रहा हूॅ। ये तो बहुत ही बढ़िया सड़े हुए मछली पकड़ने वाले जाल हैं।"

सरदार बोला — "तुमने हमें समझा क्या है? और तुम हमें समझते क्या हो कि हमको कुछ पता ही नहीं है कि तुम हमको क्या बेच रहे हो?

तुम्हारा दोस्त अनेने यहॉ आया था और वह बहुत अच्छी मछलियॉ बाजार में बेच कर गया है और तुम हो कि ये सड़े हुए मछली के जाल बेच रहे हो।

लोगों को वैसी मछलियॉ चाहिये थीं पर तुम तो ऐसी चीज़ बेच रहे हो जो किसी काम की नहीं। बल्कि वह तो शहर भर में बदबू फैला रही है। यह ठीक नहीं है। तुम हमारी बेइज़्ज़ती कर रहे हो अनन्सी।"

सरदार के पास ही शहर के लोग खड़े खड़े यह सब सुन रहे थे। वह उन सब लोगों से बोला — "ले जाओ इसको और ले जा कर कोड़े लगाओ इसको।"

वहॉ खड़े लोग अनन्सी को शहर के दरवाजे पर ले गये और उसको डंडों से खूब मारा। अनन्सी बहुत चिल्लाया, बहुत रोया, बहुत शोर मचाया तो अन्त में उन्होंने उसको छोड़ दिया।

तब अनेने वहॉ आया और बोला — "अनन्सी, यह तो तुम्हारे लिये एक सबक था। तुम यह चाहते थे न कि कोई बेवकूफ तुम्हारे साथ मछली पकड़ने के लिये जाये पर तुमने ठीक से देखा ही नहीं कि तुम किसको साथ ले जा रहे हो। तुम तो खुद ही बेवकूफ बन गये।"

अनन्सी ने हॉ में सिर हिलाया। फिर कुछ सोचते हुए और अपनी पीठ और टॉगें जहॉ उसको डंडे पड़े थे सहलाते हुए और पछताते हुए अनेने से कहा — "हॉ तुम ठीक कहते हो अनेने।

पर मेरी यह समझ में नहीं आया कि तुम मेरे किस तरह के साथी हो? कम से कम तुमको मेरी इतनी परवाह तो करनी ही चाहिये थी कि जब मैं पिट रहा था तब तुम मुझे आ कर बचा लेते।

5 लैरी गोरमन की कहानी

यह कहानी नहीं है बल्कि एक सच्ची घटना है जिसमें एक आदमी अपनी होशियारी से एक स्त्री के घर में खाना और ठहरने की जगह लेता है। यह घटना कैनेडा के पूर्वी हिस्से में घटी थी।

लैरी गौरमन कैनेडा का सबसे अधिक मशहूर लोक गीतकार है। उसने सौ सालों पहले जिन लोक गीतों को लिखा था वे आज भी कैनेडा के पूर्वी हिस्से में गाये जाते हैं।

इन गीतों के अलावा उसने छोटी छोटी कविताएँ भी लिखीं हैं जो वह मौके के अनुसार लिखता था। इन कविताओं में उसका तुरत हॅसी मजाक का व्यवहार छिपा हुआ है। उसके जीवन की ऐसी ही एक घटना यहॉ दी जारही है।

एक बार लैरी उत्तर पश्चिम दिशा की ओर एक जंगल में से हो कर जा रहा था। रास्ते में रात हो गयी तो वह एक घर के सामने रुक गया और मकान मालिक से पूछा कि वह वहॉ रात को रुक सकता था कि नहीं।

उस घर में एक स्त्री रहती थी उसने लैरी को साफ मना कर दिया कि वह वहॉ उसे रुकने देने के लिये बिल्कुल भी राजी नहीं थी। इस पर लैरी बोला — "आप मुझे कमसे कम कुछ खाने के लिये तो दे सकती हैं?"

काफी सोच विचार के बाद वह स्त्री बोली — "ठीक है, अन्दर आ जाओ।" उसने लैरी को रसोईघर में बिठा कर खाना खिलाया और कुछ देर बातें कीं तो बातों बातों में उसका नाम और काम पूछा।

नाम और काम पता लगने पर वह बोली — "मेरे पति की मृत्यु को अधिक समय नहीं बीता है और मैं अभी तक उनकी कब्र के पत्थर को लिये कोई कविता नहीं लिख पायी हूँ। क्या तुम उस पत्थर के लिये कुछ लाइनें लिख दोगे?"

लैरी बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं। क्या नाम है उनका?"

वह स्त्री बोली "टीज़िल"।

लैरी ने बोलना शुरू किया —

"Mr Teazle died of late
Just arrived at Heaven's Gate"

स्त्री बोली — "वाह, कितनी सुन्दर लाइनें हैं।"

लैरी बोला — "अभी तो मैं केवल इतना कह सकता हूँ पर अगर आप मुझे यहाँ रात को सोने के लिये जगह दे दें तो मैं सुबह जाने से पहले इसे जरूर पूरा कर दूँगा।"

"हाँ हाँ क्यों नहीं।" और उस स्त्री ने उसके सोने का इन्तजाम कर दिया। अगले दिन उस स्त्री ने उसको नाश्ता कराया और जब

वह जा रहा था तो उसे उस कविता को पूरी करने की याद दिलायी।

लैरी बोला — "हॉ, मैं अभी पूरी करता हूँ उसे। कहॉ छोड़ा था मैंने उसे?"

स्त्री बोली —

"Mr Teazle died of late
Just arrived at Heaven's Gate"

लैरी ने उसको आगे पूरा किया —

Along came the Satan just like a weasel
And down to Hell, he dragged old Teazle"

और तुरन्त घर से बाहर भाग गया।

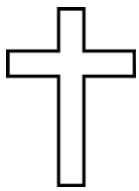

6 सोने की लीद करने वाला घोड़ा[14]

अक्लमन्दी की यह कहानी अफ्रीका महाद्वीप के गाम्बिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

अगर कभी कोई चोरी या झूठ की बात करता तो अहमाडु[15] इन दोनों में मास्टर था। वह कोई भी चीज़ चुरा ले सकता था जो भी उसके हाथ लग जाती।

वह अपने गॉव में इतना बदमाश हो गया था कि गॉव का कोई भी आदमी अपनी कोई भी चीज़ ऐसे ही खुली नहीं छोड़ता था।

अब क्योंकि वह ऐसा हो गया था तो सब लोग अपनी चीज़ें सॅभाल कर ही रखते थे। और क्योंकि अब वह गॉव वालों की कोई भी चीज़ नहीं चुरा सकता था तो कुछ दिनों बाद वह गरीब हो गया और इतना गरीब हो गया कि उसको खाने के भी लाले पड़ गये।

एक दिन उसके दिमाग में एक ख्याल आया कि अगर उसको अमीर आदमी बनना है तो चोरी करने के लिये गॉव का सरदार ठीक आदमी रहेगा।

इस दुनियॉ में उसके पास बस अब एक ही चीज़ बाकी रह गयी थी – वह था उसका घोड़ा। नहीं नहीं उसके पास दो चीज़ें थीं, अगर तुम उसे गिनो तो, साथ में उसकी पत्नी भी तो थी।

---

[14] Horse With the Golden Dung – a folktale from The Gambia, West Africa. Translated from the Book "The Orphan Girl and the Other Stories", by Offodile Buchi. 2011.

[15] Ahmadu – a West African Muslim name. This name is popular in Nigeria also.

एक रात उसने अपनी पत्नी से कहा — "मैंने अमीर बनने के लिये एक तरकीब सोची है। उसमें तुमको और घोड़े को दोनों को मेरी सहायता करनी पड़ेगी। क्योंकि अब केवल तुम ही दोनों मेरे पास रह गये हो। और तुम तो मेरे लिये बहुत ही कीमती हो खास कर के इस समय।

अपनी तरकीब को काम में लाने के लिये मुझे तुम्हारे सोने के हार की जरूरत पड़ेगी जो मैं अपने घोड़े को दे दूँगा।"

अगले दिन उसने अपनी पत्नी का सोने का हार लिया और उसके कई छोटे छोटे टुकड़े कर दिये। उनमें से एक टुकड़ा उसने घोड़े के खाने में मिला दिया। बाद में जब घोड़े ने लीद की तो उसमें वह सोने का टुकड़ा चमक रहा था।

उसने फिर एक बार घोड़े के खाने में एक सोने का टुकड़ा मिला दिया और उस घोड़े को और उसकी लीद को ले कर वह सरदार के पास पहुँचा।

जब वह सरदार के घर में घुसा तो उसने फर्श छू कर उसको सलाम किया और आवाज लगायी — "सरदार अमर रहे।"

सरदार बोला — "उठो मेरे बच्चे अहमाडु। कहो कैसे आना हुआ?"

अहमाडु बोला — "सरदार, मेरे पास एक बहुत ही खास खबर है जिससे आप घाना और माली[16] दोनों देशों के सारे सरदारों को मिला कर उन सबसे भी अधिक अमीर बन जायेंगे।"

सरदार ने पूछा — "तब तुम वह खबर अपने ही पास रख कर खुद ही अमीर क्यों नहीं बन जाते?"

अहमाडु ने नम्रता से जवाब दिया — "क्योंकि इतनी अमीरी तो केवल सरदारों को ही अच्छी लगती है जहॉपनाह। अगर मैं इतना अमीर बन गया तो मुझे पूरा यकीन है वह खजाना मुझसे आप ले लेंगे। इसलिये मैंने यह सोचा कि उसे मैं आपको अपने आप ही दे दूँ।"

सरदार बोला — "अहमाडु, तुम बहुत ही अक्लमन्द आदमी हो। बताओ क्या खबर है?"

तब अहमाडु ने अपना घोड़ा और उसकी लीद सरदार को दिखायी। सरदार को ऐसा घोड़ा देख कर बहुत आश्चर्य हुआ जो अपनी लीद में सोना निकालता था।

इससे पहले कि वह अपने आश्चर्य पर काबू पाता कि इतने में घोड़े ने फिर से लीद की और उसमें भी सोने का एक टुकड़ा चमचमा रहा था।

[16] Ghana and Mali – both are West African countries

सरदार ने पूछा — "तुम इस घोड़े का क्या लोगे। और देखो ठीक दाम बताना क्योंकि तुम यह जानते हो कि मैं तुमसे यह घोड़ा ऐसे भी ले सकता हूँ।"

अहमाडु बोला — "मैं हमेशा ठीक ही बोलता हूँ जहाँपनाह। आपके एक बहुत ही छोटे नौकर की हैसियत से मैं इसका दाम केवल सौ सोने के टुकड़े और सौ चाँदी के टुकड़े माँगता हूँ।"

फिर उसने सरदार के आदर में अपने दोनों हाथ अपनी छाती से लगाये और उसके अपने दाम लगाने का इन्तजार करता रहा।

सरदार बोला — "उठो मेरे बच्चे। तुमको सौ सोने के टुकड़े और सौ चाँदी के टुकड़े मिल जायेंगे।"

और इसके साथ ही उसने अपने नौकरों को अहमाडु से घोड़े का मामला तय करने के लिये बोल दिया।

अहमाडु को तो विश्वास ही नहीं हुआ कि सरदार इतना दयालु था। अहमाडु फिर बोला — "यह देखने के लिये कि कोई आपका सोना चोरी न कर ले आप घोड़े को अलग रखियेगा और अपने बहुत ही यकीन के नौकरों को चार चाँद[17] तक उसकी रक्षा के लिये रखियेगा।

उसके बाद आप अपने कुछ नौकर उस सोने को घोड़े की लीद से अलग करने के लिये लगाइयेगा जो उस काम को आपके बहुत ही

[17] Four Moons means four days

यकीन वाले लोगों की देखरेख में करेंगे।" इतना कह कर और अपने पैसे ले कर वह वहॉ से चला गया।

चार चॉद बाद उस घोड़े को जहॉ रखा गया था वह जगह उसकी लीद से भर गयी। सरदार के नौकरों ने वह पूरी लीद छान मारी पर उसमें तो उनको सोने का एक टुकड़ा भी नहीं मिला।

यह देख कर सरदार गुस्से से भर गया। उसने अहमाडु को बुलाने के लिये यह कह कर अपने आदमी भेजे कि — "उस कमीने को मेरे पास जिन्दा ले कर आओ और अगर वह न आये तो उसको मार दो और उसका मरा हुआ शरीर ले कर आओ ताकि मैं उसको गिद्धों को खाने के लिये फेंक सकूॅ।"

अहमाडु तो इसके लिये तैयार ही था क्योंकि उसको मालूम था कि सरदार उसको बुलायेगा ही क्योंकि उस घोड़े की लीद में सोना तो निकलना ही नहीं था सो जैसे ही सरदार के आदमी उसके पास आये तो उसने अपनी पत्नी को भी साथ लिया और उनके साथ चल दिया।

उसने अपनी पत्नी को अपना प्लान पहले से ही बता दिया था — "जब हम सरदार के पास पहुॅचेंगे तुम जो कुछ भी में कहूॅ उस हर बात पर बहस करना और उसको काटना। इस तरह हम आपस में लड़ेंगे और वहॉ से आगे मैं देख लूॅगा।"

अहमाडु ने एक सोने का टुकड़ा लिया और एक मुर्गा खरीदा। फिर उसने उस मुर्गे को मारा और उसका खून एक सॉप की खाल के थैले में भर कर उस थैले का मुँह बॉध कर अपनी पत्नी के गले के चारों तरफ बॉध दिया। उसके बाद वे सरदार के पास चले।

सरदार के घर आ कर अहमाडु ने उसको झुक कर नमस्ते की और बोला — "सरदार अमर रहे। जहॉपनाह ने मुझे बुलाया?"

सरदार बोला — "तुम कह रहे थे कि तुम्हारा घोड़ा अपनी लीद में सोना निकालता है। मैंने उसको तुम्हारे कहे अनुसार चार चॉद तक एक अकेली जगह में रखा पर मुझे उसकी लीद में से सोने का एक टुकड़ा भी नहीं मिला।"

अहमाडु ने ज़ोर से कहा — "पर मैंने तो आपसे यह केवल कहा ही नहीं था बल्कि दिखाया भी था।"

उसकी पत्नी बोली — "सरकार, इसने आपको धोखा दिया था। वहॉ कोई सोना वोना नहीं था।"

अहमाडु चिल्लाया — "चुप रह झूठी।"

पत्नी ने भी जवाब में कहा — "तुम झूठे हो।"

अहमाडु ने गुस्सा होने का बहाना करते हुए अपनी पत्नी को बहुत डॉटा। फिर उसने अपना छोटा सा चाकू निकाला और उसके गले में लिपटा हुआ वह सॉप की खाल वाला थैला काट दिया।

इससे उस थैले में भरा सारा खून फर्श पर बिखर गया और उसकी पत्नी जमीन पर गिर पड़ी।

यह देख कर सरदार चिल्लाया — "तुमने अपनी पत्नी को मार दिया?"

अहमाडु बोला — "आपने मुझे बुलाया था न? क्यों बुलाया था। जल्दी बताइये ताकि मैं इसको फिर से ज़िन्दा कर सकूँ।"

सरदार यह सब देख कर परेशान था वह बोला — "तुमने अभी अभी एक इतना बड़ा जुर्म किया है और तुम मुझसे पूछ रहे हो कि मैंने तुमको क्यों बुलाया है?

भूल जाओ कि मैंने तुमको क्यों बुलाया है। तुमने अपनी पत्नी को मारा है। तुमने एक भयानक जुर्म किया है और वह भी मेरी ऑखों के सामने सामने।"

अहमाडु ने तुरन्त ही एक कैलेबाश भर कर पानी मॉगा। सरदार ने पानी मॅगवा दिया। अहमाडु ने उसके ऊपर कुछ शब्द बोले। फिर उसने अपनी गाय की पूँछ का चॅवर उस पानी में डुबोया और उस पूँछ को सात बार झटक कर उससे एक आवाज करते हुए वह पानी अपनी पत्नी पर छिड़क दिया।

वह बोला — "इसका कटा हुआ गला ठीक हो जाये और मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि तू उठ जा।"

अहमाडु की पत्नी तुरन्त ही उठ कर बैठी हो गयी और अपने पति को गले लगा लिया। अब उसका गला भी कटा हुआ नहीं था।

गाय की उस पूँछ के चँवर की ताकत को देख कर सरदार ने सोचा कि अगर यह चँवर उसके पास हो तो वह कितना ताकतवर हो जाये। वह अपने उन सब मरे हुए लोगों को ज़िन्दा कर सकता था जो लड़ाई में मारे जाते थे।

सो वह अहमाडु से बोला — "मैंने तो कभी यह सोचा भी नहीं था कि मैं अपनी आँखों से ऐसी ताकत देख पाऊँगा। मुझे लगता है कि मैं लीद में सोना निकालने वाले घोड़े के बदले में यह चँवर लेना ज्यादा पसन्द करूँगा। तुम इसे कितने में बेचोगे?"

अहमाडु बोला — "मुझे यकीन है कि अब आप जानते हैं कि यह चँवर इस घोड़े से कहीं ज़्यादा कीमती है। पर आपके लिये मैं इसको दो सौ सोने के टुकड़े और दो सौ चाँदी के टुकड़ों में दे दूँगा।" सरदार ने उस चँवर के दाम अहमाडु को दे दिये और वह चँवर उससे ले लिया।

एक दिन जब सरदार अपने सलाहकारों के साथ खा रहा था और पी रहा था तो वह अपनी नयी ताकत उन सबको दिखाना चाह रहा था।

जब उसकी एक पत्नी वहाँ और खाना रखने के लिये आयी तो उसने उन लोगों से कहा कि वह पहले उसको मार देगा और फिर उसे ज़िन्दा कर देगा।

तुरन्त ही उसने अपनी पत्नी को पकड़ कर जमीन पर गिरा दिया और उसका गला काट दिया। उसका एक सलाहकार यह देख

कर घबरा गया और चीख पड़ा — "सरदार, यह आपने क्या किया? आपने तो उन्हें मार ही दिया?"

सरदार बोला — "ठीक। अब हम खाना खाते हैं और पीते हैं। बाद में मैं उसको जल्दी ही ज़िन्दा कर दूँगा।"

पर उसके सलाहकारों को तो चिन्ता हो रही थी सो वे सरदार को उसे जल्दी ही ज़िन्दा करने के लिये कहते रहे।

सरदार ने तब वह चॅवर कैलेबाश में भरे पानी में डुबोया और अहमाडु की तरह कुछ शब्द बोले। फिर उसने चॅवर को सात बार हवा में हिलाया और उसका पानी अपनी पत्नी के शरीर पर छिड़क दिया। उसने उसको हुक्म दिया कि वह उठ जाये।

पर वह तो वहीं पड़ी रही हिली भी नहीं। उसने वह सब एक बार और दोहराया पर फिर भी कुछ नहीं हुआ। यह देख कर तो वह खुद भी डर गया।

उसने अपने नौकरों को फिर से अहमाडु को लाने के लिये कहा और बोला कि अबकी बार तो उसे मरना ही पड़ेगा। नौकर अहमाडु को सरदार के पास ले आये।

सरदार ने अपने बहुत ताकतवर आदमियों को उसे उसके हाथ पीछे बॉध कर एक डूबने वाली चीज़ से बॉधने को कहा। फिर उसको एक चमड़े के थैले में डाल कर नदी के सबसे गहरे हिस्से में फेंकने के लिये बोल दिया।

उन आदमियों ने उसके हाथ उसके पीछे बॉधे और एक चमड़े के थैले में डाल कर उस थैले का मुँह रस्सी से बॉध दिया। फिर वे उसको नदी में फेंकने के लिये नदी पर ले गये।

वे सुबह से ले कर शाम तक चलते रहे। अब उनको लघुशंका के लिये जाना था सो वह थैला उन्होंने सड़क के किनारे रख दिया और एक झाड़ी की तरफ चले गये।

इससे पहले कि वे वहॉ से लौट कर आते एक कोला नट[18] बेचने वाला व्यापारी अपने गधे पर चढ़ कर वहॉ से गुजर रहा था।

अहमाडु को कुछ आवाज आयी तो वह थैले में से बोला — "मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो। मुझे सोना नहीं चाहिये। उन्होंने कहा है कि सरदार अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये मुझे अपना खजाना देना चाहता है। पर मुझे उसका कोई खजाना नहीं चाहिये, मैं गरीब ही ठीक हूँ।"

वह व्यापारी बोला — "तुम पागल हो गये हो क्या? हर आदमी अमीर होना चाहता है और तुम कह रहे हो कि तुम गरीब ही ठीक हो।"

अहमाडु बोला — "हॉ मैं ठीक कह रहा हूँ। वह खजाना तुम ले लो। यह पैसा मेरे लिये हमेशा से ही एक परेशानी रहा है। तुम

[18] Kola Nut – a kind of nut like Indian betel nut which West African people offer to one another when they meet. Otherwise also they chew it most of the time of the day. See its picture above.

मुझे खोल दो और तुम मेरी जगह इस थैले में बैठ जाओ। मुझे वह खजाना नहीं चाहिये।"

व्यापारी ने तुरन्त ही वह थैला खोला, अहमाडु को बाहर निकाला और खुद उस थैले में बन्द हो गया। अहमाडु उस व्यापारी के कोला नट उस गधे पर ले कर वहॉ से चला गया।

जल्दी ही सरदार के आदमी लघुशंका से वापस आ गये और वह थैला ले कर चल दिये। उनमें से एक बोला — "सो आखिर अहमाडु तुम हमारे हाथ लग ही गये। अब तुम किसी को धोखा नहीं दे पाओगे। हम तुम्हें अब नदी में फेंक देंगे।"

व्यापारी यह सुन कर थैले में से चिल्लाया — "नहीं नहीं। मैं अहमाडु नहीं हूॅ, मैं तो मैं हूॅ। मुझे खोल दो।"

वे लोग बोले — "हॉ हॉ हॉ। वह तुम ही हो, वह तुम ही हो।" कह कर उन्होंने उस थैले को नदी में फेंक दिया और सरदार के पास लौट गये।

पर इससे पहले कि सरदार के नौकर उसको सारी खबर बताते कि अहमाडु गधे पर सवार हो कर वहॉ आ पहुॅचा। सरदार तो उसको देख कर कुछ बोल ही नहीं सका।

अहमाडु सरदार से बोला — "सरदार, आपके पुरखों ने आप को आशीर्वाद भेजा है और साथ में ये कोला नट भेजे हैं। अच्छा हो अगर आप भी उनसे मिलने चले जायें। वे आपको बहुत याद करते हैं।

जहॉ वे हैं वहॉ सोना और चॉदी टनों में है। वे चाहते हैं कि आप वहॉ खुद जा कर वह सोना चॉदी ले आयें। आपको वहॉ जरूर जाना चाहिये जहॉ मैं गया था। जब तक आप वहॉ से लौट कर आते हैं तब तक मैं यहॉ रहता हूँ।"

यह सुन कर सरदार ने अपने गॉव वालों को बुलाया और उनसे कहा — "अहमाडु ने मेरे पुरखों को देखा है। मैं भी उनको देखने जाना चाहता हूँ।

जब तक मैं उनको देख कर वापस आता हूँ तब तक यह अहमाडु तुम्हारा सरदार रहेगा। तुम लोग उसकी उसी तरीके से सेवा करना जैसे मेरी करते रहे हो।"

अहमाडु ने सरदार के नौकरों को सरदार को वैसे ही चमड़े के थैले में बॉध कर नदी के सबसे गहरे हिस्से में फेंक देने के लिये कह दिया। सरदार के आदमी सरदार को थैले में बॉध कर नदी पर ले गये और उसको नदी में फेंक दिया।

अहमाडु ने उस गॉव पर चार चॉद तक राज किया और जब सरदार वापस नहीं आया तो वह उस गॉव का असली सरदार बन गया। इस तरह से गॉव का वह चोर गॉव का असली सरदार बन गया।

7 होशियार चरवाहा[19]

एक बार इथियोपिया में एक जगह एक होशियार चरवाहा रहता था। वह अक्सर दूसरे चरवाहों को पीट देता था। यह उनको अच्छा नहीं लगता था सो एक दिन दूसरे चरवाहों ने उस चरवाहे को मारने की योजना बनायी।

उन्होंने एक दस फुट गहरा गड्ढा खोदा और उसमें एक टोकरी में इन्जिरा और वत[20] रख दिया।

जब वह चरवाहा आया तो वे बोले — "आओ, तुम्हारे लिये हमने इस गड्ढे में इन्जिरा और वत रखा है, जा कर निकाल लो।"

जैसे ही उसने उस गड्ढे में झॉका तो दूसरे चरवाहों ने उसको धक्का दे दिया और वह उस गड्ढे में गिर पड़ा। ऊपर से सबने मिल कर उसके ऊपर मिट्टी डाल दी।

इस होशियार चरवाहे के पास हमेशा दो सोने की सलाइयॉ रहतीं थीं। उन सलाइयों की सहायता से उसने बड़ी मेहनत से एक सुरंग खोद ली और बाहर निकल आया।

---

[19] An Intelligent Shepherd – a folktale of Jablawi tribe of Ethiopia, East Africa

[20] Staple food of Ethiopians. See their pictures above – Wat is above and Injira is below

लेकिन जब वह बाहर निकला तो वह एक ऐसी जगह पर निकला जहॉ के लोग आदमखोर[21] थे। वह सारा दिन तो इधर से उधर घूमता रहा पर आखिर रात हो गयी तो उसको किसी घर में शरण ढूँढनी ही पड़ी।

घर की स्त्री ने कहा — "अन्दर आ जाओ।" अन्दर आने पर उसको पता चला कि वे लोग तो आदमखोर हैं। उस स्त्री के एक लड़की भी थी।

चरवाहा यह सब देख कर डर गया। उसको पूरा विश्वास हो गया कि वह उस गड्ढे में से तो किसी तरह बच गया परन्तु अब वह यहॉ से नहीं बच पायेगा। ये दोनों ही मिल कर उसे खा जायेंगी। वह इतना ज़्यादा घबरा गया कि उसे रात भर नींद नहीं आयी।

सुबह नाश्ते में उन्होंने उसे खाने के लिये रोटी दी। जब वह रोटी खा रहा था तो उसने उस स्त्री को अपनी बेटी से यह कहते सुना — "आज दोपहर के लिये यह बड़ा अच्छा खाना आ गया है। तुम इसके सब बाल और नाखून आदि काट कर रखना और इसको ठीक से पका कर रखना। मैं अभी बाजार जा रही हूँ। अभी थोड़ी देर में लौट कर आती हूँ तब हम दोनों इसे खायेंगे।"

[21] These people eat human beings

स्त्री के चले जाने के बाद उसकी लड़की आयी और बोली — "आओ, तुम्हारे सिर के बाल साफ कर दूँ और नाखून आदि काट दूँ।"

चरवाहा बोला — "पहले तुम अपना सिर मुँड़वाओ फिर मैं अपना सिर मुँड़वाऊँगा।" सो पहले लड़की का सिर मुँड़वाया गया बाद में चरवाहे का।

लड़की ने कहा — "लाओ, अब तुम्हारे नाखून काट दूँ।"

चरवाहे ने फिर कहा — "पहले तुम अपने नाखून कटवाओ फिर मैं अपने नाखून कटवाऊँगा।"

सो पहले लड़की के नाखून कटवाये गये बाद में चरवाहे के।"

इसके बाद लड़की बोली — "अच्छा अब ज़रा देखो कि पानी उबल गया कि नहीं।"

चरवाहा होशियार था बोला — "तुम खुद जा कर देख लो न।"

लड़की ने सोचा कि चरवाहा तो ऐसे ही कह रहा होगा सो वह पानी देखने लगी। इतने में चरवाहे ने उस लड़की को धक्का दे दिया और वह उस उबलते पानी में गिर पड़ी। अब चरवाहे ने बेटी को माँ के लिये पकाया।

फिर उसने लड़की के कपड़े पहन लिये और उस स्त्री के आने का इन्तजार करने लगा। जब वह स्त्री बाजार से आयी तो उसने अपनी लड़की से पूछा — "क्या तुमने उस आदमी को पका लिया?"

चरवाहा लड़की की आवाज में बोला "हॉ मॉ पका लिया।"।

उसने उस स्त्री को पहले उसकी बेटी का रसा परसा, फिर उसकी बॉह परसी। बॉह देख कर वह स्त्री चिल्लायी — "अरे, यह बॉह तो मेरी लड़की की बॉह लगती है।"

यह सुन कर चरवाहे ने लड़की की पोशाक उतार दी और पानी में पिसे हुए अलसी के बीज[22] बिखेरता हुआ बाहर की तरफ भागता हुआ बोला — "मैं वह चरवाहा हूँ जिसने एक मॉ को उसकी बेटी खिला दी।"

वह स्त्री गुस्से में भर कर उसके पीछे भागी परन्तु अलसी के बीजों पर फिसल कर गिर पड़ी। बड़ी कोशिश के बाद वह कहीं उठ पायी तो फिर उस चरवाहे के पीछे भागी।

चरवाहा भागते भागते एक ऐसी जगह पहुँच गया जहॉ कुछ लोग खुदाई कर रहे थे। स्त्री पीछे पीछे भागी चली आ रही थी, वह वहीं से चिल्लायी — "इसको तुम पकड़ कर रखना, जाने मत देना।"

पर खुदाई करते लोगों को ठीक से सुनायी ही नहीं दिया कि वह क्या कह रही है। उन्होंने चरवाहे से पूछा कि वह क्या कह रही थी तो चरवाहा बोला — "वह कह रही है कि यह मेरा बेटा है इसे हाथ भी मत लगाना।" ऐसा कह कर वह आगे भाग गया।

[22] Translated for the word "Linseeds or Flax" seeds. See their picture above.

भागते भागते अब वह एक खेत के पास जा पहुँचा जहाँ कुछ आदमी दाल की पकी फसल काट रहे थे। वह स्त्री अभी भी चरवाहे के पीछे पीछे भागी आरही थी। वह फिर चिल्लायी — "इसको तुम पकड़ कर रखना, जाने मत देना।"

पर उन लोगों को भी इतनी दूर से कुछ सुनायी नहीं दिया सो उन्होंने भी चरवाहे से पूछा कि वह क्या कह रही है।

चरवाहा बोला — "यह कह रही है कि यह मेरा बेटा है, इसे हाथ भी मत लगाना, बल्कि इसे कुछ दाल दे दो।" सो उन लोगों ने उसको कुछ दाल की फलियाँ दे दीं और वह चरवाहा वहाँ से फिर भाग लिया।

इस बार भागते भागते वह एक बन्दरों के झुंड के पास जा पहुँचा। वह स्त्री फिर चिल्लायी — "बन्दरों, इस आदमी को पकड़ कर रखो यह जाने न पाये।"

बन्दर भी इतनी दूर से उसकी आवाज नहीं सुन पाये तो वे आपस में पूछने लगे कि वह स्त्री क्या कह रही है। चरवाहा बोला — "वह कह रही है कि यह मेरा बेटा है इसे रोकना नहीं।" इतना कह कर वह फिर आगे भाग लिया।

पर उन बन्दरों में से एक बन्दर अलग बैठा था उसने वह सुन लिया था जो उस स्त्री ने कहा था। उसने यह दूसरे बन्दरों को भी बताया तो सारे बन्दर उस चरवाहे के पीछे दौड़ लिये।

दौड़ते दौड़ते वे एक गन्ने के खेत के पास आ पहुँचे। चरवाहे ने कुछ गन्ने उस खेत से तोड़ कर उन बन्दरों की तरफ फेंक दिये। बन्दर गन्ने खाने में लग गये और चरवाहा फिर भाग लिया।

भागते भागते वह एक झील के किनारे पहुँचा। वहाँ आ कर उसने भगवान से प्रार्थना की कि हे भगवान, तू इस झील को दो हिस्सों में बाँट दे ताकि मैं इसे पार कर सकूँ। झील तुरन्त ही दो हिस्सों में बँट गयी और चरवाहा बीच की सूखी जमीन पर दौड़ कर वह झील पार कर गया।

झील पार कर के फिर उसने प्रार्थना की कि वह झील फिर से वैसी की वैसी हो जाये। वह झील फिर से वैसी की वैसी हो गयी। अब जब वह स्त्री वहाँ पहुँची तो वह झील पार ही नहीं कर सकी।

उस स्त्री ने चरवाहे से पूछा कि इस झील को पार करने का क्या तरीका है तो चरवाहा बोला — "इस झील को पार करने के लिये मुझे अपनी एक आँख निकालनी पड़ी, एक हाथ काटना पड़ा और एक पैर काटना पड़ा।"

स्त्री ने सोचा कि चरवाहा सच कह रहा है सो उसने भी अपनी एक आँख निकाल दी, एक हाथ काट दिया और एक पैर काट दिया और झील में कूद पड़ी।

हाथ पैर न होने की वजह से वह तैर भी न सकी और वहीं झील में डूब कर मर गयी और चरवाहा खुशी खुशी अपने घर चला गया।

8 एक विद्यार्थी की कहानी[23]

बहुत पुरानी बात है कि इथियोपिया के किसी गॉव में एक स्कूल था। एक बार वहॉ के मास्टर जी ने बच्चों को कहा कि स्कूल में सब बच्चों को साफ कपड़े पहन कर आने हैं। पर बच्चों ने कहा कि वे साफ कपड़े नहीं पहन सकते थे क्योंकि उनके पास इतने पैसे नहीं थे कि वे साफ कपड़े पहन सकते।

मास्टर जी बोले कि अगर तुम्हारे पास इतने पैसे नहीं हैं तो जाओ अपने अपने पिताओं को बेच दो और उनको बेच कर जो पैसे आयें उनसे नये कपड़े खरीद लो।

अब बच्चों के पास और कोई चारा नहीं था सो उन सबने अपने अपने पिताओं को बेच दिया और नये कपड़े खरीद लिये।

कुछ दिन बाद एक बार मास्टर जी ने फिर बच्चों को इकट्ठा किया और बोले — "मेरे प्यारे बच्चों, तुम लोग अभी तक सब कुछ बहुत अच्छा करते रहे हो।

अब तुम लोगों को स्कूल के लिये एक काम और करना है वह यह कि घर जा कर तुम अपनी अपनी माताओं को बेच दो और उनके बेचने से जो पैसे मिलें उनसे बढ़िया घोड़े खरीद लो। अगर कोई भी विद्यार्थी इस काम को करने में पीछे रहेगा या हिचकिचायेगा तो उसे स्कूल से निकाल दिया जायेगा।"

[23] A Story of a Student – a folktale of Jablawi Tribe of Ethiopia, East Africa

बेचारे विद्यार्थी अपने अपने घर गये और उन्होंने अपनी अपनी माताओं को बेच कर घोड़े खरीद लिये। अगले दिन सभी विद्यार्थी अपने अपने घोड़ों पर चढ़ कर स्कूल आये। उनमें से एक विद्यार्थी ने बहुत ही बढ़िया सफेद घोड़ा खरीदा था।

सभी विद्यार्थियों को उनके इस काम के लिये शाबाशी दी गयी परन्तु सफेद घोड़े वाले लड़के को खास शाबाशी मिली। और इस खास शाबाशी के बदले में उसकी स्कूल से छुट्टी कर दी गयी कि अब उसको और पढ़ाई करने की जरूरत नहीं थी।

अब इस लड़के ने अपना घोड़ा उठाया और विदेश की यात्रा पर निकल पड़ा। काफी देर चलने के बाद उसे भूख लग आयी। रास्ते में उसे एक हिरन मिल गया सो उसने उस हिरन को मार कर उसका मॉस खा लिया। पर खाने के बाद उसे प्यास भी लगी पर पानी उसे कहीं दिखायी नहीं दिया। प्यास से उसका गला सूखा जा रहा था।

इतने में उसने देखा कि उसके घोड़े की गर्दन से पसीना टपक रहा है। उसने घोड़े के पसीने को एक प्याले में इकट्ठा किया और अपनी प्यास बुझायी। वह फिर अपनी यात्रा पर चल पड़ा।

रात गुजारने के लिये वह एक गॉव में रुका। एक झोंपड़ी में एक बुढ़िया रहती थी उसी बुढ़िया की झोंपड़ी में उसने रात गुजारने का निश्चय किया। खाना खा कर दोनों बातें करने लगे।

बातों बातों में लड़के ने पूछा — "मॉ जी, क्या बात है यहॉ गॉव में कोई जवान लड़के नहीं दिखायी देते?"

बुढ़िया बोली — "क्या बताऊॅ बेटा, इस गॉव में तो बहुत सारे जवान लड़के थे पर अब सब मरते जा रहे हैं।"

लड़का बोला — "कैसे मॉ जी?"

बुढ़िया बोली — "इस गॉव में एक बहुत ही सुन्दर लड़की रहती है। उसने अपनी शादी के लिये एक शर्त रखी है कि जो कोई भी उससे शादी करना चाहता है वह उस लड़की से कोई पहेली पूछेगा।

अगर उस लड़की ने उसकी पहेली नहीं बूझी तब तो वह उससे शादी कर लेगी और अगर उसने उस लड़के की पहेली बूझ ली तो उस लड़के को मार दिया जायेगा।

बेटा, वह लड़की सुन्दर होने के साथ साथ होशियार भी बहुत है। अब तक निन्यानवे लड़के उसके पास अपनी पहेलियॉ ले कर पहुॅच चुके हैं पर उसने उन सभी की पहेलियॉ बूझ दीं हैं। और वे सभी लड़के मारे जा चुके हैं। इसीलिये तुमको इस गॉव में जवान लड़के कम दिखायी देते हैं।"

यह कहानी सुन कर उस लड़के का मन हुआ कि वह भी उस लड़की को देखे जिस पर इतने लड़के कुर्बान हो चुके हैं। वह बुढ़िया से बोला कि वह भी इन निन्यानवे लड़कों की गिनती में अपना नाम लिखवाना चाहता है जिससे कि उस पर मरने वालों की गिनती पूरी सौ हो जाये।

अगले दिन वह उस लड़की के पास गया और अपनी पहेली उसके सामने रखी — "कल मैं यात्रा में था। मैंने एक पवित्र चीज़ खायी और एक अपवित्र चीज़ पी। वे क्या चीज़ें हो सकती हैं?"

लड़की बोली — "तुम्हारा सवाल सुन्दर है, कल सुबह आ कर इसका जवाब ले जाना।"

शाम को उस लड़की ने एक लड़के का वेश बनाया और उस बुढ़िया के घर जा पहुँची जिसके घर में वह लड़का ठहरा हुआ था। दोनों ने उस लड़की का बहुत आदर किया और तीनों बहुत देर तक बातें करते रहे।

जब लड़के ने उसको बताया कि वह भी अपनी पहेली ले कर उस लड़की के पास गया था तो लड़की ने उस पहेली की बड़ी तारीफ की और दुआ की कि इस बार उसको जरूर जीत जाना चाहिये।

फिर उस लड़के की पहले दिन की यात्रा के बारे में बात हुई। बातों ही बातों में उस लड़की ने पता चला लिया कि कल उस लड़के ने हिरन का मॉस खाया था और अपने घोड़े का पसीना पिया था।

इतनी सब बातें करते करते लड़के की नजर उस लड़की के सिर पर पड़ी तो उसको लगा कि उसके सिर पर बॅधे कपड़े के नीचे तो बहुत सारे बाल हैं। उसको कुछ शक हो गया कि वह लड़का न हो कर कोई लड़की थी सो उसने चुपचाप उस लड़की के कुछ बाल काट लिये।

अगले दिन वह अपनी पहेली का जवाब लेने के लिये उस लड़की के घर गया। वह अब उस लड़की को तुरन्त ही पहचान गया कि कल यही लड़की लड़के के वेश में उसके घर आयी थी पर वह चुप रहा। पर उसको यह भी विश्वास था कि उसकी पहेली का जवाब देना आसान नहीं था।

जब वह उस लड़की के घर पहुँचा तो उस लड़की ने उसको तुरन्त ही उसकी पहेली का जवाब दे दिया कि उसने यात्रा में हिरन का मॉस खाया था और घोड़े का पसीना पिया था। क्योंकि जवाब ठीक था इसलिये उस लड़के को मारने का हुक्म दे दिया गया।

जब वह लड़की जाने लगी तो वह लड़का बोला — "सभी मरने वालों से उनकी आखिरी इच्छा पूछी जाती है। क्या तुम मुझसे मेरी आखिरी इच्छा नहीं पूछोगी?"

लड़की मुस्कुरायी और बोली — "क्यों नहीं। बोलो नौजवान, तुम्हारी आखिरी इच्छा क्या है?"

लड़का बोला — "कल रात मेरे घर एक बहुत ही खूबसूरत चिड़िया आयी थी। किसी तरह मैंने उसके पंखों में से एक पंख निकाल लिया। मैं वह पंख उसको भेंट करना चाहता हूँ और एक बार उसके हाथों को अपने हाथों में ले कर चूमना चाहता हूँ।"

इतना कह कर उसने अपनी जेब से उस लड़की के कटे बाल निकाले और आगे बढ़ा दिये। लड़की ने जब बाल देखे तो तुरन्त समझ गयी कि वह हार चुकी है।

उसने तुरन्त ही अपने आदमियों को हुक्म दिया कि उसका पहला हुक्म रद्द किया जाता है और वे लोग जा सकते हैं।

दोनों की शादी हो गयी और वे आनन्दपूर्वक रहने लगे।

9 अमीन और गुल[24]

एक बार की बात है कि एशिया महाद्वीप के फारस देश के एक शहर में अमीन नाम का एक आदमी रहता था। एक बार वह अपनी रोजी रोटी कमाने के लिये अपने शहर से बाहर निकला।

वह इतना गरीब था कि उसके पास सफर में ले जाने के लिये कुछ भी नहीं था पर वह अक्लमन्द बहुत था।

उसके घर में केवल एक कच्चा अंडा था और एक नमक का डला। सो उसने वे दोनों उठाये और अपने सफर पर निकल पड़ा। उसके पास कोई चाकू, छुरी या कटार जैसा हथियार भी नहीं था जिससे वह सफर में चोर लुटेरों से अपनी रक्षा कर सकता।

वह मैदानों को पार कर के आगे बढ़ता गया। चलते चलते उसे शाम हो गयी। तभी उसने देखा कि सामने से बहुत ही भयानक एक गुल[25] चला आ रहा है। वह एक बड़े पेड़ की तरह बहुत बड़ा था और अँधेरे में बहुत ही बदसूरत दिखायी दे रहा था।

उस समय अमीन के आस पास कोई ऐसा पेड़ या चट्टान भी नहीं थी जिसके पीछे छिप कर वह अपनी जान बचा लेता, सो वह अपनी बहादुरी दिखाता हुआ सीधा उस गुल के सामने चल दिया।

---

[24] Amin and Gul – a folktale from Persia, Asia.

[25] Gul is an Arabic language word used in Arab, Iran, Iraq etc countries. It is used for a bad man who takes out the dead bodies from the graves and eats them.

गुल ने अपनी पेड़ के तने जैसी मोटी बॉह से अमीन का रास्ता रोकते हुए उससे कहा — "ए, तुम कहॉ जा रहे हो?"

अमीन निडर हो कर बोला — "देखो न, मैं कितना ताकतवर हूॅ। इसलिये मैंने सोचा कि ज़रा दुनियॉ में बाहर निकल कर अपने से ज्यादा ताकतवर गुल की तलाश की जाये।"

अमीन की यह बात सुन कर गुल हो हो कर के हॅस पड़ा। उसकी हॅसी की आवाज से चारों दिशाऐं गूॅज उठी। काफी देर हॅसने के बाद जब उसकी हॅसी रुकी तो वह बोला — "मगर तुम तो मुझसे ज़्यादा ताकतवर दिखायी नहीं देते।"

"हो सकता है पर तुम भी तो गुल जितने बड़े नहीं दिखायी पड़ते।" यह सुन कर गुल नाराज हो गया क्योंकि उसे अपने शरीर और बल दोनों के ऊपर बहुत घमंड था।

अमीन कहने लगा — "कितनी अच्छी बात है कि हम लोग आपस में मिल गये हैं और मुझे पूरा विश्वास है कि अब तुम यह जरूर जानना चाहोगे कि हम लोगों में से कौन ज्यादा ताकतवर है, तुम या मैं?"

और गुल के कुछ कहने से पहले ही अमीन झुका और नीचे से अंडे के बराबर का एक सफेद पत्थर उठा लिया और उसको कान के पास हिलाने लगा।

फिर बोला — "मुझे ऐसा लगता है कि इसके अन्दर कुछ पानी जैसा भरा है जो इसमें बोल रहा है। मैं उसकी आवाज बखूबी सुन

सकता हूँ। ज़रा तुम इसको अपने हाथ से तोड़ो तो और देख कर मुझे बताओ कि इसमें क्या है।" और यह कहते के साथ ही उसने वह पत्थर गुल के हाथों में थमा दिया।

गुल वह पत्थर अपनी मुट्ठी में दबा कर तोड़ने की कोशिश करने लगा। इतनी ही देर में चुपके से अमीन ने अपनी जेब से अंडा निकाल लिया।

काफी मेहनत के बाद भी जब गुल से वह पत्थर न टूटा तो उसका चेहरा लाल पड़ गया और वह बोला — "इसे तोड़ना तो नामुमकिन है।"

"क्या? नामुमकिन है? और तुम कहते हो कि तुम बहुत ताकतवर हो। पर यह तो बहुत आसान है। लाओ, यह पत्थर मुझे दो, देखो मैं तोड़ता हूँ यह पत्थर।"

कह कर अमीन ने गुल से वह पत्थर ले लिया और दूसरे ही पल गुल ने चटकने की आवाज सुनी और गुल ने देखा कि अमीन के हाथों से गाढ़े पीले रंग का पानी निकल रहा है। गुल की समझ में कुछ नहीं आया।

"मैं तुम्हें परेशान नहीं करना चाहता, पर कोई बात नहीं, अगर तुम वह पत्थर नहीं तोड़ सके तो मैं तुम्हें दूसरा पत्थर देता हूँ। तुम उसको तोड़ कर देखो।" कह कर अमीन फिर नीचे झुका और अच्छी तरह से देखने का बहाना करते हुए एक और पत्थर उठा लिया।

उसको गुल को दिखाते हुए बोला — "मुझे ऐसा लगता है कि यह नमक का बना पत्थर है। ज़रा इसे अपनी मुट्ठी में भींच कर तोड़ो तो।"

एक बार फिर गुल ने उस पत्थर को तोड़ने की कोशिश की और इस बीच में अमीन ने नमक का टुकड़ा अपनी जेब से निकाल लिया।

काफी समय के बाद भी जब गुल वह पत्थर न तोड़ सका तो अमीन बोला — "ओह, कितनी अजीब बात है कि न तो तुम वह पत्थर तोड़ सके और न ही यह पत्थर। लगता है कि तुम आसान काम भी नहीं कर सकते। लाओ मुझे दो वह पत्थर। मैं तोड़ता हूँ उसे।"

एक बार फिर गुल ने पत्थर अमीन को वापस कर दिया और अमीन ने अगले ही पल उसे मुट्ठी में भींच कर तोड़ दिया।

गुल उसकी मुट्ठी में झाँकते हुए बोला — "मैं नहीं मानता कि यह नमक है।"

"चख कर देख लो न।"

गुल ने उसे चखा "हाँ, स्वाद तो नमक का ही है। सचमुच तुम मुझसे ज्यादा ताकतवर हो मगर क्योंकि अब अँधेरा हो चला है इसलिये मैं अभी तुम्हारी किसी भी बात पर विश्वास नहीं कर सकता। अब तुम मेरे घर चलो, वहाँ खाना खायेंगे और आराम

करेंगे तब फिर कल सुबह देखेंगे कि हम दोनों में से कौन ज़्यादा ताकतवर है।"

जैसा कि तुम लोग सोच सकते हो अमीन गुल के हाथों में सुरक्षित नहीं था इसलिये वह उसके साथ जाना नहीं चाहता था मगर वह यह भी जानता था कि ऐसी जगह में वह गुल से बच कर कहीं भाग भी नहीं सकता था। सो वह खुशी खुशी गुल के साथ चल पड़ा।

अमीन को गुल के साथ चलने के लिये दौड़ना पड़ रहा था। आखिर वे उस मैदान के दूसरे किनारे पर पहुँच गये जहाँ एक ऊँची चट्टान खड़ी थी। यहीं एक गुफा में गुल का घर था।

अन्दर चल कर गुल ने आग जलायी और छह बैलों की खालों को सिल कर एक थैला बनाया और वह थैला अमीन को दे कर बोला — "जब तक मैं थोड़ी लकड़ी और ले कर आऊँ तब तक तुम गुफा के पीछे वाले मोड़ के पास के नाले से इस थैले में पानी भर लाओ।"

गुल तो यह कह कर चला गया और अमीन यह सोचने लगा कि वह यह थैला तो खाली भी नहीं उठा सकता था फिर वह भरा हुआ तो क्या आधा थैला पानी भी नहीं ला सकता। आखिर वह किसी तरह वह उस थैले को घसीटते हुए पानी के पास ले गया।

वहॉ उसने देखा कि पहाड़ियों से बहुत ही साफ और अच्छा पानी निकल रहा है। अमीन झुक कर गीली धरती कुरेदने लगा तभी उसने गुल के पैरों की आवाज सुनी।

गुल लकड़ी ले कर आ गया था उसने वह लकड़ी आग में डाल दी जिससे आग और तेज़ हो गयी। पर अमीन ने उस ओर कोई ध्यान नहीं दिया और वह अपना काम करता रहा।

गुल चिल्लाया — "तुम काम करने में कितने आलसी हो। क्या हुआ है तुमको? मैंने केवल चावल बनाने के लिये पानी लाने को कहा था तुमसे और तुम अभी तक वहीं बैठे हो। पानी ले कर जल्दी आओ न।"

अमीन बोला — "हॉ यह थैला तो मैं कभी का भर कर ले आता, मैं तो इससे दुगुना भारी बोझा भी उठा सकता हूॅ लेकिन मुझे यहॉ लाने के लिये, खाना खिलाने के लिये और रात में शरण देने के लिये मैं बदले में तुम्हारे लिये कुछ करना चाहता हूॅ।"

"मगर तुम मेरे लिये अभी तक पानी तक तो लाये नहीं और वहॉ बैठे बैठे जमीन घूरे जा रहे हो। क्यों?"

अमीन ने कुछ गम्भीर हो कर कहा — "तुम हो गुल, और जैसा कि तुम जानते हो मैं हूॅ आदमी, और आदमी अपनी ताकत के साथ साथ दिमाग का भी इस्तेमाल करता है। इस समय मैं यही कर रहा हूॅ। देखो मैं तुम्हारे लिये नहर बना रहा हूॅ।

इस नहर से पानी तुम्हारी गुफा में अपने आप आ जायेगा। नहर बन जाने के बाद मैं इस पर एक फाटक वाला बॉध बना दूँगा जिससे जब तुम चाहो तो पानी ले सको और जब चाहो उसे बन्द कर सको। इसलिये अब तुम्हें पानी के लिये यहॉ से थैला भर कर पानी गुफा में नहीं ले जाना पड़ेगा।"

गुल बोला — "ओ बेवकूफ, यह सब बेवकूफी है और फिर इस समय तुम्हें यह काम शुरू नहीं करना चाहिये था जबकि हम लोग भूखे हैं।" गुल ने यह कह कर पानी से भरा वह थैला फूल की तरह उठाया और गुफा की ओर चल दिया।

अमीन बोला — "मगर मैं तो पहले अपनी नहर पूरी करना चाहता हूँ।"

"यह प्यारा काम तुम सुबह करना। अभी तो बहुत ज़ोर की भूख लगी है सो पहले खाना, फिर सोना और फिर कुछ और काम।"

जब वे खाना खा रहे थे तो अमीन ने अपनी शान में लम्बी चौड़ी कहानियॉ सुनायीं कि वह कितना ताकतवर था। गुल यह सब सुनता तो रहा मगर यह न सोच सका कि वह इन कहानियों पर विश्वास करे या नहीं। मगर यह वह निश्चय कर चुका था कि सुबह होने से पहले ही वह इस अजीब आदमी का खात्मा कर देगा।

जब वे लोग सोने के लिये लेटे तो अमीन ने तुरन्त सो जाने का बहाना किया परन्तु वह सोया नहीं और गुल के सो जाने का इन्तजार करता रहा।

जब गुल खर्राटे भरने लगा तो अमीन अपने बिस्तर से उठा और चावल का एक बोरा उठा कर अपने सोने की जगह रख दिया। उसने उस बोरे को एक चादर ओढ़ा दी और खुद छिप कर बैठ गया।

अगले दिन जब अभी दिन पूरी तरीके से निकला भी नहीं था कि गुल उठा और उसने एक पेड़ का तना लिया और अमीन के बिस्तर के पास आया।

रुक कर उसने वहॉ कुछ पल इन्तजार किया और फिर पक्का करने के बाद कि अमीन सो रहा है, क्योंकि चावल का बोरा तो हिल नहीं रहा था, उसने अमीन को उस तने से सात बार मारा और खुशी खुशी अपने बिस्तर में जा कर सो गया।

दिन निकलने पर अमीन उठा और उसने गुल को जगाया और बोला — "तुम्हें परेशान करने के लिये मैं माफी चाहता हूॅ परन्तु तुम्हारी गुफा में रात में एक कीड़ा भुनभुना रहा था।"

गुल आश्चर्य के साथ उठा कि उसका साथी ज़िन्दा था। उसको यह भी लगा कि अमीन सचमुच ही बहुत ताकतवर था जो उस भारी तने की सात बार मार खा कर भी ज़िन्दा था क्योंकि उस तने की

मार से तो हाथी भी मर जाता। और अमीन के अगले शब्दों ने तो गुल को और भी ज़्यादा डरा दिया था।

अमीन ने कहा — "ओ ताकतवर गुल, वह कीड़ा मेरे कम्बल से धीरे से सात बार टकराया। मैंने खुद गिना। ऐसा लगा जैसे वह मुझे उठाना चाहता था। वह कीड़ा कौन सा हो सकता है गुल?"

बिना कुछ बोले गुल उठा और गुफा से भाग लिया। अमीन अब गुल की गुफा में अकेला था। इतना उसे पता था कि वह अभी वापस आयेगा और जैसा कि तुम्हें मालूम है अमीन के पास अपनी रक्षा के लिये कोई हथियार तो था नहीं।

अमीन ने जल्दी जल्दी गुफा में इधर उधर देखना शुरू किया कि शायद उसे कोई हथियार मिल जाये। उसे वहॉ एक बन्दूक, कुछ कारतूस और कुछ बन्दूक का पाउडर मिल गया।

उसे विश्वास नहीं था कि कारतूस गुल के शरीर में घुस सकता था या नहीं पर वह क्या करता, उसको वहॉ यही कुछ मिला। उसने बन्दूक कारतूसों से भर ली और एक ऐसी जगह जा कर खड़ा हो गया जहॉ से गुल गुजरता।

कुछ देर बाद ही उसे गुल आता दिखायी दिया। उसके हाथ में एक मोटी लकड़ी थी और साथ में एक लोमड़ी। अमीन ने सोचा कि इस लोमड़ी ने ज़रूर ही सारी बातें गुल को बता दी होंगी अब मैं क्या करूॅ।

इन कारतूसों से तो मैं केवल लोमड़ी को मार सकता हूँ। सो तुरन्त उसने निशाना बाँधा और गोली चला दी और ज़ोर से बोला — "ओ बेवकूफ लोमड़ी, तूने मेरा कहा नहीं माना तो ले अब तू इसका मजा चख।" लोमड़ी अमीन की गोली खा कर मर गयी।

लोमड़ी को मारने के बाद अमीन बाहर निकल आया और गुल से बोला — "मैंने इस बेवकूफ लोमड़ी को सात गुल लाने को कहा था क्योंकि मुझे वे सात गुल फारस के शाह[26] को देने थे पर यह केवल तुम अकेले को ही लिये चली आ रही थी अब तुम मेरे गुलाम हो। चलो मेरे साथ चलो।"

यह सुन कर और लोमड़ी के साथ जो कुछ हुआ उसको देख कर तो गुल के होश उड़ गये। बिना एक शब्द बोले वह झाड़ियों को फलाँगता हुआ वह वहाँ से भाग खड़ा हुआ।

अमीन बहुत खुश हुआ। "अब वह कभी नहीं आयेगा।" यह सोच कर वह गुल की गुफा की ओर चल दिया। गुल क्योंकि कई सालों से राहगीरों को लूटने का काम करता था इसलिये उसकी गुफा में खजाना भरा पड़ा था। अमीन ने वह सब खजाना उठाया और उसे घर ले गया। उस खजाने से वह सारी ज़िन्दगी आराम से रहा।

[26] Translated for the word "King". King means Shaah in Urdu and Arabic languages.

10 चीते के शरीर पर धारियॉ कैसे[27]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के वियतनाम देश की लोक कथाओं से ली गयी है। यह लोक कथा बताती है कि एक आदमी ने चीते से अपनी जान कैसे बचायी।

एक बार एक पानी वाला भैंसा[28] खेत में अकेला एक हल के सहारे खड़ा हुआ था। उसने सारे दिन चावल के खेतों में हल चलाया था सो अब वह उसके सहारे खड़ा थोड़ा आराम कर रहा था।

जब वह इस तरीके से थोड़ा आराम कर रहा था तो वह कभी कभी खेत के चारों तरफ लगी घास भी खा लेता था और अपनी पीठ पर पड़ी धूप का आनन्द भी ले लेता था। कि अचानक भैंसे को किसी चीज़ की बू आयी। वह चीते की बू थी। उसकी ऑखें बड़ी हो गयीं और उसने चारों तरफ देखा।

चीते की बू हवा में बिखरी पड़ी थी। उसने अपने दुश्मन की किसी आवाज को सुनने की भी कोशिश की पर उसे कुछ सुनायी नहीं पड़ा।

---

[27] How the Tiger Got Its Stripes – a folktale from Vietnam, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=92
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

[28] Translated for the words “Water Buffalo”

और पानी वाली भैंसें तो चीते का प्रिय खाना है।

अचानक ही वह भैंसा चीते को अपने सामने खड़ा देख कर आश्चर्यचकित रह गया। क्योंकि न तो वह चीता चिल्लाया और न ही वह उसके ऊपर कूदा जैसे कि वह उसको खा जाना चाहता हो बल्कि वह तो बड़ी बहादुरी और चुपचाप से पेड़ों के पीछे से निकल कर भैंसे के सामने आ कर खड़ा हो गया।

भैंसा उसको देख कर थोड़ा घबराया पर हिम्मत से बोला — "अगर तुम कर सकते हो तो हमला कर के तो देखो। मैं अपने सींगों से अपनी रक्षा करूँगा। और अगर तुमने मुझे खाने की कोशिश की तो तुमको उसकी बड़ी मँहगी कीमत चुकानी पड़ेगी।"

चीता बड़ी नर्मी से बोला — "मैं यहाँ तुमको खाने नहीं आया हूँ भैंसे भाई। मैं तो तुमसे एक सवाल पूछने आया हूँ कि ऐसा कैसे होता है कि तुम्हारे जितना बड़ा ताकतवर जानवर इस हल से बँध कर इतनी कड़ी मेहनत करता है? तुम उस आदमी के लिये क्यों काम करते हो जो तुमको इस तरह बाँध कर तुमसे काम लेता है?"

वह असल में उस किसान के बारे में बात कर रहा था जिसका वह भैंसा था।

भैंसा बोला — "मुझे नहीं मालूम। पर वह आदमी मुझ पर और खेत के दूसरे कई जानवरों पर राज करता है। उसका कहना है कि यह उसकी अक्लमन्दी का कमाल है जो उसको हम सबके ऊपर राज

करने के लायक बनाती है। वैसे वह सचमुच में बहुत ही अक्लमन्द आदमी है।"

चीता बोला — "अगर मेरे पास उसकी जैसी अक्लमन्दी होती तो मैं भी सारे जानवरों पर राज करता। मैं उन सबको बिल्कुल शान्त खड़ा कर देता और फिर जिसको मेरा मन करता उसी को एक एक कर के खाता रहता।"

यह सुन कर भैंसा तो यह सोच कर ही डर के मारे कॉप गया कि अगर चीते के पास आदमी जैसी अक्लमन्दी होती तो वह तो न जाने क्या करता।

चीता फिर बोला — "मैं आदमी के पास जाता हूँ और उससे कहता हूँ कि वह मुझे अपनी अक्लमन्दी दे दे। अगर वह मुझे अपनी अक्लमन्दी नहीं देगा तो मैं उसी को खा जाऊँगा।"

उधर उस आदमी ने अपने हथियार तो अपने घर पर ही छोड़ दिये थे और वह वापस अपने खेत की तरफ लौट रहा था कि उसको चीता दिखायी दिया।

चीते को देख कर वह डर गया पर उसने अपना डर दिखाया नहीं। उसने चीते से पूछा — "तुम्हें मुझसे क्या चाहिये, ओ जंगल के राजा? क्या तुम मुझे खाना चाहते हो?"

चीता बोला — "अगर तुम मुझे अपनी अक्लमन्दी मुझे दे दो तो मैं तुमको छोड़ दूँगा।"

आदमी बोला — "मिस्टर चीते, मुझे बहुत अफसोस है कि मैं अपनी अक्लमन्दी घर पर ही छोड़ आया हूँ। मैं उसको घर जा कर ला सकता हूँ अगर तुमको बहुत जल्दी न हो तो....।

पर मुझे एक और बात का डर है कि जब मैं अपनी अक्ल लेने के लिये घर जाऊँगा तो तुमको भूख लग आयेगी और तुम मेरे भैंसे को खा लोगे। और मुझे अपना हल खींचने के लिये उसकी बहुत जरूरत है।

सो अगर तुम मुझे इजाज़त दो तो मैं तुमको यहाँ एक रस्सी से एक पेड़ के साथ बाँध जाऊँ। इससे मुझे विश्वास रहेगा कि तुम मेरे भैंसे को नहीं खाओगे। इससे मैं अपने आपको सुरक्षित महसूस करूँगा और घर जा कर अपनी अक्ल शान्ति से ला सकूँगा।"

चीता राजी हो गया सो आदमी ने रस्सी का एक फन्दा उसके गले में डाल कर उसको एक पेड़ से बाँध दिया और वह खुद अक्ल लाने के लिये घर दौड़ गया।

जब वह वापस लौटा तो उसके साथ एक गाड़ी भूसा था और एक जलती हुई मशाल थी। आदमी बोला — "यह रही मेरी अक्ल।"

कह कर उस आदमी ने वह भूसा चीते के चारों तरफ इतनी दूर फैला दिया जिससे कि वह उसे अपने पंजों से न छू सके और फिर उसने उस भूसे में आग लगा दी।

वह फिर बोला — "जब यहॉ मेरा काम खत्म हो जायेगा तो तुम मुझसे भी ज़्यादा अक्लमन्द हो जाओगे।"

जलते हुए भूसे की गर्मी ने चीते को झुलसा दिया। सारे समय वह दर्द के मारे चिल्लाता रहा जब तक कि आग ने उसकी रस्सी को जला नहीं दिया। जैसे ही रस्सी जली चीता उस पेड़ से छूट कर वहॉ से भाग लिया।

भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि वह उस आग से जल कर मरा नहीं पर आग की लपटों और उसके धुँए ने उसके शरीर पर काली धारियॉ बना दी थीं। आज भी ये धारियॉ उसके शरीर पर देखने को मिलती हैं। उसके बाद उसने आदमी से कभी अक्ल लेने की कोशिश नहीं की।

11 एक बछड़ा जो तीन बार बेचा गया[29]

कैनेडा देश की यह लोक कथा एक हॅसी और अक्लमन्दी की बहुत ही प्यारी लोक कथा है। लो आज तुम भी सुनो यह कथा। कैनेडा के एक गॉव में एक आदमी रहता था जो बहुत शराब पीता था। इस पीने की वजह से उसने अपनी सारी दौलत खो दी थी।

आखीर में उसके पास केवल एक बछड़ा बच गया था सो शराब खरीदने के लिये वह उस बछड़े का सौदा करने निकला।

चलते चलते उसको गॉव का एक डाक्टर मिला जिसे वह बहुत अच्छी तरह जानता था। उसने उसको रोक कर पूछा — "जनाब, आपको बछड़ा चाहिये?"

डाक्टर ने पूछा — "कितने का है?"

शराबी बोला — "एक चॉदी के सिक्के का।"

डाक्टर ने उसको चॉदी का एक सिक्का निकाल कर दिया और उससे कहा — "यह लो चॉदी का सिक्का और इस बछड़े को मेरे घर पहुॅचा देना मैं अभी एक मरीज देखने जा रहा हूॅ।"

[29] A Calf That was Sold Three Times – a folktale of French Canada, Northern America

शराबी उस बछड़े को डाक्टर को बेच कर आगे बढ़ा तो उसे एक नोटरी[30] मिला। उसने नोटरी से पूछा — "जनाब क्या आप बछड़ा खरीदेंगे?"

नोटरी ने पूछा — "कितने का है?"

शराबी बोला — "एक पौंड का।"

नोटरी ने कहा — "ठीक है, यह लो एक पौंड और मेहरबानी कर के इसे मेरे घर पहुँचा देना। मैं अभी ज़रा एक जरूरी काम से जा रहा हूँ।" यह कह कर नोटरी अपने रास्ते चला गया और वह शराबी पौंड ले कर और आगे बढ़ा।

आगे जा कर शराबी को एक वकील मिला। उसने वकील से पूछा — "जनाब, क्या आप यह बछड़ा खरीदेंगे?"

वकील ने पूछा — "कितने का है?"

शराबी बोला — "एक पौंड का।"

वकील ने उसे एक पौंड निकाल कर देते हुए कहा — "ठीक है। यह लो एक पौंड। मैं अभी ज़रा दूसरे गॉव जा रहा हूँ तुम्हारी बड़ी मेहरबानी होगी यदि तुम इसको मेरे घर पहुँचा दोगे।"

शराबी का तो काम बन गया था। उसने एक बछड़ा तीन बार बेच कर तीन पौंड बना लिये थे। अब वह शराबी रास्ते में एक शराबखाने में रुका, अपने सारे पैसों की शराब पी और अपने घर चला गया।

[30] Notary is he who attests the documents for legal purposes

शाम को डाक्टर, नोटरी और वकील जब अपने अपने घर पहुँचे तो उन सबको यह देख कर बड़ा ताज्जुब हुआ कि उन्होंने सुबह जो बछड़ा खरीदा था वह अभी तक उनके घर नहीं पहुँचा था।

उन्होंने आपस में बात की और उस बेईमान शराबी को पकड़ने की योजना बनायी। उन्होंने उस शराबी पर मुकदमा दायर कर दिया। शराबी अपना मुकदमा लड़ने के लिये पास के एक गॉव के वकील के पास पहुँचा।

वकील बोला — "जनाब, आपका मुकदमा बहुत मुश्किल है क्योंकि इसमें आपकी बेईमानी साफ दिखायी दे रही है। इसमें आपके बचने का केवल एक ही रास्ता है और वह यह कि जब भी आपसे कोई सवाल पूछा जाये तो आप यही कहें "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"[31]।"

सो सब अदालत में पहुँचे। जज ने शराबी से पूछा — "क्या आपने इस डाक्टर को अपना बछड़ा बेचा था?"

शराबी को जैसा समझाया गया था उसने वैसा ही जवाब दे दिया — "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।"

"और इस नोटरी को भी?"

शराबी फिर बोला — "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।

[31] Oyink, Oyink, Oyink

"और इस वकील को भी?"

शराबी फिर बोला — "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।

जज आगे बोला — "और फिर आपने इन लोगों को वे बछड़े दिये नहीं?"

शराबी फिर बोला — "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।

जज आगे बोला — "आपने ऐसा क्यों किया जनाब?"

शराबी फिर बोला — "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।

जज के कई सवाल पूछने पर भी जब शराबी के मुँह से सिवाय "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक" के और कुछ न निकला तो जज ने उन तीनों से कहा — "ऐसा लगता है कि यह आदमी पागल है। मेरा फैसला है कि इसको छोड़ दिया जाये।"

और शराबी को छोड़ दिया गया और वे तीनों अपने पैसे गँवा कर अपने अपने घर चले गये।

कुछ दिन बाद शराबी का वकील शराबी के पास आया और बोला — "हम लोग मुकदमा जीत गये इसलिये मेरी फीस दो।"

शराबी बोला — "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।

वकील बोला — "देखो, तुम यह चालाकी मेरे साथ नहीं खेल सकते। मैंने ही तुमको यह मुकदमा जिताया है।"

"ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।

"अब क्या मैं तुमसे अपनी फीस के लिये झगड़ा करूँ?"

"ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।

और वह वकील भी डाक्टर, नोटरी और जज की तरह उस शराबी से "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक" के अलावा और कुछ भी न बुलवा सका तो उसको भी उसकी फीस नहीं मिली और वह बेचारा बिना फीस का मुकदमा लड़े ही घर चला गया।

इस तरह उस वकील की सिखायी हुई चाल उसी के सिर आ पड़ी।

12 बहादुर इगोरी और जिप्सी[32]

एक जगह एक देश में एक जिप्सी रहता था जिसके एक पत्नी थी और सात बच्चे थे। वह इतना गरीब था कि आखीर में उसके पास खाने पीने के लिये कुछ भी नहीं बचा था – यहॉ तक कि रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं था।

एक तो वह आलसी बहुत था और दूसरे चोरों से बहुत डरता था। ऐसी हालत में वह क्या कर सकता था। वह किसान एक बार बाहर गया और खड़े हो कर चारों तरफ देखने लगा और कुछ कुछ सोचता रहा।

उसी समय बहादुर इगोरी वहॉ से गुजरा तो किसान ने उससे पूछा — "ए भाई किधर चले।"

"भगवान के पास।"

"क्यों?"

इगोरी बोला — "मैं लोगों का यह सन्देश ले कर जा रहा हूॅ कि आदमी को कहॉ रहना चाहिये और कहॉ काम करना चाहिये।"

किसान बोला — "क्या तुम मेरा भी एक सन्देश भगवान को दोगे कि मैं क्या करूॅ।"

---

[32] Egory the Brave and the Gypsy – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book : "Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief and Translated by Leonard Arthur Magnus. NY: EP Dutton. 1916. This book is available at : https://books.google.ca/books?id=QssdAAAAMAAJ&pg=PR3&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false This story is taken from the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Russian_Folk-Tales

इगोरी बोला — "ठीक है मैं दे दूँगा।" और वह अपने रास्ते चला गया।

किसान वहीं खड़ा रहा खड़ा रहा। वह उसका इन्तजार करता रहा। आखिर इगोरी उसी रास्ते से वापस लौटा तो उसने तुरन्त ही उससे पूछा — "क्या तुमने भगवान को मेरा सन्देश दिया?"

इगोरी बोला — "ओह मुझे अफसोस है कि मैं भूल गया।"

एक बार फिर किसान कहीं जा रहा था तो उसे वह इगोरी फिर से मिल गया। वह फिर किसी काम से भगवान के पास जा रहा था। तो उस जिप्सी किसान ने उससे कहा — "मेहरबानी कर के मेरी एक प्रार्थना भगवान तक पहुँचा देना।"

इगोरी ने कहा "ठीक है।" पर वह फिर भूल गया।

एक बार फिर किसान को वह इगोरी फिर मिल गया तो उसने उससे फिर से कहा — "मेहरबानी कर के भगवान से मेरी भी प्रार्थना कर देना।"

इगोरी बोला "ठीक है कर दूँगा।"

किसान ने पूछा — "क्या तुम फिर से भूल जाओगे?"

इगोरी बोला — "नहीं इस बार नहीं भूलूँगा।"

पर किसान को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ तो वह उससे बोला — "तुम अपना सोने का कुंडा[33] मुझे देते जाओ। जब तक तुम वापस आते हो तब तक मैं इसे अपने पास रखूँगा नहीं तो तुम फिर से भूल जाओगे।"

इगोरी ने अपना सोने का कुंडा खोला और उसको दे दिया। खुद वह एक कुंडे के सहारे ही अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ चला गया। जा कर वह भगवान से मिला और उनसे पूछा कि हर आदमी को कहाँ रहना चाहिये और हर एक को क्या काम करना चहिये। और हर आदमी के बारे में उसको ठीक हुक्म मिल गये।

अब वह वहाँ से वापस चलने लगा तो जैसे ही वह अपने घोड़े पर चढ़ने लगा तो उसने झुक कर देखा कि उसके पास तो घोड़े पर चढ़ने के लिये पैर रखने वाला ही नहीं है तो उसको जिप्सी की याद आयी।

सो वह तुरन्त ही भगवान के पास भागा गया और उनसे कहा — "मुझे अफसोस है भगवान कि जब मैं यहाँ आ रहा था तो रास्ते में मुझे एक जिप्सी मिला। वह मुझसे पूछ रहा था कि उसको क्या करना चाहिये। वह तो मैं आपसे पूछना भूल ही गया।"

[33] Translated for the word "Stirrup" – one of the two things hanging on each side of the horse. They are a part of horse saddle.

भगवान बोले — "उससे कहना कि वह किसी से भी कोई भी चीज़ ले सकता है चुरा सकता है और फिर धोखा दे कर झूठी गवाही दे सकता है।"

यह सुन कर इगोरी वहॉ से चला गया अपने घोड़े पर चढ़ा और वापस आ कर जिप्सी से कहा — "मैं अब तुम्हें सच बताता हूॅ अगर तुमने मेरा कुंडा न लिया होता तो मैं तो तुम्हारी बात सचमुच में ही भूल गया होता।"

जिप्सी बोला — "मुझे ऐसा ही लग रहा था। अब तुम मुझे दुनियॉ के आखिरी समय तक नहीं भूल सकते थे क्योंकि जब भी तुम नीचे की तरफ देखते तब तब तुम्हें मेरी याद आ जाती। खैर अब यह बताओ कि भगवान ने तुमसे क्या कहा।"

इगोरी बोला — "भगवान ने कहा है कि जिस किसी से भी तुम कुछ लोगे या चुराओगे तो तुम धोखे से उसे रख सकोगे। यही तुम्हारा काम होगा।"

जिप्सी ने उसे धन्यवाद दिया नीचे तक सिर झुका कर सलाम किया और वहॉ से चला गया।

जब वह जाने लगा तो इगोरी बोला — "अरे मेरा सोने का कुंडा तो देते जाओ।"

जिप्सी बोला — "कैसा कुंडा?"

इगोरी बोला — "क्या तुमने मुझसे एक कुंडा नहीं लिया था?"

जिप्सी बोला — "मैं तुमसे कोई एक कुंडा कैसे ले सकता हूँ। मैंने तो तुम्हें आज पहली बार देखा है। और मेरे पास तो कोई कुंडा था ही नहीं। भगवान की कसम कभी भी नहीं था।" इस तरह से जिप्सी ने पहला झूठ बोला।

अब इगोरी क्या करता। उससे लड़ता झगड़ता और मामले को सिलटाता। यह वह कर सकता था और उसने यह किया भी पर सब बेकार। यह तो पूरी तरीके से सच था और जिप्सी सच बोल रहा था — "अगर मैंने उसे कुंडा नहीं दिया होता अगर मैं उसे जानता न होता। अब मैं उसे कभी नहीं भूलूँगा।"

इस तरह जिप्सी ने उससे सोने का कुंडा लिया और घूम घूम कर बेचने लगा। जब वह रास्ते पर बेचने की कोशिश कर रहा था तो उसको एक बहुत ही अच्छा लौर्ड मिल गया।

उसने जिप्सी से पूछा — "हलो जिप्सी क्या तुम अपना यह सोने का कुंडा बेचोगे?"

"हॉ बिल्कुल।"

"क्या लोगे?"

"पन्द्रह सौ रूबल[34]।"

लौर्ड बोला — "यह तो बहुत मॅहगा है।"

जिप्सी बोला — "पर देखो यह है भी तो खालिस सोने का।"

लौर्ड बोला — "ठीक है।"

[34] Rouble is the currency of Russia.

और फिर अपनी जेब में हाथ डाला तो उसको उसमें केवल एक हजार रूबल ही मिले। तो वह बोला — "ओ जिप्सी अभी तो तुम ये एक हजार रूबल ही ले लो बाकी के पॉच सौ रूबल मैं तुम्हें बाद में भेज दूँगा।"

जिप्सी बोला — "नहीं नहीं माई लौर्ड। ये एक हजार रूबल तो में ले लूँगा पर यह सोने का कुंडा मैं आपको अभी नहीं दे सकता। जब आप अपना सौदा पूरा कर लेंगे तभी मैं आपको यह कुंडा दूँगा।" सो लौर्ड ने उसे एक हजार रूबल दे दिये और अपने घर चला गया।

जैसे ही वह अपने घर पहुँचा उसने पॉच सौ रूबल निकाले अपने एक आदमी को उन्हें दे कर कहा कि वह उस पैसे को ले जा कर उस जिप्सी को दे दे और उससे सोने का कुंडा ले आये।

जब लौर्ड का आदमी जिप्सी के घर आया तो वह बोला — "ए जिप्सी। मैं लौर्ड से तुम्हारे लिये यह पैसे ले कर आया हूँ। तुम ये पैसे ले कर मुझे सोने का कुंडा दे दो।"

जिप्सी बोला — "खैर तुम पैसे ले आये हो तो ये पैसे मुझे दे दो।" कह कर उसने उस आदमी से पॉच सौ रूबल ले कर रख लिये और उसको एक गिलास शराब दी। फिर दूसरी फिर तीसरी जब तक कि उस आदमी का पेट नहीं भर गया।

जब उसका पेट भर गया तो वह वहॉ से घर चलने लगा तो किसान से बोला — "अब मुझे वह सोने का कुंडा दो।"

किसान बोला "क्या?"

"वह सोने का कुंडा जो तुमने मेरे मालिक को बेचा था।"

"क्या? कौन सा सोने का कुंडा? और मैंने बेचा? मेरे पास तो कभी कोई सोने का कुंडा था ही नहीं।"

"तो अगर तुम्हारे पास सोने का कुंडा नहीं था और तुमने उन्हें उसे नहीं बेचा तो मेरे पैसे मुझे वापस करो।"

जिप्सी बोला — "कौन सा पैसा?"

आदमी बोला — "अरे अभी अभी तो मैंने तुम्हें पॉच सौ रूबल दिये।"

जिप्सी बोला — "मैंने तो अपनी ज़िन्दगी भर में कभी ग्रिवैनिक[35] भी नहीं देखा। मैंने तो केवल इसलिये तुम्हारी अच्छे से मेहमाननवाजी की क्योंकि तुम हमारे लौर्ड के आदमी हो। इसलिये नहीं कि मुझे तुमसे कोई पैसा लेना है।"

और इस तरह से उसने उसके दिये पैसों को और लौर्ड के दिये हुए एक हजार रूबल को दोनों को नकार दिया।

जब लौर्ड ने यह सुना तो उसको बड़ा गुस्सा आया वह तुरन्त ही जिप्सी से मिलने के लिये चल दिया। वहॉ जा कर वह जिप्सी पर चिल्लाया — "ओ जिप्सी इसका क्या मतलब है, ओ नीच चोर, कि तूने पैसे तो ले लिये और सोने का कुंडा दिया नहीं।"

[35] Grivennik = 1/10th of Rouble = 10 Kopeks

जिप्सी बोला — "कौन सा सोने का कुंडा। लौर्ड ज़रा सोच कर तो देखिये कि एक बूढ़े किसान के लिये यह कैसे मुमकिन हो सकता है कि वह एक सोने का कुंडा रखे।"

यह सुन कर तो लौर्ड को और गुस्सा आ गया पर फिर भी वह उससे सोने का कुंडा नहीं निकलवा सका सो वह बोला — "अब हमें कचहरी जाना पड़ेगा।"

जिप्सी बोला — "मेहरबानी कर के ज़रा सोचिये तो। हम दोनों आपस में कैसे मिल सकते हैं। आप तो एक लौर्ड हैं और मैं एक खरदिमाग हूँ। मैं तो एक बेवकूफ पिछड़ा हुआ किसान हूँ। अगर मुझे आपके साथ कचहरी जाना पड़ा तो कम से कम आप मुझे पहनने के लिये अच्छे कपड़े तो देंगे ही न।"

सो लौर्ड ने उसको पहनने के लिये अपने कपड़े दिये और फिर वे दोनों अपने मुकदमे के लिये शहर चल दिये। जब वे लोग शहर में आये तो लौर्ड ने कहा — "मैंने इससे सोने का एक कुंडा खरीदा। इसने उसका पैसा तो ले लिया पर मुझे कुंडा नहीं दिया।"

इसके जवाब में किसान ने कहा — "माई लौर्ड जस्टिस। आप खुद यह सोचें कि किसी बूढ़े से क्या कोई सोने का कुंडा खरीद सकता है? जानते हैं कि ऐसा मैंने क्यों कहा? क्योंकि मेरे घर में तो खाने के लिये एक डबल रोटी भी नहीं है। मैं तो यह सोच ही नहीं सकता कि यह भला आदमी मुझसे चाहता क्या है। अभी थोड़ी देर में यह यह भी कहेगा कि मैंने इसके कपड़े पहन रखे हैं।"

यह सुन कर लौर्ड चीखा — "पर यह आदमी कपड़े तो वाकई मेरे ही पहने हुआ है।"

जिप्सी बोला — "देखा माई लौर्ड जस्टिस मैं न कहता था कि अब यह यही कहेगा।"

इसके बाद तो मुकदमा खत्म ही हो गया। लौर्ड बिना कुछ लिये हुए अपने घर चला गया और किसान अपने घर खुशी से रहने चला गया।

13 आधी धूप आधी छॉह[36]

अक्लमन्दी की यह कहानी हमने तुम्हारे लिये अकबर बीरबल की कहानियों से ली है। अकबर 16वीं सदी में भारत का मुगल सम्राट था और बीरबल उनके नव रत्नों में से एक थे।

बीरबल की बादशाह अकबर से काफी दोस्ती देख कर बहुत से दरबारी बीरबल से बहुत जलते थे और समय समय पर उनको नीचा दिखाने की कोशिश में लगे रहते थे।

एक बार बादशाह को काफी दिनों तक बीरबल से कुछ हॅसी मजाक करने का समय नहीं मिला तो दरबारियों ने बादशाह के कान भरने शुरू कर दिये। वे बोले कि बीरबल तो कुछ काम ही नहीं करते वह तो ऐसे ही इतनी ऊॅची तनख्वाह लेते हैं।

उस समय बादशाह भी उनकी बातों के बहकावे में कुछ ऐसे आ गये कि उनको भी लगा कि उनके दरबारी सच ही बोल रहे हैं। उन्होंने भी बीरबल को कह दिया कि तुम यहॉ कुछ काम धाम तो करते नहीं हो बस खजाने से ऐसे ही तनख्वाह लेते रहते हो।

बीरबल एक इज़्ज़तदार आदमी थे। उनको बादशाह की यह बात बुरी लग गयी और वह गुस्सा हो कर दरबार से चले गये। और फिर वह अपने घर से भी एक ऐसी जगह चले गये जहॉ उनकी जान पहचान का कोई भी नहीं था।

[36] Half Sunshine and Half Shade. An Akbar Birbal Story

बीरबल के जाने के कुछ दिन बाद ही बादशाह को लगा कि उनके दरबार में किसी आदमी की कमी है। ओह वह तो बीरबल है जो कई दिनों से दिखायी नही दिये। कहॉ गये बीरबल?

बादशाह ने तुरन्त ही अपने कुछ आदमी भेज कर बीरबल को बुलवा भेजा पर बीरबल तो घर पर भी नहीं थे। फिर कहॉ गये वह? बीरबल के घर वालों को भी नहीं पता कि वह कहॉ थे।

बादशाह बेचैन हो उठे। उन्होंने सब जगह मुनादी पिटवा दी कि जो कोई बीरबल को ढूँढ कर लायेगा उसको भारी इनाम मिलेगा। पर फिर कुछ दिन गुजर गये और कोई भी बीरबल को ले कर नहीं आया।

इनाम तो सब चाहते थे पर पहले बीरबल कहीं मिलें तब तो।

बादशाह परेशान थे कि वह बीरबल को कहॉ ढूँढें कि तभी एक बूढ़ा साधु उनके दरबार में आया और उनको बीरबल को ढूँढने की तरकीब बतायी।

बादशाह उस तरकीब को सुन कर बहुत खुश हो गये। सो अगले दिन ही उन्होंने फिर एक मुनादी पिटवायी कि "जो कोई भी आधी धूप आधी छॉह में हमारे दरबार में आयेगा उसको भारी इनाम दिया जायेगा।

यह खबर बीरबल तक भी पहुँची। अब बीरबल को लगने लगा कि बस अब काफी हो गया अब चलना चाहिये। उन्होंने एक गरीब

आदमी को पकड़ा और उसको बताया कि उसको किस तरह से आधी धूप और आधी छॉह में बादशाह के दरबार तक पहुँचना है।

अगले दिन सूरज निकालने के बाद उस गरीब आदमी ने बान की एक चारपाई अपने सिर पर रखी और बादशाह के दरबार की तरफ चल दिया।

दरवाजे पर आने पर चौकीदारों ने देखा कि एक आदमी सिर पर बान की चारपाई रखे चला आ रहा है।

दरबार में आने पर उस ने चौकीदार से कहा कि उसको बादशह के दरबार में आधी धूप आधी छॉह में बुलाया गया था सो वह आधी धूप आधी छॉह में आया है और अपना इनाम लेना चाहता है।

चौकीदारों ने जा कर यह खबर बादशाह को दी तो बादशाह ने कहा कि उसको तुरन्त ही अन्दर लाया जाये। चौकीदार उसको अन्दर ले गये तो अपने वायदे के मुताबिक उन्होंने उसको बहुत इनाम दिया।

पर फिर पूछा — "एक बात बताओ। तुम अपने आप तो इस तरह यहॉ आ नहीं सकते। वह कौन है जिसने तुम्हें इस तरह आने की सलाह दी?"

उसने कहा — "सरकार, हम उसका नाम नहीं जानते। वह हमारे गॉव में अभी हाल ही में आया है। उसी ने मेरे ऊपर यह मेहरबानी की है।"

अब क्या था अकबर भॉप गये कि यह बीरबल के अलावा और कोई हो ही नहीं सकता सो उन्होंने अपने कुछ आदमी भेज कर बीरबल को तुरन्त ही उस गॉव से बुलवा लिया। बीरबल भी खुशी खुशी दरबार में लौट आये।

14 बीरबल स्वर्ग गये[37]

बीरबल की अक्लमन्दी और हाजिरजवाबी से बादशाह अकबर बहुत खुश रहा करते थे और उनके दरबार के आदमी बहुत जला करते थे। वे हमेशा उन्हें राजा के दरबार से निकालने य मरवाने की कोशिश में लगे रहते। पर बीरबल की अक्लमन्दी उनको वापस फिर से बादशाह अकबर के दरबार में ले आती।

एक ऐसी ही मजेदार घटना यहॉ दी जाती है जिसमें बीरबल अपनी होशियारी से स्वर्ग हो कर वापस आ गये।

बादशाह का अपना एक नाई था जो रोज ही उनकी हजामत बनाया करता था। वह बीरबल से इतना जलता था कि एक बार उसने बीरबल से हमेशा के लिये छुट्टी पाने की तरकीब सोची। सो अगली बार जब बादशाह सलामत ने अपनी दाढ़ी ठीक करने के लिये नाई को बुलवाया तो वह आ कर उनकी दाढ़ी ठीक करने लगा।

दाढ़ी ठीक करते करते वह बोला — "हुजूर। कल रात मैंने सपने में आपके अब्बा हुजूर को देखा।"

अकबर को उत्सुकता हुई सो उन्होंने उससे कहा — "अच्छा? यह तो बड़ी अच्छी बात है। वह तुमसे क्या कह रहे थे?"

[37] Birbal Goes to Heaven. A story from India.

नाई बोला — "हुजूर उन्होंने मुझसे कहा कि स्वर्ग में सब कुछ बहुत अच्छा है पर उनको एक ऐसे आदमी की कमी बहुत खलती है जो उनका दिल बहला सके।"

बादशाह बेचारे सोचते रहे सोचते रहे कि ऐसा कौन सा आदमी हो सकता है जिसको वह अपने अब्बा हुजूर का मन बहलाने के लिये यहॉ से उनके पास भेज सकें। बादशाह को अपने बीरबल बहुत पसन्द थे सो उनके अलावा वह किसी और के बारे में सोच ही नहीं सके।

एक पल को तो बादशाह सलामत के मन में आया भी कि इस तरह से तो वह अपना एक बहुत अच्छा सलाहकार खो देंगे पर अपने अब्बा हुजूर के बारे में सोच कर उन्होंने तय कर लिया कि वह उनकी खुशी के लिये बीरबल को उनके पास भेज देंगे। सो उन्होंने बीरबल को बुलाया।

उन्होंने बीरबल से कहा — "बीरबल। तुम हमको बहुत प्यार करते हो और हमारे लिये कुछ भी करने के लिये तैयार हो हो न?"

बीरबल यह सुन कर चौंक गये और सोचने लगे कि बादशाह के इस बात को कहने का क्या मतलब है पर इतने से सवाल से वह ज़्यादा कुछ भी नहीं भॉप सके सो पल भर चुप रह कर बोले — "बादशाह सलामत आप तो जानते ही हैं कि हॉ मैं आपको बहुत प्यार करता हूँ और आपके लिये कुछ भी कर सकता हूँ। हुक्म फरमाइये।"

बादशाह अकबर बोले — "तब बीरबल तुम स्वर्ग जाओ और वहॉ जा कर मेरे अब्बा हुजूर का थोड़ा मन बहलाओ।"

यह सुन कर बीरबल की समझ में आ गया कि किसी ने उनको मारने की साजिश की है। उन्होंने बादशाह से नम्रतापूर्वक कहा — "जरूर। यह तो आप मेरी इज़्ज़त बढ़ा रहे हैं। पर मुझे वहॉ जाने की तैयारी करने के लिये कुछ दिन चाहिये।"

अकबर बादशाह बोले — "हॉ हॉ क्यों नहीं। हम तुम्हें वहॉ जाने की तैयारी करने के लिये एक हफ्ते का समय देते हैं। एक हफ्ते में तुम वहॉ जाने की तैयारी कर लो।"

यह सुन कर बीरबल वहॉ से चले तो आये पर बहुत चिन्तित थे। सोचते रहे सोचते रहे तो आखिर उनको रास्ता मिल ही गया।

उन्होंने अपने घर के पास ही एक गड्ढा खोदा जो उनकी कब्र का काम करता। और वहॉ से एक सुरंग बनायी जो उनके घर के एक कमरे में आ कर निकलती थी।

यह सब इन्तजाम कर के वह शाही दरबार में आये और आ कर बोले — "जहॉपनाह मैं तैयार हूँ।" अभी उन्होंने अपनी बात भी पूरी नहीं की थी कि बादशाह सलामत खुश हो कर बोले — "तो तुम्हें कल भेज दें।"

बीरबल बोले — "पर मेरी दो शर्तें हैं।"

बादशाह तो यह भूल ही गये थे कि बीरबल भी इसके लिये अपनी कोई शर्त रख सकते हैं उन्होंने पूछा "वे क्या। मैं उनको

जल्दी से जल्दी पूरी करने की कोशिश करूँगा ताकि तुम अब्बा हुजूर के पास जल्दी से जल्दी पहुँच सको।"

बीरबल बोले — "एक तो यह कि मुझे अपने घर के पास ही दफनाया जाये। और दूसरे मुझे ज़िन्दा ही दफ़नाया जाये ताकि मैं आपके अब्बा हुजूर के पास उनका दिल बहलाने के लिये ज़िन्दा ही पहुँच सकूँ।"

बादशाह को बीरबल की बात जँच गयी सो वह इन शर्तों पर तुरन्त ही राजी हो गये। इस तरह एक दिन तय कर के बीरबल को उनके घर के पास वाले गड्ढे में गाड़ दिया गया।

जैसे ही उनको गाड़ा गया वह तुरन्त ही वहाँ से सुरंग से हो कर अपने घर पहुँच गये। वह वहाँ छह महीने तक छिपे हुए रहते रहे।

अपने इस प्लान को कामयाब होते देख कर नाई बहुत खुश था। छह महीने तक दरबार में काफी अमन चैन रहा।

छह महीने के बाद बीरबल अपने घर से वाहर निकले – उनकी दाढ़ी और बाल बढ़े हुए। उसी हालत में वह दरबार में पहुँचे तो लोग उनको ज़िन्दा देख कर हक्का बक्का रह गये। कुछ बोल ही न सके।

अकबर उनको देखते ही चिल्लाये — "अरे बीरबल तुम अब तक कहाँ थे।"

बीरबल बोले — "योर मैजेस्टी। मैं आपके प्यारे अब्बा हुजूर के साथ स्वर्ग में था। मुझे उनके साथ रहने में बहुत ही मजा आया।

वे मेरी सेवाओं से इतने खुश हुए कि उन्होंने मुझे धरती पर आने की अपना खास हुक्म दे दिया।"

अकबर को अपने अब्बा हुजूर के बारे में जानने की बहुत इच्छा हुई तो उन्होंने बीरबल से पूछा — "बीरबल क्या उन्होंने मेरे लिये कोई सन्देश भी भेजा है।"

बीरबल बोले — "जी योर मैजेस्टी। उन्होंने कहलवाया है कि बहुत कम नाई स्वर्ग तक पहुँच पाते हैं इसलिये लोग वहाँ बहुत ही गन्दे तरीके से रह रहे हैं। इसका अन्दाजा तो आप मेरी बढ़ी हुई दाढ़ी और बाल देख कर ही लगा पा रहे होंगे। सो उन्होंने कहलवाया है कि अगर आप अपना नाई वहाँ स्वर्ग में भिजवा दें तो...।"

अकबर सब समझ गये कि यह सब क्या हो गया। उन्होंने अपने नाई को तुरन्त ही मार डालने की सजा सुना दी।

15 दुनियॉ का सबसे होशियार आदमी[38]

अक्लमन्दी की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये दक्षिणी अमेरिका महाद्वीप के हेटी देश में रहने वाले आदिवासी इन्डियन्स की लोक कथाओं से ली है। देखने वाली बात यह है कि इस लोक कथा में एक आदमी अपनी होशियारी से किस तरीके से एक बड़ा अपराध कर के भी बच निकलता है।

हेटी[39] का यह बूढ़ा राजा एक बहुत ही अमीर आदमी था। उसके पास वे सब चीज़ें थीं जिनको कि तुम सोचते हो कि वे एक अमीर आदमी के पास होनी चाहिये।

उसके पास मकान थे, बहुत सारे, और वे सब सोने और चॉदी से भरे हुए थे। उसकी आलमारियॉ दुनियॉ के सबसे अच्छे कपड़ों से भरी हुई थीं। और उसके खजाने के बक्से खजाने से भरे हुए थे।

पर राजा को इन सबसे कोई मतलब नहीं था। केवल एक ही चीज़ थी जो उसको खुश करती थी और वह थी उसकी पालतू बच्ची भेड़[40]। उसके साथ वह ऐसे खेलता था जैसे वह उसकी अपनी बच्ची हो।

---

[38] The Smartest Man in All the Land – a folktale from Haiti, South America. Adapted from the Web Site : http://www.themuralman.com/haiti/haiti_folk_tale.html Collected and retold by Phillip Martin

[39] Haiti – the country in Caribbean Islands

[40] Translated for the word “Lamb” – it may be male or female, here it is female child of sheep.

हालॉकि यह राजा का अपना काम नहीं था पर फिर भी वह उस बच्ची भेड़ को अपने हाथों से नहलाता, उसके बालों में कंघी करता और उसको रिबन लगा कर सजाता।

यह काम वह उसके लिये रोज करता था तो इसमें कोई शक नहीं कि क्योंकि यह सब काम राजा को खुशी देता था तो उस बच्ची भेड़ का नाम जौय[41] पड़ गया।

वह राजा के दिल को बहुत ही खुशी देती पर इसके साथ ही राजा के दिल में एक डर भी था कि कहीं उसकी खुशी के साथ कोई भयानक घटना न घट जाये।

राजा को यह भी पता था कि अगर कोई इतना अक्लमन्द था जो उसकी खुशी को उसी के सामने से चुरा लेता तो वह केवल टी मैलिस[42] हो सकता था क्योंकि वही एक था जो दुनियॉ का सबसे होशियार आदमी था।

और टी मैलिस भी यकीनन यह जानता था किसी मुसीबत में कैसे पड़ा जाता है और फिर कैसे उससे बाहर निकला जाता है। अगर राजा की जौय को कुछ हुआ तो समझो कि टी मैलिस की आफत आ गयी।

[41] Joy – means happiness

[42] Ti Malice

टी मैलिस को यह भी बहुत अच्छी तरह पता था कि राजा के पास एक "मैरी लिटिल लैम्ब" थी जो बहुत ही मोटी और नर्म थी। साथ में उसको यह भी पता था कि वह राजा की बहुत लाड़ली थी।

पर टी मैलिस को यह भी पता था कि उसको बच्चे भेड़ का मॉस बहुत अच्छा लगता था। सो पहले उसके अपने दिल में और उससे भी ज़्यादा उसके पेट में यह इच्छा थी कि वह उस बच्ची भेड़ को चुरा ले।

सो एक दिन उस चालाक टी मैलिस ने निश्चय किया कि वह इसके बारे में कुछ न कुछ कर के ही रहेगा और फिर राजा के लिये कोई खुशी नहीं रहेगी।

और फिर उसने यही किया।

इससे पहले कि तुम तीन तक गिनती गिनो – एक, दो, तीन... वह बच्ची भेड़ उसकी रसोई में हाजिर थी। वह उसके बर्तन में थी और फिर वह उसके पेट में थी।

जब टी मैलिस ने उस मेमने का आखिरी कौर भी खा लिया तो वह अपनी कुर्सी पर बैठ गया और अपने पेट पर हाथ फेरने लगा। आज तो वह तो वाकई "जौय" से भरा हुआ था।

पर राजा के महल में न तो कोई खुशी थी और न ही "जौय"। राजा चिल्लाया — "मेरी जौय कहॉ है?"

उसने अपना सारा घर ढूँढ लिया, अपना सारा बागीचा ढूँढ लिया, नौकरों ने भी चारों तरफ ढूँढ लिया पर जौय का कहीं पता न था।

राजा ने तो अपने पलंग के नीचे भी देख लिया, उसको वहाँ जौय का एक रिबन तो मिला पर जौय कहीं नहीं मिली। उसको यकीन हो गया कि जरूर ही उसके साथ कुछ भयानक घट गया है।

जब एक नौकर को एक और रिबन शाही बागीचे से दूर जाने वाले रास्ते पर पड़ा मिला तो राजा को विश्वास हो गया कि अब उस की जौय कहीं नहीं मिलने वाली।

उसने तुरन्त ही अपने नौकरों को हुक्म दिया कि वे जादू करने वाले पुजारी[43] को बुला कर लायें। अगर मेरी जौय का पता लगाने कोई तरीका है तो केवल वह जादू वाला पुजारी ही बतायेगा।

यह जादू जानने वाला पुजारी देश का सबसे अच्छा जादू जानने वाला था सो अगर कोई जौय के बारे में कुछ बता सकता था तो वह यही आदमी था और कोई नहीं।

इस पुजारी ने आ कर राजा को शान्त किया और बोला — "राजा साहब, आप चिन्ता न करें, मैं चोर को पता लगा लूँगा। पर मुझे इसके लिये एक मोमबत्ती, कुछ पैसे और एक बर्तन पानी चाहिये।"

[43] Translated for the word "Houngan"

उसकी बात सुन कर राजा बहुत खुश हुआ। तुरन्त ही राजा के नौकर उसकी माँगी हुई सब चीज़ें ले कर वहाँ हाजिर हो गये। उसने मोमबत्ती जलायी, पैसों से एक क्रास बनाया और पानी से भरा वह बर्तन अपने सामने रख लिया। फिर उसने कुछ जादू किया।

आखिर उस पुजारी के चेहरे पर एक मुस्कान दौड़ गयी पर जल्दी ही वह गायब भी हो गयी। वह बोला — "मुझे बहुत अफसोस है राजा साहब कि आपकी जौय मर गयी है। किसी ने उसे चुरा कर खा लिया है।"

राजा चिल्लाया — "क्या? यह किसने किया? मुझे बताओ कि किसने मेरी जौय को चुराया? किसने मेरी जौय को खाया वह आदमी अब उसके बाद दूसरा कौर नहीं खायेगा।"

पुजारी ने राजा को शान्त किया — "राजा साहब, मैं आपको चोर का नाम तो नहीं बता सकता पर मैं आपको इतना जरूर बता सकता हूँ कि वह दुनियाँ का सबसे ज़्यादा होशियार आदमी है। उम्मीद है कि आप समझ गये होंगे कि वह कौन है।"

राजा बुड़बुड़ाया — "हाँ मैं समझ गया।"

राजा चिल्लाया — "ओ चौकीदारो, टी मैलिस को मेरे पास ले कर आओ। उसको मेरे पास जंजीरों से बाँध कर लाओ और अभी अभी ले कर आओ।"

चौकीदारों का सरदार बोला — "जी राजा साहब। पर आपको तो मालूम है कि टी मैलिस एक बहुत ही बड़ा चालाक है। उसको

पकड़ना आसान नहीं है। हमने उसको पकड़ने की पहले भी कई बार कोशिश की है पर हम उसको कभी पकड़ ही नहीं पाये।"

राजा ने उन सबको चेतावनी दी — "पर इस बार पकड़ कर लाओ नहीं तो तुमको पता है कि उसकी बजाय मैं किसको जेल भेज दूँगा?"

अब चौकीदारों का सरदार सब लोगों में सबसे ज़्यादा होशियार तो नहीं था पर वह यह जरूर जानता था कि राजा किसके बारे में बात कर रहा था।

उसको यह भी पता था कि किसी को भी नाराज नहीं करना चाहिये सो वह राजा के सामने से सारे चौकीदारों को ले कर उस चालाक टी मैलिस को ढूँढने के लिये चला गया।

जब वह पुजारी और वह चौकीदार वहाँ से चले गये तो राजा को सोचने के लिये कुछ समय मिला।

वह जितना ज़्यादा सोचता था उसको उतना ही ऐसा लगता था कि उसको अपनी बच्ची भेड़ की याद में कोई दावत देनी चाहिये। उसने सोचा कि वह हर एक को उस दावत में बुलायेगा ताकि लोग यह जान लें कि वह अपनी बच्ची भेड़ को कितना प्यार करता था।

अब क्योंकि टी मैलिस दुनियाँ का सबसे ज़्यादा होशियार आदमी था उसको ठीक ठीक पता था कि महल में क्या हो रहा है।

उसको मालूम था कि राजा बहुत गुस्सा है। उसको यह भी मालूम था कि राजा के चौकीदार उसको पकड़ने के लिये घूम रहे हैं।

और उसको यह भी मालूम था कि अब उसको क्या करना है। वह चाचा बूकुई[44] की खोज में चल दिया।

बूकुई दुनियॉ में कोई सबसे ज़्यादा होशियार आदमी तो नहीं था पर उसके बारे में सब कुछ सच सच बताना भी कोई आसान काम नहीं था। हॉ उसके बारे में इतना जरूर कहा जा सकता था कि वह दुनियॉ का सबसे ज़्यादा होशियार आदमी का बिल्कुल उलटा था और टी मैलिस यह सब जानता था।

टी मैलिस जैसे ही बूकुई के घर में घुसा वह बाहर से ही चिल्लाया — "ओ मेरे दोस्त बूकुई, आज खुशी के दिन तुम कैसे हो?"

बूकुई बोला — "खुशी के दिन? आज किस बात की खुशी का दिन है भाई?"

टी मैलिस बोला — "तुम कहॉ रहते हो मेरे दोस्त? आज तो सारे लोग राजा की दी जाने वाली दावत के बारे में बात कर रहे हैं जो वह अपनी छोटी भेड़ के लिये दे रहा है। वहॉ बहुत सुन्दर सुन्दर पोशाकें होंगी, बढ़िया गाना होगा और बल्कि गाने का मुकाबला भी होगा।"

"गाने का मुकाबला?"

[44] Bouqui

टी मैलिस जानता था कि उसको चालाकी से जाल कैसे बुनना है। उसको मालूम था कि उसके दोस्त को ज़िन्दगी में दो ही चीज़ें बहुत पसन्द थीं और उनमें से एक था गाना। सो बस उसके नाम ने ही बूकुई का ध्यान अपनी तरफ खींच लिया।

पर यह जाल तब तक पूरा नहीं हो सकता था जब तक कि बूकुई की पसन्द की दूसरी चीज़ न हो – और वह था खाना। सब तरह का खाना। जब तक बूकुई को खुद खाना न बनाना पड़े वह स्वर्ग में था। या फिर इस समय जाल में।

टी मैलिस बोला — "यह सब तो "जौय" के बारे में है। और अगर तुम वाकई बढ़िया गा सके, जैसा कि मैं सोचता हूँ कि तुम गा सकोगे, तब तो तुम राजा की दावत में सभी लोगों का दिल जीत लोगे। हॉ हॉ बूकुई, मैंने सुना है कि जीतने वाले को तीन बकरे, कुछ भेड़ें, एक सूअर और एक इनामी बैल मिलेगा।"

यह सुन कर बूकुई की ऑखें फैल गयीं और इस दावत के बारे में सोच कर ही उसके मुँह में पानी आने लगा।

वह रो कर बोला — "पर मैं वहॉ गाऊँगा क्या?"

फिर वह चिल्ला कर बोला — "और मैं वहॉ क्या पहन कर जाऊँगा?"

टी मैलिस ने उसको शान्त किया — "मेरे प्यारे प्यारे दोस्त, तुम मेरे ऊपर भरोसा रखो। मैंने तुम्हारे लिये एक तरकीब सोची है। मैंने तुम्हारे लिये गाना भी सोच रखा है और पोशाक भी।"

अब क्योंकि बूकुई तो उस सबसे ज़्यादा होशियार आदमी के बराबर में कहीं बैठता नहीं था सो उसने अपने दोस्त के ऊपर भरोसा करने के बारे में दो बार भी नहीं सोचा।

चालाक टी मैलिस को तो यह पहले से ही पता था कि ऐसा ही होगा। बूकुई तो अब जाल में फॅस चुका था, कॉटे में फॅस चुका था, रस्सी में फॅस चुका था।

राजा की दावत के दिन सूरज निकलने के कुछ ही देर बाद बूकुई टी मैलिस के घर भागा भागा गया।

टी मैलिस ने एक बड़ी सी जॅभाई लेते हुए उससे पूछा — "अरे इतनी सुबह सुबह तुम यहॉ क्या कर रहे हो?"

बूकुई बोला — "मुझे मालूम है कि अभी मुझे अपने गाने का अभ्यास करना है और वहॉ जाने के लिये नहाना धोना भी है पर तुम ने मेरे पहनने के लिये क्या निकाल कर रखा है वह ज़रा मैं देख तो लूॅ?"

टी मैलिस बोला — "मेरे दोस्त बूकुई, मैंने तुम्हारे लिये इस मौके के लिये बहुत ही बढ़िया कोट निकाल कर रखा हुआ है। क्योंकि यह दावत भेड़ के लिये है तो क्यों न तुम भेड़ की खाल का यह कोट पहनो।"

उसको देख कर तो बूकुई की सॉस ही रुक गयी। वह बोला — "यह तो बर्फ की तरह सफेद है। और इस पर तो सुन्दर रिबन भी लगे हुए हैं।"

टी मैलिस मुस्कुरा कर बोला — "हॉ, यही एक ऐसा कोट है जिसको राजा जरूर देखेगा। पर यह तो जीतने की केवल आधी ही तरकीब है। मैंने तुम्हारे गाने को बोल भी सोच लिये हैं तुम यही गाना गाओगे।"

जैसे ही बूकुई ने उस गाने के बोल पढ़े गुस्से की एक लहर उस के चेहरे पर दौड़ गयी। वह बोला — "इन बोलों के बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता। मुझे मालूम है कि मैं इस दुनियॉ का सबसे होशियार आदमी नहीं हूॅ पर मुझे इनका मतलब समझ में नहीं आ रहा।"

टी मैलिस बोला — "तुमको इन बोलों का मतलब समझने की जरूरत ही नहीं है ये बोल तो बस राजा का ध्यान खींचने के लिये हैं। और मेरा विश्वास करो वे जरूर ही ऐसा करेंगे।"

और एक बार बूकुई ने फिर वही गलती की। क्योंकि वह इस दुनियॉ में टी मैलिस के बराबर का सबसे होशियार आदमी नहीं था सो उसने फिर से उसका विश्वास कर लिया। अब जाल पूरा बिछ चुका था और कुछ न कुछ गड़बड़ होने वाली थी।

हालॉकि दोनों ने उस दावत में एक साथ जाने का प्रोग्राम बनाया हुआ था पर जब बूकुई राजा के महल में पहुॅचा तो टी मैलिस का कहीं पता नहीं था।

वहॉ बहुत सारे खास खास लोग आये हुए थे। राजा भी था पर बूकुई सबको छोड़ते हुए खाने की मेज की तरफ बढ़ गया जहॉ बहुत सारे तरह के खाने सजे हुए थे – याम[45], प्लान्टेन[46], चावल, काशीफल[47] का सूप आदि आदि।

खाना देख कर खाना खाने की जल्दी में उसके कोट का एक रिबन निकल गया पर बूकुई ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। वहॉ इतना सारा खाने के लिये था कि बूकुई को तो सबसे पहले खाना खाना था।

खाना खाने के अलावा वहॉ पर पीने के लिये भी बहुत कुछ था सो बूकुई ने वहॉ पिया भी बहुत।

जब गाने का समय आया तो वह बहुत खुश था। उसने अपनी ऊॅची आवाज में गाना गाना शुरू किया। सबने, राजा ने भी, उसके गाने को सुना –

राजा की अपनी "जौय" मर गयी है अब वह दुखी हो गया है

---

[45] Yam – Yam is a root vegetable very common in West Arica, otherwise in many African countries. It seems it is used here also in Haiti too. See its picture above on top.

[46] Plantain – Plantain is a kind of banana, much larger in size than banana, grown in tropical climate. In India it is very common in Madras and Kerala. See its picture above in the center.

[47] Translated for the word "Pumpkin". See its picture above at the bottom.

पर सारी खबर ही दुख की नहीं है क्योंकि मैं "जौय" से भरा हुआ हूँ
इसलिये चारों तरफ से देखो, मेरा कोट, तो तुम जान जाओगे
कि उसमें छोटी सी प्यारी सी बो लगी है और वह सफेद भेड़ की खाल का है

और इसमें कोई शक नहीं कि अगर कोई राजा का ध्यान अपनी तरफ खींचना चाहता था तो बूकुई ने वह खींच लिया था।

राजा दहाड़ा — "कौन गा रहा है यह गाना?"

बूकुई बोला — "यह गाना मैं गा रहा हूँ, बूकुई, आपको यह गाना पसन्द आया राजा साहब?"

औररर... इसके साथ ही वह छोटा आदमी अपना वह भेड़ की खाल का कोट दिखाने के लिये चारों तरफ को घूम गया।

इस घूमने में उसके कोट से एक रिबन और गिर गया और इस बार वह राजा के पैरों के पास जा कर पड़ा। राजा ने तुरन्त ही उस रिबन को पहचान लिया वह तो उसने अपनी जौय को कितने प्यार से बाँधा था।

बस उसको देखते ही राजा चिल्ला कर बोला — "तुम? तो वह चोर तुम हो जो मेरे महल में आये और मेरी जौय को चुरा कर ले गये?

अब तुम अपनी इस ज़िन्दगी में और कोई भेड़ नहीं चुरा पाओगे क्योंकि अब तुम्हारी ज़िन्दगी ही इतनी नहीं है जो तुम दूसरी चोरी कर सको। चौकीदार, पकड़ लो इसको।"

इससे पहले कि चौकीदार बूकुई को पकड़ते भीड़ में कुछ शोर मचा और टी मैलिस आगे आया और उसने राजा के आगे अपना सिर झुकाया और बोला — "राजा साहब, बिना मेरी सहायता के आप इस चोर को कभी नहीं पकड़ सकते थे।

यह तो मैं था जिसने इसको यहाँ आने के लिये तैयार किया। यह तो मैं था जिसने आपकी "जौय" की मौत को महसूस किया। यह तो मैं हूँ जो अब "जौय"[48] से भरा हुआ हूँ कि आपका चोर पकड़ा गया। मैं अब अपने इनाम का इन्तजार कर रहा हूँ।"

हालाँकि राजा दुनियाँ का सबसे ज़्यादा होशियार आदमी तो नहीं था पर वह बेवकूफ भी नहीं था। उसने टी मैलिस से कहा — "मैं तुमको वही इनाम दूँगा जो तुम्हें मिलना चाहिये।"

उस चालाक ने अपनी मुस्कुराहट छिपाते हुए राजा को फिर से सिर झुकाया। पर उसकी यह मुस्कुराहट बहुत देर तक नहीं रही।

राजा बोला — "मेरे पुजारी ने मुझसे कहा था कि मेरी भेड़ किसी ऐसे आदमी ने चुरायी है जो दुनियाँ का सबसे होशियार आदमी है।

और यह बात हम सब जानते हैं कि बूकुई दुनियाँ का सबसे होशियार आदमी नहीं है। वह मेरे महल में आ कर मेरी जौय को कभी चुरा ही नहीं सकता था।

[48] Joy means happiness too and It was the lamb's name also. Here it means that Ti Malis felt the death of joy (happiness) of the King and Ti Malis was filled with Joy lamb because his tummy had that lamb.

पर तुम, ओ टी मैलिस, तुम दुनियॉ के सबसे होशियार आदमी हो। तुम ही ने मेरी जौय को चुराया है और तुम ही चोर हो।"

फिर राजा अपने चौकीदारों से बोला — "चौकीदारो, पकड़ लो इस चोर को और इन दोनों को ले जा कर जेल में डाल दो।

जब मेरी यह दावत खत्म हो जायेगी तब मैं इन दोनों के बारे में कुछ सोचूँगा। इनको मेरी दी हुई सजा में कोई खुशी तो नहीं मिल सकती पर मैं इनको सजा जरूर दूँगा।"

चौकीदारों ने दोनों चोरों को पकड़ लिया और जंजीरों से बॉध कर उनको जेल में डाल दिया।

बहुत सारी कहानियों में यह कहानी यहीं खत्म हो जाती है सिवाय इसके कि राजा की सजा में उन दोनों ने बहुत कुछ सहा होगा।

पर टी मैलिस तो दुनियॉ का सबसे होशियार आदमी था और हेटी में रिश्वत देना आम बात है सो दोनों दोस्त चौकीदारों को कुछ पैसे यहॉ और कुछ पैसे वहॉ दे कर वहॉ से भाग आये।

वे राजा के उस राज्य से कहीं दूर चले गये जहॉ वे अपनी ज़िन्दगी शान्ति से गुजार सकें। जब वे जेल से भाग रहे थे तो बूकुई बोला — "यह आखिरी बार है टी मैलिस जब मैंने तुम्हारी बात मानी है। यह मेरा पक्का वायदा है।"

और अगर तुम सोचते हो कि उसने अपना वायदा निभाया होगा तभी तुम दुनियॉ के सबसे ज़्यादा होशियार आदमी हो।

16 पागल, चालाक और कॉटा[49]

एक बार की बात है कि तीन रोग थे – एक था पागल, एक था चालाक और एक था कॉटा। एक बार उन्होंने आपस में शर्त लगायी कि देखा जाये कि उनमें से कौन सबसे ज़्यादा होशियार और चालाक है। सो वे चल दिये।

उनमें से पागल सबसे आगे जा रहा था। उसने एक पेड़ के ऊपर एक मैना[50] अपने घोंसले में बैठी देखी तो उसने अपने दोस्तों से पूछा — "क्या तुम देखना चाहते हो कि मैं इस मैना के अंडे इसके नीचे से बिना इसके जाने और बिना इसको उठाये कैसे निकाल सकता हूँ?"

उसके दोनों दोस्त बोले — "हॉ हॉ देखें तुम ऐसा कैसे करते हो?"

सो वह पागल अंडे चुराने के लिये पेड़ पर चढ़ा और जब उन को वह वहॉ से ले रहा था तो चालाक ने उसके जूतों की एड़ी काटी और अपने टोप में छिपा ली। पर इससे पहले कि वह टोप अपने सिर पर रखता कॉटे ने उसके जूतों की एड़ी को उसके टोप में से निकाल लिया।

---

[49] Crack, Crook and Hook – a folktale from Irpinia area, Italy, Europe.
Translated from the book: "Italian Folktales" by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.
[50] Magpie – a singing bird. See her picture sitting in her nest.

पागल पेड़ पर से नीचे आया और बोला — "मैं सबसे ज़्यादा होशियार और चालाक हूँ क्योंकि मैंने मैना के अंडे उसके नीचे से बिना उसको वहाँ से उठाये चुरा लिये हैं।"

चालाक बोला — "नहीं मैं सबसे ज़्यादा होशियार और चालाक हूँ क्योंकि मैंने तुम्हारे बिना देखे ही तुम्हारे जूतों से तुम्हारी एड़ी निकाल ली है।"

कॉटा बोला — "मुझे लगता है कि मैं सबसे ज़्यादा होशियार और चालाक हूँ क्योंकि मैंने तुम्हारे टोप में से तुम्हारे बिना जाने ही पागल के जूतों की एड़ी चुरा ली है।

और क्योंकि मैं सबसे ज़्यादा होशियार और तेज़ हूँ इसलिये अब मैं तुम दोनों से अलग होता हूँ। मैं तुम लोगों से ज़्यादा अच्छा करूँगा।" कह कर वह अपने रास्ते चला गया।

बाद में उसने इतना पैसा इकट्ठा कर लिया कि वह बहुत अमीर हो गया। वह कई शहरों में गया। उसने शादी कर ली और फिर एक सूअर को मारने वाली दूकान खोल ली।

दूसरे दो लोग भी घूमते रहे, चोरी करते रहे और फिर लौट कर उसी शहर में आ गये जिसमें कॉटे की दूकान थी। उन्होंने कॉटे की दूकान देखी तो वह उसकी दूकान देख कर बहुत खुश हुए और आपस में बोले — "चलो अन्दर चलते हैं। यहाँ अच्छा समय गुजरेगा।"

वे दूकान के अन्दर गये तो वहॉ दूकान पर कॉटे की पत्नी बैठी थी। उन्होंने उससे कहा — "मैम, क्या हमको कुछ खाने को मिलेगा?"

कॉटे की पत्नी ने पूछा — "तुम्हें क्या चाहिये? क्या दूँ मैं तुमको?"

"चीज़[51] का एक टुकड़ा।"

सो वह उनके लिये चीज़ काटने लगी। जब वह चीज़ काट रही थी तो दोनों ने दूकान में इधर उधर देखा कि वे वहॉ से क्या उठा सकते थे। उनको वहॉ एक कटा हुआ सूअर दिखायी दे गया। वह उस दूकान में ऊपर लटका हुआ था।

उसको देख कर दोनों ने एक दूसरे को ऑखों ही ऑखों में इशारा किया कि आज रात को ही वे लोग इस सूअर को यहॉ से ले जायेंगे। कॉटे की पत्नी ने यह सब देख लिया पर वह बोली कुछ नहीं। जब उसका पति आया तो उसने उसको सब कुछ बता दिया।

अब कॉटा तो सबसे बड़ा चोर था सो उसने उन दोनों को पहचान लिया। उसने सोचा कि वे दोनों जरूर ही पागल और चालाक रहे होंगे जो उस सूअर को चुराने का प्लान बना रहे थे।

[51] Cheese is a kind of processed Indian Paneer. There are many kinds of cheese and are very popular in western world food items.

उसने अपने मन में कहा "ठीक है, तुम इन्तजार करो। मैं देखता हूँ कि तुम मेरा सूअर कैसे चुराते हो।" यह सोच कर उसने वह सूअर ओवन[52] में रख दिया।

शाम हुई तो वह सोने चला गया। जब रात हुई तो वे पागल और चालाक उस सूअर को चुराने के लिये कॉटे की दूकान पर आये। उन्होंने दूकान में चारों तरफ निगाह दौड़ायी पर वह सूअर तो उनको वहॉ कहीं दिखायी ही नहीं दिया।

सो चालाक ने सोचा कि जब सूअर कहीं दिखायी नहीं दे रहा तो इसका पलंग ही चुरा लिया जाये। उस पलंग के बराबर में कॉटे की पत्नी सो रही थी।

चालाक कॉटे की पत्नी से बोला — "सुनो, मुझे यहॉ सूअर कहीं दिखायी नहीं दे रहा है तुमने कहॉ रखा है?"

यह सोचते हुए कि वह उसका पति बोल रहा है कॉटे की पत्नी बोली — "सो जाओ, तुमको तो कुछ याद ही नहीं रहता। तुम्हीं ने तो कल रात उसे ओवन में रख दिया था।" और वह सो गयी।

अब वे दोनों चोर ओवन के पास गये उसमें से सूअर निकाला और उसको ले कर चल दिये। पहले चालाक बाहर निकला, इसके बाद पागल सूअर को अपनी पीठ पर लाद कर बाहर निकला।

[52] Oven is a box, made of iron or bricks etc which when is made hot by fire or electricity can cook food. In western world most food are cooked in this way – bread, cake, biscuits, meat dishes etc

कॉटे की दूकान के सामने ही एक छोटा सा बागीचा था। जब वे उस बागीचे को पार कर रहे थे तो पागल ने देखा कि वहॉ सूप बनाने की कुछ पत्तियॉ उग रही थीं।

सो वह आगे चालाक के पास तक पहुँचा और बोला — "कॉटे के बागीचे तक जाओ। उसके बागीचे में सूप बनाने की कई पत्तियॉ उगी हुई हैं। आज कुछ पत्तियॉ तोड़ लो जिनको हम सूअर की टॉग के साथ उबाल लेंगे।"

सो चालाक आगे से लौट कर सूप के लिये पत्तियॉ तोड़ने के लिये कॉटे के बागीचे तक वापस गया और पागल अपने रास्ते चलता चला गया।

इतने में कॉटे की ऑख खुली तो वह अपना ओवन देखने गया तो देखा कि सूअर तो वहॉ से जा चुका था। उसने अपने बागीचे की तरफ निगाह डाली तो चालाक को बागीचे में से सूप बनाने के लिये कुछ पत्ते तोड़ते देखा। उसने सोचा कि वह उसको वहीं से पत्ते तोड़ने देगा।

फिर उसने अपने घर में ही लगा हुआ सूप में डालने वाले पत्तों का एक बड़ा सा गुच्छा तोड़ लिया और अपने बागीचे की तरफ भागा ताकि वह चालाक उसको देख ले।

भागते भागते वह चालाक के आगे निकल गया और आगे जा कर उसने पागल को पकड़ लिया जो सूअर के बोझ से झुका हुआ

चला जा रहा था। कॉटे ने उसको इशारे से कहा कि थोड़ी दूर तक वह उस सूअर को ले जाने में उसकी सहायता करेगा।

पागल ने सोचा कि वह चालाक था और वह पत्ते ले कर लौट आया था और अब सूअर को ले जाने में उसकी सहायता करने के लिये इशारा कर रहा था। सो पागल ने उससे पत्ते का गुच्छा ले लिया और सूअर उसको दे दिया।

एक बार सूअर कॉटे के पास आ गया तो बस, वह तो पलटा और अपने घर की तरफ भाग लिया। कुछ ही देर में चालाक ने भी पत्ते इकट्ठे कर लिये थे सो उसने भी आगे आ कर पागल को पकड़ लिया।

पास आने पर चालाक ने देखा कि पागल के पास सूअर तो है नहीं और वह बस एक पत्तों का गुच्छा लिये आराम से चलता चला जा रहा है तो उसने उससे पूछा — "तुमने सूअर का क्या किया?"

पागल बोला — "क्या किया का क्या मतलब है। तुम ही ने तो मुझसे उसे ले लिया था।"

चालाक ने पूछा — "मैंने? लेकिन मैं तो यहॉ था ही नहीं। मैं कहॉ से लेता। मैं तो यहॉ अभी अभी आया हूँ। नहीं नहीं, मैंने नहीं लिया।"

पागल कुछ परेशान सा बोला — "पर तुमने उसको अभी कुछ देर पहले ही तो पत्तों के बदले में मुझसे उसे ले लिया था।"

चालाक बोला — "मैंने ऐसा कब किया? तुमने ही तो मुझे सूप के लिये पत्ते इकट्ठे करने को लिये भेजा था और मैं अभी अभी पत्ते ले कर चला आ रहा हूँ।"

अन्त में दोनों को पता चल गया कि कॉटे ने ही उन दोनों को बेवकूफ बनाया है। एक बार कॉटा फिर उन दोनों को बेवकूफ बना गया था इसलिये उन दोनों ने मान लिया कि उन तीनों में वही सबसे ज़्यादा चालाक और होशियार था।

17 बतखों का बॅटवारा[53]

रूस की यह लोक कथा एक बहुत ही अक्लमन्दी की और बहुत ही मजेदार लोक कथा है।

यह बहुत दिन पहले की बात नहीं है जब एक अमीर रूसी भला आदमी दो किसानों के मकानों के बीच वाले मकान में रहता था।

उनमें से एक किसान के पास इतने सारे रूबल[54] थे कि वह बहुत अच्छी तरह से रह सकता था जबकि दूसरे किसान के पास इतने कम रूबल थे कि वह अपने परिवार का गुजारा भी बहुत मुश्किल से चला पाता था।

गरीब किसान का परिवार भी बहुत बड़ा था और उसका खेत छोटा था। इसके बाद भी उसको जो कुछ भी काम अपने खेत पर करना चाहिये था उसको करने में उसको बहुत देर लग जाती थी।

उसके बच्चे उसकी कोई भी सहायता कराने के लिये बहुत छोटे थे और उसकी पत्नी का सारा दिन उन बच्चों की देखभाल में ही निकल जाता था।

---

[53] Creative Division: the Peasant and the Geese – a folktale from Russia, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=57
Adopted, retold and written by Mike Lockett.
[A version of this story can be found in Jane Yolen's "Favorite Folktales from Around the World". An earlier version can be located in "The Runaway Soldier and Other Tales of Old Russia" as told by Fruma Gottschalk in 1946.]

[54] Ruble or Rouble – name of the Russian currency, such as Rupayaa of India, Dollar of USA…

उसके पास इतना पैसा भी नहीं था कि वह किसी को अपने साथ काम करने के लिये नौकर रख लेता। इसलिये उसको सुबह से ले कर शाम तक काम करना पड़ता। बल्कि कभी कभी तो उसे रात को भी काम करना पड़ता।

हर रोज रात को जब अँधेरा हो जाता तो दोनों पति पत्नी अपनी परेशानियों पर बात करते और उनका हल निकालने की कोशिश करते पर कुछ सोच न पाते।

एक रात पति ने पत्नी से कहा — "अब हमारे पास केवल इतना ही अनाज है कि हम बच्चों को सुबह को उसका दलिया बना कर खिला सकें। बतख को खिलाने के लिये तो हमारे पास कुछ भी नहीं है।"

हर हालत में खुश रहने वाली पत्नी बोली — "यह अच्छा है। क्योंकि हमारे पास बतख में डालने के लिये नमक भी नहीं है और न ही उसमें भरने के लिये रोटी है इसलिये हमारे बच्चे अपनी सुबह भरे पेट शुरू करेंगे और हमको कल सुबह तक बतख की चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है।"

सुबह किसान की पत्नी को एक विचार आया तो वह किसान से बोली — "क्योंकि हमारे पास बतख के लिये खाना नहीं है, नमक और रोटी भी नहीं है तो क्यों न हम उसको अपने पड़ोसी को दे दें। हो सकता है कि वह हमको उसके बदले में ही कुछ दे दे।"

किसान अपनी पत्नी से बोला — "तुम हमेशा की तरह से बहुत ही चतुर हो।" कह कर वह बतख को अपनी बगल में दबा कर अपने अमीर पड़ोसी के पास ले चला।

उसका अमीर पड़ोसी अपने बहुत बड़े घर के दरवाजे पर ही खड़ा था। उस किसान को आते देख कर बोला — "आओ आओ। मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ"

उसने सोचा कि उसका गरीब पड़ोसी शायद कुछ पैसे या खाना माँगने आया होगा और उसके लिये वह उसको मना करने वाला था क्योंकि कोई आदमी किसी से पैसे ले कर अमीर नहीं होता।

किसान बोला — "जनाब मैं आपके लिये एक भेंट ले कर आया हूँ।"

"भेंट? और मेरे लिये? पर तुम तो बहुत गरीब हो। एक गरीब आदमी एक अमीर आदमी को भेंट दे यह ठीक नहीं है।" फिर उसको शर्म आयी कि उसने उस गरीब के बारे में यह सोचा कि वह उससे खाना या पैसा माँगने आया होगा।

अपनी इस शर्म को छिपाने के लिये उसने उस गरीब की भेंट वापस करने की कोशिश करते हुए कहा — "यह तो बहुत छोटी सी बतख है और मेरा परिवार बहुत बड़ा है हम इसका क्या करेंगे।

खाने के लिये मैं हूँ, मेरी एक पत्नी है, दो बेटे हैं, दो बेटियाँ हैं। यह बतख तो हमारे एक बार के खाने के लिये भी काफी नहीं होगी इसलिये अच्छा यही होगा कि तुम इसको वापस ले जाओ।"

गरीब किसान मुस्कुरा कर बोला — "जनाब, अगर आप इस बतख को आज रात को ही पकाने का सोचते हों तो मैं आपको बताता हूँ कि इस बतख को सब लोगों में ठीक से कैसे बाँटा जाये ताकि हर एक को इसका काफी माँस मिल सके। मैं शाम को आ कर आपको यह बताऊँगा कि इस बतख को कैसे बाँटना है।"

वह अमीर आदमी यह सुन कर यह जानने के लिये बहुत ही उत्सुक हो गया कि देखा जाये वह किसान उस एक बतख को उन छह लोगों में कैसे बाँटेगा। सो वह उस बतख को अन्दर ले गया और अपने रसोइये को उसको पकाने के लिये दे दी।

वह वापस लौट कर किसान के पास आया और बोला — "तुम्हारी भेंट के लिये तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। आज शाम को हम तुम्हारी बतख खायेंगे। मैं बतख को हम सब में बाँटने की होशियारी देखने के लिये तुम्हारा इन्तजार करूँगा।"

सो किसान उस बतख को उस अमीर आदमी को दे कर घर चला गया। वह और उसकी पत्नी सारा दिन अपने खेत और बच्चों के काम में लगे रहे और उस बतख को कैसे उस परिवार में बाँटा जाये इसी बात पर विचार करते रहे।

शाम को खेत से आ कर वह किसान दोबारा नहाया और अपनी सबसे साफ कमीज पहनी और ठीक से कपड़े पहन कर उस अमीर आदमी के घर बतख बाँटने के लिये चल दिया।

उस भले आदमी ने किसान के लिये दरवाजा खोला तो देखा कि वह अपने हाथ मे एक खाली प्लेट और एक तेज़ चाकू लिये खड़ा था।

रसोइये ने बतख को रोटी, अंडे, मसाले और मुशरूम से भर रखा था सो जितनी बड़ी बतख उस किसान ने उस आदमी को दी थी इस समय वह उससे साइज में दोगुनी लग रही थी।

मेज पर उस बतख के साथ साथ बहुत सारी सब्जियॉ, सूप और भी बहुत सारा खाने का सामान रखा हुआ था सो अगर वह बतख उस मेज पर न भी होती तो भी वहॉ खाने की कोई कमी नहीं थी।

सच तो यह था कि वहॉ वह खाना देख कर उस किसान के मुँह में पानी भर आया। वहॉ बैठे सभी लोग उस गरीब आदमी के खर्चे पर मजा लूटने के लिये बैठे थे।

उस किसान ने अपना चाकू उठा लिया और उस आदमी से कहा — "आप इस परिवार के सरदार हैं इसलिये आपको इसका सिर मिलना चाहिये।" इतना कह कर उसने उस बतख का सिर काट कर आदमी की प्लेट में रख दिया।

फिर उसने उसकी पत्नी से कहा — "आप अपने पति के सामने बैठती हैं इसलिये आपको इसकी पूँछ मिलनी चाहिये।" इतना कह कर उसने उस बतख की पूँछ काटी और उसकी पत्नी की प्लेट में रख दी।

फिर उसने उसके दोनों बेटों से कहा — "तुम दोनों चारों तरफ भागते रहते हो इससे तुम्हारे पैर घिसते हैं इसलिये तुमको बतख के पैरों की जरूरत है।" इतना कह कर उसने बतख के दोनों पैर काटे और उसके दोनों बेटों को दे दिये।

फिर उसने बतख के दोनों पंख काटे और उनको उस आदमी की दोनों बेटियों की प्लेटों में रखते हुए बोला — "तुम दोनों बिल्कुल देवदूत[55] की तरह लगती हो पर तुम्हारे पास पंख नहीं हैं।

साथ में मुझे यह भी पता है कि जब तुम बड़ी हो जाओगी तो तुम दोनों उड़ जाओगी और शादी कर लोगी। उस समय के लिये मैं तुमको ये पंख देता हूँ।"

उसके बाद किसान ने तुरन्त खाने के वे कटोरे उठाये जो रसोइये ने वहाँ ला कर रखे थे और उनका खाना बराबर बराबर सबकी प्लेटों में बाँट दिया।

फिर बोला — "अब आप सब देखें कि आप सब लोगों के पास बतख का बराबर का हिस्सा है और प्लेट भर कर खूब खाना है।

और क्योंकि मैं केवल एक गरीब किसान हूँ इसलिये मैं वह ले लेता हूँ जो बच गया है ताकि आप लोगों में इस बात पर झगड़ा न हो कि बचा हुआ कौन लेगा।"

कह कर उसने वहाँ से बतख का सबसे बड़ा हिस्सा, आलू, सब्जियाँ, रोटी आदि उठायीं और दरवाजे की तरफ चल दिया।

[55] Translated for the word "Angel"

एक बतख का इस तरह बॅटवारा देख कर वह भला आदमी और उसका परिवार ज़ोर से ठहाका मार कर हॅसे बिना न रह सके।

आदमी उस किसान से बोला — "यह तो हमारा सबसे अच्छा मनोरंजन था जो हमने बरसों में नहीं किया। मैं तुमको तुम्हारी इस बतख के बदले में जरूर ही कुछ दूॅगा।"

कह कर उसने रूबल भरा एक छोटा सा थैला निकाल कर उस किसान को दे दिया जो उस किसान ने खुशी से ले लिया।

इस तरह वह किसान अपने परिवार के लिये खाना और पैसा दोनों ले कर घर लौटा। इस पैसे से उसने बच्चों के दूध पीने के लिये एक गाय खरीदी और अपना हल चलाने और मशीन घुमाने और गाड़ी खींचने के लिये एक बैल खरीदा।

इन जानवरों की सहायता से अब वह ज़्यादा पैसा कमा सकता था और अपने परिवार के साथ ज़्यादा समय खर्च कर सकता था।

यह कहानी यहीं खत्म हो सकती थी जैसा कि दूसरी कहानियों में होता है जब तक कि एक आदमी की अच्छी किस्मत देख कर दूसरा कोई आदमी जलने वाला न हो।

सो इस कहानी में यह जलने वाला वह दूसरा अमीर किसान था जो उस भले आदमी के दूसरी तरफ रहता था इसलिये अब इस कहानी को आगे बढ़ाते हैं।

उस अमीर किसान ने उस गरीब किसान की नयी गाय और बैल देखे। उसने यह भी देखा कि उसके खेत भी बहुत अच्छे हो रहे हैं और उसका पड़ोसी हमेशा काम करने की बजाय अब अपने बच्चों के साथ खेल भी रहा है तो एक दिन वह इसका राज़ जानने के लिये उसके पास जा पहुँचा।

उसने उस किसान की पत्नी से बहुत ही बुरे ढंग से पूछा — "तुमको गाय और बैल खरीदने के लिये अचानक ये रूबल कहाँ से मिल गये? क्या तुम्हारे परिवार में कोई मर गया है जो तुमको यह सब पैसे दे गया?"

पत्नी बोली — "हे भगवान नहीं नहीं। आप ऐसा न कहें। हमारे परिवार में कोई नहीं मरा।

मेरे पति ने अपने पड़ोसी भले आदमी को खाने के लिये एक बतख दी थी। वह भला आदमी उस बतख को ले कर इतना खुश हुआ कि उसने हमको एक थैला भर कर रूबल दे दिये। हमने वही पैसा तरीके से खर्च करके अपनी ज़िन्दगी सुधारी हैं।"

यह सुन कर वह अमीर किसान बहुत परेशान हुआ। वह जल्दी जल्दी घर आया और अपनी पत्नी को अपने पड़ोसी की अच्छी किस्मत के बारे में बताया।

वे दोनों ही उससे जल रहे थे सो दोनों ही किसी ऐसी अच्छी भेंट के बारे में सोचने लगे जिसको वे उस भले आदमी को दे सकें ताकि वह उनको भी सिक्कों का एक थैला दे सके।

उस अमीर किसान ने कहा — "अगर वह अपनी एक पतली सी बतख दे कर उससे एक थैला सिक्के ले सकता है तो हम अपनी पॉचों मोटी बतखें उसको भेंट में दे देंगे। उन बतखों के हमें उससे भी ज़्यादा पैसे मिलेंगे।"

सो उस प्लान के अनुसार उसके अगले दिन ही उस अमीर किसान ने अपने हाथ में एक डंडी ली और वह घर खोला जिनमें वह अपनी बतखें रखता था।

उसने अपनी बतखों के पीछे वह डंडी हिलायी, उनको उस घर में से बाहर निकाला और उन सबको वह उस भले आदमी के घर के दरवाजे पर ले गया।

पहले की तरह से उस भले आदमी ने अपने घर का दरवाजा खोला और उससे पूछा — "तुम्हें क्या चाहिये?"

अमीर किसान बोला — "मैं आपके लिये ये बतखें भेंट ले कर आया हूँ।"

भला आदमी बोला — "मुझे नहीं लगता कि तुमको मुझे भेंट देनी चाहिये क्योंकि तुम मुझसे गरीब हो।"

अमीर किसान जल्दी से बोला — "पर आपने मेरे पड़ोसी से तो उसकी दी हुई भेंट ले ली है।"

भला आदमी समझ गया कि मामला क्या है। वह जान गया कि यह आदमी उस गरीब आदमी को दिये गये रूबल के थैले से जल रहा है।

सो वह बोला — "ठीक है मैं तुम्हारी भेंट ले तो लेता हूँ और तुमको इसका इनाम भी दे दूँगा पर तुमको इन पॉच बतखों को मेरी छह लोगों के परिवार में न्यायपूर्वक बॉटना पड़ेगा।"

अमीर किसान कुछ सोच कर बोला — "जनाब, मुझे नहीं लगता कि आप इन पॉच बतखों को छह आदमियों मे न्यायपूर्वक बॉट सकते हैं।"

भला आदमी बोला — "ठीक है तब हम तुम्हारे उस होशियार दोस्त को बुलवाते हैं। हमें पूरा विश्वास है कि वह यह काम अवश्य ही ठीक से करेगा।"

यह कह कर उसने अपना एक नौकर उस गरीब किसान के घर उसको लाने के लिये भेज दिया। नौकर किसान को ले कर जल्दी ही आ गया।

अमीर किसान को अभी भी शर्म आ रही थी कि वह उन बतखों को जैसा कि उस भले आदमी ने उससे कहा था बॉट नहीं पा रहा था। पर उसको इस बात का विश्वास था कि उसका पड़ोसी भी उन पॉच बतखों को छह आदमियों में न्यायपूर्वक नहीं बॉट सकेगा।

भले आदमी ने उस गरीब किसान से कहा — "पिछली बार तुम ने एक बतख को बहुत ही होशियारी से हम छह लोगों में बॉट दिया था। शायद आज तुम ये पॉच बतखें हम छह लोगों में बॉट सको।"

इस पर उस गरीब किसान ने एक बतख उठायी और उस भले आदमी को दे दी और बोला — "आप और आपकी पत्नी का एक जोड़ा है। इस एक बतख को मिला कर आप अब तीन हो गये।"

फिर उसने एक बतख उठा कर उसके दोनों बेटों को दे दी और बोला — "तुम दोनों भाई भी एक जोड़ा हो सो इस बतख को मिला कर तुम लोग भी तीन हो गये।"

फिर उसने एक बतख उठा कर उसकी दोनों बेटियों को दे दी और बोला — "तुम दोनों प्यारी बेटियॉ भी एक जोड़ा हो। तुमको भी मैं एक बतख देता हूॅ जिसको मिला कर अब तुम भी तीन हो गयी हो।"

अब उसने बची हुई दो बतखें पकड़ कर ऊपर उठा लीं और बोला — "ये दोनों बतखें भी एक जोड़ा हैं। ये बतखें मैं रख लेता हूॅ जिनको मिला कर मैं भी तीन हो जाऊॅगा।

जनाब, आपने देखा कि अब हर एक तीन तीन का एक सैट हो गया। आपकी पॉच बतखें सबमें बराबर बराबर बॅट गयी हैं।"

उसके बॅटवारे का ढंग देख कर वहॉ बैठे सब लोग फिर ज़ोर से हॅस पड़े – सिवाय उस अमीर किसान के जिसके पास अब पॉच बतखें उन बतखों से कम थीं जितनी कि उसके पास पहले थीं।

भले आदमी ने उस गरीब किसान को रूबल का पहले जैसा एक और थैला दिया। पर वह उस अमीर किसान की तरफ पलटा और

उसको भी उसकी बतखों के लिये पैसे दिये ताकि वे तीनों अच्छे दोस्त रह सकें।

18 एक पत्नी जो हवा पर ज़िन्दा थी[56]

मसीना[57] में एक राजकुमार रहता था जो जितना अमीर था उतना ही कंजूस भी था। वह दिन में केवल दो बार ही खाना खाता था।

उसके उस खाने में डबल रोटी का एक टुकड़ा होता था, एक सलामी[58] होती थी जो इतनी पतली होती थी जैसे पापड़ और एक गिलास पानी होता था।

उसके पास केवल एक नौकर था जिसको वह केवल दो पैंस[59], एक अंडा और एक टुकड़ा डबल रोटी का रोज दिया करता था। इस तरह इतनी मजदूरी पर उसके पास कोई भी नौकर एक हफ्ते से ज़्यादा नहीं टिकता था। वे कुछ दिन काम कर के ही उसके पास से भाग जाते थे।

एक बार उसने एक ऐसा नौकर रखा जो बहुत ही शैतान किस्म का आदमी था। वह आदमी इतना शैतान था कि उसका मालिक चाहे जितना भी चालाक क्यों न हो वह उसके पैर से उसके जूते मोजे भी चुरा सकता था। इसका नाम था मास्टर जोसेफ[60]।

---

[56] The Wife Who Lived on Wind (Story No 156) – a folktale from Italy from its Palermo area. Translated from the book "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980

[57] Messina is a portal city on Sicily Island of Italy in Europe.

[58] Salami is a type of cured sausage consisting of fermented and air-dried meat, typically beef or pork. Historically, salami was popular among Southern and Central European peasants because it can be stored at room temperature for up to 40 days once cut – see its picture above.

[59] Pence – old British currency – Pound, Shilling, Pence.

[60] Master Joseph

सो राजकुमार ने जब इस आदमी को अपने यहॉ काम पर रखा और उस आदमी ने वहॉ आ कर देखा कि वहॉ क्या क्या हो रहा था तो वह एक कोयला बेचने वाली के पास गया।

इस कोयला बेचने वाली की दूकान महल के बराबर में ही थी। यह कोयला बेचने वाली एक अमीर औरत थी और इसके एक सुन्दर सी बेटी थी।

उसके पास जा कर उसने उससे पूछा — "मैम, क्या आप अपनी बेटी की शादी करेंगी?"

उस औरत ने जवाब दिया — "देखो भगवान ने चाहा तो वह कोई अच्छा सा लड़का उसके लिये भेजेगा, मास्टर जोसेफ।"

मास्टर जोसेफ बोला — "राजकुमार के बारे में आपका क्या खयाल है?"

"क्या? राजकुमार? क्या तुम नहीं जानते कि वह कितना कंजूस है। वह तो इतना कंजूस है कि एक पैनी खर्च करने के लिये किसी की एक ऑख ले लेगा।"

मास्टर जोसेफ बोला — "मैम, मेरी सलाह मानिये और मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यह शादी हो जायेगी। आपको बस यही कहना है कि आपकी बेटी केवल हवा खा कर ही ज़िन्दा रहती है।"

कह कर मास्टर जोसेफ वहॉ से चला गया और राजकुमार के पास पहुॅचा और उससे बोला — "सरकार आप शादी क्यों नहीं करते? आप बड़े हो रहे हैं और जो समय निकल जाता है वह वापस तो आता नहीं।"

राजकुमार बोला — "आह, तुम क्या मेरी मौत चाहते हो? क्या तुम नहीं जानते कि एक पत्नी को रखने में कितना पैसा खर्च होता है? पैसा हाथ में से पानी की तरह से निकलता चला जाता है।

उसके लिये टोप खरीदो, सिल्क की पोशाकें खरीदो, शाल खरीदो, गाड़ियॉ रखो, उसको नाटक दिखाने ले जाओ आदि आदि। नहीं नहीं जोसेफ। यह सब कुछ नहीं। मैं यह सब नहीं कर सकता।"

"पर, योर मैजेस्टी, क्या आपने उस कोयला बेचने वाली की लड़की के बारे में सुना है? वह सुन्दर लड़की तो केवल हवा खा कर ही ज़िन्दा रहती है। इसके अलावा उसके पास अपना भी बहुत पैसा है और वह किसी भी तरह के आराम, पार्टियॉ और नाटकों की कोई परवाह नहीं करती।"

"ओह क्या तुम सच कह रहे हो? पर कोई भला केवल हवा पर ज़िन्दा कैसे रह सकता है मास्टर जोसेफ?"

मास्टर जोसेफ बोला — "सरकार, दिन में तीन बार वह अपना पंखा उठाती है और अपनी तरफ झलती है और उसी से उसकी

भूख मिट जाती है। पर अगर आप उसके भरे हुए चेहरे की तरफ देखें तो आपको लगेगा कि वह वह तो बहुत सारा मॉस खाती है।"

"तो तुम मेरे लिये उसको देखने का इन्तजाम करो।"

मास्टर जोसेफ ने तुरन्त ही हर तरह का इन्तजाम कर दिया और एक हफ्ते के अन्दर अन्दर दोनों की शादी हो गयी। इस तरह से एक कोयला बेचने वाली एक राजकुमारी बन गयी।

वह हर रोज खाने की मेज पर जाती, अपना पंखा झलती और वहॉ से बिना खाना खाये उठ आती। उधर राजकुमार उसकी तरफ खुशी से देखता कि राजकुमारी तो वाकई हवा पर ज़िन्दा थी। बाद में राजकुमारी की मॉ छिप कर उसके लिये भुना मुर्गा और कटलेट ले कर आती और वह और उसके नौकर उनको आनन्द ले ले कर खाते।

इस तरह से एक महीना बीत गया। अब कोयला बेचने वाली ने शिकायत करना शुरू किया कि कब तक वह इतना भारी खर्चा उठाती रहेगी। "कब तक मैं इस तरह से अपनी बेटी को खिलाती रहूँगी। उस बेवकूफ राजकुमार को भी तो इसमें कुछ पैसा देना चाहिये।"

सो एक दिन मास्टर जोसेफ ने राजकुमारी से कहा — "सुनो मेरी बेटी[61], अब तुम्हें करना यह है कि एक दिन तुम राजकुमार से

[61] In public he used to call her "Princess" but in private he used to call her "My Girl".

यह कहो कि बस अपनी उत्सुकता को शान्त करने के लिये तुम उसकी सम्पत्ति देखना चाहती हो।

अगर वह यह कहे कि वह इस बात से डरता है कि उसके सोने के कुछ टुकड़े तुम्हारे जूतों में चिपक जायेंगे तो उसको कहना कि तुम उसके खजाने में नंगे पैर जाने के लिये तैयार हो।"

राजकुमारी ने राजकुमार से जब यह कहा तो उसने अपना चेहरा कुछ गुस्से वाला सा बना लिया। राजकुमारी ने उससे बहुत जिद की कि वह उसको अपना खजाना दिखा दे पर वह उसको उसका खजाना दिखाने पर न मना सकी।

पर जब उसने उससे यह कहा कि वह उसका खजाना नंगे पैर देखने भी जा सकती थी तब कहीं जा कर वह उसको अपना खजाना दिखाने पर राजी हुआ।

अब मास्टर जोसेफ राजकुमारी से बोला — "जब तुम उसका खजाना देखने जाओ तो अपनी लम्बी स्कर्ट के सारे किनारे पर गोंद लगा लेना।" राजकुमारी ने ऐसा ही किया।

राजकुमार राजकुमारी को अपना खजाना दिखाने ले गया। उसने फर्श पर लगे हुए तख्तों में से एक तख्ता हटाया और एक चोर दरवाजा खोला। वहॉ से नीचे की तरफ सीढ़ियॉ जाती थीं। उसने राजकुमारी को उन सीढ़ियों से नीचे उतरने के लिये कहा।

नीचे जा कर तो राजकुमारी आश्चर्यचकित रह गयी जब उसने वहॉ सोने के डबलून्स[62] के ढेर के ढेर देखे। उस समय दुनियॉ का कोई भी राजा उसके राजकुमार पति से आधा अमीर भी नहीं था। उसके मुँह से तो आह और ऊह निकल गयी और इस आह ऊह में उसने अपने स्कर्ट को चारों तरफ हिला दिया।

इससे उसके स्कर्ट के घेरे में दर्जनों डबलून्स चिपक गये। जब वह वहॉ से लौटी तो उसने अपने स्कर्ट में से वे डबलून्स निकाल लिये। वह एक छोटा सा डबलून्स का ढेर था जो मास्टर जोसेफ उसकी मॉ को दे आया।

इस तरह वे लोग वहॉ से वे सिक्के निकालते रहे जबकि राजकुमार राजकुमारी को मेज पर पंखा झलते देखता रहा और उस हवा से उसका पेट भरते देखता रहा। वह बहुत खुश था कि उसकी पत्नी हवा पर ज़िन्दा थी।

एक दिन जब राजकुमार राजकुमारी के साथ बाहर घूमने गया हुआ था तो रास्ते में उसे अपना एक भतीजा मिला जिसको उसने शायद ही कभी देखा हो।

उसने उस नौजवान से कहा — "पिप्पिनू, क्या तुम इस लड़की को जानते हो? यह राजकुमारी है।"

---

[62] Doubloon means "double". Special gold coins. Means 2-escudo or 32 real gold coins (of 6.77 gms each). Doubloons were minted in Spain, Mexico, Peru and New Granada. The term was first used to describe the golden excellents either because of its value of two ducats or because of the double portrait of Ferdinand and Isabella.

वह नौजवान बोला — "अरे चाचा जी, मुझे नहीं मालूम था कि आपने शादी कर ली है।"

"अरे तुमको पता नहीं था? चलो अब तो तुमको पता चल गया। अगले हफ्ते तुम हमारे साथ खाना खाने के लिये आना।"

जब राजकुमार ने उसको खाने के लिये बुला लिया तब उसने सोचा कि अरे उसने उस नौजवान को खाना खाने के लिये क्यों बुला लिया। अब इस बात को जानने का कोई तरीका नहीं था कि उसको खाना खिलाने में कितना खर्चा होगा।

"मैंने उसको खाने पर क्यों बुलाया? मैं भी कितना बेवकूफ हूँ।" पर अब तो कुछ हो नहीं सकता था। उसको उसके लिये खाने का इन्तजाम तो करना ही था।

राजकुमार को एक विचार आया। उसने राजकुमारी से कहा — "तुम्हें मालूम है राजकुमारी? मॉस तो बहुत मॅहगा है। और अगर हम उसे खरीदेंगे तो हम तो बहुत गरीब हो जायेंगे।

सो बजाय मॉस खरीदने के मैं शिकार के लिये जाता हूँ और वहॉ से कुछ मॉस ले कर आता हूँ। मैं अपनी बन्दूक ले जाता हूँ और पॉच छह दिन बाद मैं बिना एक सैन्ट खर्च किये बहुत सारा शिकार ले कर आता हूँ।"

राजकुमारी बोली — "ठीक है राजकुमार। पर जल्दी आना।"

जैसे ही राजकुमार शिकार पर गया राजकुमारी ने मास्टर जोसेफ से एक ताला खोलने वाले को बुलाने के लिये कहा।

जब वह आ गया तो उसने ताला खोलने वाले से कहा कि वह उसको तभी तभी एक ऐसी चाभी बना कर दे जो उस चोर दरवाजे को खोल सके क्योंकि उसकी अपनी चाभी खो गयी थी और अब वह इस दरवाजे को खोल नहीं सकती थी।

तुरन्त ही उस ताला खोलने वाले ने एक चाभी बना दी जिससे उस चोर दरवाजे का ताला खुल गया। राजकुमारी नीचे गयी और डबलून्स के कुछ थैले ले कर वापस लौटी।

उस पैसे से उसने सब कमरों में चारों तरफ टैपेस्ट्री के पर्दे लगवाये। उन सब कमरों के लिये फर्नीचर, झाड़फानूस, शीशे, कालीन और वे सब चीज़ें खरीदीं जिनकी उन कमरों में जरूरत थी।

उसने एक चौकीदार भी लगाया जिसको उसने सिर से पैर तक सजा दिया। उसने उसको एक डंडा भी दिया जिसकी मूठ सोने की बनी थी।

राजकुमार वापस आया तो अपने ही महल को पहचान नहीं सका। उसने पूछा — "यह सब क्या है? मेरा घर कहाँ है?"

उसने अपनी आँखें मलीं और चारों तरफ देखा और फिर बोला — "कहाँ गया?" और यह कह कर वह चारों तरफ घूम घूम कर देखता रहा।

चौकीदार बोला — "सरकार, आप यहाँ क्या ढूँढ रहे हैं? आप अन्दर जाइये न।"

राजकुमार बोला — "क्या यह मेरा ही घर है?"

"अगर यह आपका घर नहीं है तो फिर किसका है? अन्दर चलिये न सरकार।"

राजकुमार अपने सिर पर हाथ मारता हुआ बोला — "ओह मेरे भगवान। लगता है कि मेरा तो सारा पैसा इन चीज़ों को खरीदने में ही चला गया। उफ़ यह राजकुमारी।"

वह घर में घुसा तो उसको सफेद संगमरमर की सीढ़ियॉ दिखायी दीं दीवारों पर टैपेस्ट्री दिखायी दी तो वह फिर बोला — "ओह मेरा तो सारा पैसा गया। ओह।"

फिर उसने शीशे देखे, तस्वीरें देखीं, सोफा और दीवान देखे तो वह एक बार फिर दुखी हो गया। मेरा तो सारा पैसा गया। वह अपने सोने वाले कमरे में गया और जा कर पलंग पर लेट गया।

तभी उसकी पत्नी आयी और उसने उससे पूछा — "राजकुमार क्या बात है?"

"ओह मेरे भगवान। मेरा तो हर सैन्ट गया।"

उसकी पत्नी ने तुरन्त ही एक नोटरी[63] और चार गवाहों को बुलवा भेजा। नोटरी आया तो उसने राजकुमार से पूछा — "राजकुमार, क्या बात है? क्या तुम्हें अपनी वसीयत लिखवानी है?"

[63] A notary public of the common law is a public officer constituted by law to serve the public in non-contentious matters usually concerned with estates, deeds, powers-of-attorney, and foreign and international business. A notary's main functions are to administer oaths and affirmations, take affidavits and statutory declarations, witnesses and authenticate the execution of certain classes of documents, take acknowledgements of deeds and other conveyances, protest notes and bills of exchange, provide notice of foreign drafts, prepare marine or ship's protests in cases of damage.

"मेरा सारा पैसा... मेरी पत्नी...।"

"क्या? फिर से कहो।"

"मेरा सारा पैसा... मेरी पत्नी...।"

"क्या तुम अपना सारा पैसा अपनी पत्नी के नाम करना चाहते हो? हॉ मैं समझ सकता हूँ। क्या यह इस तरह से ठीक है?"

"मेरा सारा पैसा... मेरी पत्नी...।"

जैसे जैसे नोटरी यह लिख रहा था कि राजकुमार ने एक दो बार गहरी सॉस ली और उसका दम निकल गया।

अब राजकुमारी राजकुमार की सम्पत्ति की अकेली वारिस थी। जब उसका दुख का समय बीत गया तो उसने मास्टर जोसेफ से शादी कर ली।

तो आखीर में उस कंजूस की सम्पत्ति किसको मिली? उस चाल खेलने वाले मास्टर जोसेफ को न।

19 पैसा परमेश्वर है[64]

एक बार एक देश का एक राजकुमार था जो बहुत अमीर था। उसके दिमाग में एक बार कुछ ऐसा आया कि वह किसी राजा के महल के सामने अपना एक महल बनवाये जो उस राजा के महल से कहीं ज़्यादा शानदार हो और कहीं ज़्यादा बढ़िया हो।

उसने ऐसा ही किया। वह एक दूसरे देश में गया और वहाँ के राजा के महल के सामने एक बहुत ही शानदार महल बनवाया। जब उसका वह महल बन गया तो उसने उस महल के सामने उसने बड़े बड़े अक्षरों में लिखवा दिया "पैसा परमेश्वर है"[65]।

जब उस देश का राजा अपने महल से बाहर निकला और उसने वह महल देखा तो उसने तुरन्त उस राजकुमार को बुलवाया। राजकुमार उस शहर में नया था और अब तक उसने उस राजा का दरबार नहीं देखा था।

राजा बोला — "बधाई हो। तुम्हारा महल तो वाकई बड़ा आश्चर्यजनक है। इस महल के मुकाबले में मेरा महल तो झोंपड़ी जैसा लग रहा है। पर यह लिखना कि "पैसा परमेश्वर है" यह क्या तुम्हारा अपना विचार है?"

---

[64] Money Can Do Everything – a folktale from Genoa, Italy, Europe.
Adapted from the book "Italian Folktales" by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.
[65] Money Can Do Everything

राजकुमार को लगा कि जैसे उसने कुछ जरा ज़्यादा ही हॉक दी है। उसने जवाब दिया — "जी हॉ, पर अगर राजा साहब इसको पसन्द नहीं करते तो मैं यह बोर्ड यहॉ से हटा देता हूॅ।"

"नहीं नहीं, मैं तो ऐसा सोचता भी नहीं कि तुम ऐसा करो। मैं तो बस तुम्हारे मुॅह से सुनना चाहता था। पर ज़रा यह तो बताओ कि इस बात से तुम्हारा मतलब क्या है। क्या तुम मुझे मरवाना चाहते हो?"

राजकुमार को लगा कि यह तो अब उसके गले में फन्दा ही पड़ गया। वह बोला — "राजा साहब, माफ कीजियेगा। मेरा यह मतलब बिल्कुल भी नहीं था। मैं यह बोर्ड वहॉ से हटवा दूॅगा और अगर आपको यह महल भी पसन्द नहीं है तो मैं इसको भी तुड़वा दूॅगा।"

राजा बोला — "नहीं नहीं, महल को तो ऐसे ही रहने दो जैसा वह है पर क्योंकि तुम इस बात का दावा करते हो कि "पैसा परमेश्वर है" तो तुम्हें इसको मुझे साबित कर के दिखाना पड़ेगा।

मैं तुमको तीन दिन देता हूॅ। इन तीन दिनों के बीच तुम मेरी बेटी से बात कर के दिखाओ तो मैं जानूॅ। अगर तुम उससे बात कर सके तो बहुत अच्छी बात है, मैं उसकी शादी तुम्हारे साथ कर दूॅगा। और अगर नहीं कर सके तो मैं तुम्हारा सिर कटवा दूॅगा। ठीक?"

राजकुमार ने यह सुना तो वह वहॉ से चला तो आया पर उसकी भूख प्यास सब गायब हो गयी। वह तो बस दिन रात यही सोचता रहा कि "मैं अपनी जान कैसे बचाऊॅ।"

दूसरे दिन तो उसको लगा कि वह तो अपने इस काम में फेल होने वाला है सो उसने अपनी वसीयत लिखने का फैसला किया।

राजकुमारी से बात करने की उसकी कोशिशें सब बेकार थीं क्योंकि राजा की बेटी एक ऐसे किले में बन्द थी जिसके चारों तरफ सौ पहरेदार पहरा दे रहे थे।

राजकुमार का रंग पीला पड़ गया था और उसके जोड़ जोड़ ढीले पड़ गये थे। वह अपने बिस्तर पर पड़ा अपनी मौत का इन्तजार कर रहा था। तभी उसकी बूढ़ी आया आयी जिसने उसको बचपन से पाला था और वह अभी भी उसकी सेवा कर रही थी।

उसको इस हालत में देख कर उसने राजकुमार से पूछा — "बेटे, तुमको क्या हुआ है? तुम्हारे मन पर क्या बोझ है? बताओ तो।"

रुऑसा हो कर उसने अपनी आया को अपनी सारी कहानी बता दी। आया बोली — "सो? इस छोटी सी बात के लिये क्या तुम ऐसे नाउम्मीद हो कर बैठे रहोगे? तुम तो मुझे हॅसा रहे हो। अच्छा मैं देखती हूॅ कि मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकती हूॅ।"

तुरन्त ही वह शहर के एक बहुत ही होशियार चॉदी का काम करने वाले के पास गयी और उसको चॉदी की एक बतख बनाने के

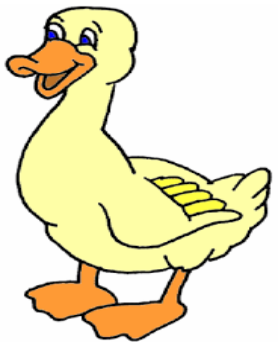

लिये कहा जो अपने पंख खोल और बन्द कर सकती हो। और यह बतख भी इतनी बड़ी होनी चाहिये कि उसमें एक आदमी बैठ सके और यह बतख कल तक तैयार हो जानी चाहिये।"

"कल तक? क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है?"

"हॉ कल तक। मैंने कहा न कल तक। तुमने सुना नहीं।"

कह कर आया ने सोने के सिक्कों का एक थैला उस चॉदी का काम करने वाले की तरफ फेंका और बोली — "दोबारा सोचना। यह तो केवल पेशगी है। मैं कल तुमको और पैसे दूँगी जब तुम मुझको वह बतख दोगे।"

यह सब देख कर तो उस चॉदी का काम करने वाले की तो बोलती ही बन्द हो गयी। उसने सोचा "इतने पैसे से तो दुनियॉ में बहुत फर्क पड़ता है।"

पैसे ले कर वह उस बुढ़िया से बोला — "मैं तुमको इस बतख को कल तक देने की अपनी पूरी पूरी कोशिश करूँगा।" अगले दिन बतख तैयार थी और वह बतख तो उसने बहुत ही सुन्दर बनायी थी।

बुढ़िया आया राजकुमार से बोली — "अपनी वायलिन ले लो और इस बतख के अन्दर बैठ जाओ। मैं इस बतख को ले कर बाहर निकलती हूँ। जब हम सड़क पर पहुँच जायें तो तुम अपनी वायलिन बजाना शुरू कर देना।"

राजकुमार उस बतख में बैठ गया और वह बुढ़िया उस बतख को ले कर सारे शहर में चक्कर काटती रही। वह बुढ़िया आया उस बतख को एक बहुत ही खूबसूरत रिबन से बॉध कर खींचती रही और वह राजकुमार उस बतख में बैठा वायलिन बजाता रहा।

यह तमाशा देखने के लिये जल्दी ही चारों तरफ लोग सड़कों पर इकट्ठा हो गये। शहर में कोई ऐसा आदमी नहीं था जो ऐसी आश्चर्यजनक बतख देखने के लिये बाहर न आया हो।

अब यह खबर किले तक भी पहुॅची जिसमें राजा की बेटी बन्द थी। उसने अपने पिता से पूछा कि क्या वह भी यह आश्चर्यजनक चीज़ देख सकती थी।

राजा बोला — "उस सुन्दर राजकुमार का तीन दिन का समय कल तक पूरा हो जायेगा उसके बाद तुम बाहर जा कर वह बतख देख सकती हो।"

पर राजा की बेटी ने सुन रखा था कि वह बुढ़िया कल वहॉ से चली जायेगी। यह बात जब उसने राजा को बतायी तो राजा ने उस बतख को किले के अन्दर ही बुलवा लिया ताकि उसकी बेटी भी उस आश्चर्यजनक बतख को देख सके।

यही तो वह बुढ़िया आया चाहती थी। राजकुमारी के कमरे में अन्दर पहुॅच कर जैसे ही राजा की बेटी उस चॉदी की बतख के साथ उसमें से निकलते संगीत का आनन्द लेती अकेली रह गयी कि बुढ़िया आया उस बतख को वहॉ छोड़ कर खिसक ली।

अचानक बतख के पंख खुले और उस बतख में से एक आदमी निकल पड़ा। अचानक ही बतख में से किसी अजनबी को अपने कमरे में देख कर राजकुमारी डर गयी और वह चिल्लाने ही वाली थी कि...

वह अजनबी आदमी बोला — "डरो नहीं। मैं ही वह राजकुमार हूँ जिससे तुम्हारे पिता ने तुमसे बात करने की शर्त लगायी है। और अगर मैं ऐसा न कर सका तो कल मेरा सिर काट दिया जायेगा। तुम यह कह कर कि तुमने मुझसे बात की है मेरी जान बचा सकती हो।"

अगले दिन राजा ने राजकुमार को बुलाया और पूछा — "क्या तुम्हारा पैसा मेरी बेटी से बात करने में तुम्हारी सहायता कर सका?"

"जी राजा साहब।"

"क्या? क्या तुम यह कहना चाहते हो कि तुम मेरी बेटी से बात कर सके?"

"आप उसी से पूछ लीजिये।"

राजा ने अपनी बेटी को बुलवाया। वह अन्दर आयी तो उसने राजा को बताया कि राजकुमार उस चॉदी की बतख के अन्दर छिप कर उसके कमरे में आया था और राजा खुद उस बतख को अन्दर ले कर आये थे।

यह सुन कर राजा ने अपना ताज अपने सिर से उठा कर राजकुमार के सिर पर रख दिया और बोला — "तुम जीते मैं हारा।

इसका मतलब यह है कि तुम्हारे पास केवल पैसा ही नहीं है एक अच्छा दिमाग भी है। तुम खुश रहो। मैं अपनी बेटी की शादी तुम्हारे साथ कर रहा हूँ।"

20 सात खुश गॉव वाले[66]

एक बार एक गॉव में सात खुशदिल आदमी रहते थे। एक दिन उन्होंने सोचा कि काम से एक दिन की छुट्टी ले कर मछली पकड़ने के लिये जाया जाये।

सो सुबह सुबह वे सब गॉव के बाहर इकट्ठे हो गये। उनके साथ साथ उनमें से एक आदमी की पत्नी भी थी जो उनको वहॉ तक छोड़ने आयी थी।

उन्होंने उससे कहा — "गॉव के लोगों से कहना कि वे जल्दी ही आग जला कर याम[67] भून लें और रोटी बना लें। हम लोग सारे गॉव वालों के लिये काफी मछलियॉ ले कर आयेंगे।

फिर हम लोग सब मिल कर खुशियॉ मनायेंगे। जब तक आदमी ज़िन्दा है तब तक हम लोग खुशियॉ मना लें तो अच्छा है।"

वह पत्नी होशियार थी। उसने उन लोगों के गॉव छोड़ने से पहले उन सबको गिन लिया — "एक, दो, तीन, चार, पॉच, छह और सात। हॉ ठीक है तुम सब सात ही हो और तुम सब यहॉ हो।

---

[66] The Seven Happy Villagers – a folktale from Philippines, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=98
Retold and written by Mike Lockett. [This story is very similar to "Nine Brothers" told in Ethiopia. Given in this book as Tale No 20.

[67] Yam is a root vegetable commonly grown and found in tropics. See its picture above.

अब जाओ, अपना दिन आनन्द से बिताओ और जब तुम लोग आ जाओगे तो सारे गॉव वाले खुशियॉ मनाने के लिये इकट्ठे होंगे।"

सातों आदमी गॉव से जंगल के रास्ते होते हुए वहॉ चल दिये जहॉ उनको मछली पकड़ने के लिये जाना था। वह जगह उनकी एक बहुत ही प्रिय नदी थी।

वहॉ पहुॅच कर उन्होंने मछलियॉ पकड़ीं और पानी में खूब खेले जैसे कि वे फिर से बच्चे हो गये हों। वे सारे दिन मछलियॉ पकड़ते रहे।

शाम होने से पहले सबसे बड़ा आदमी बोला — "अब शाम होने वाली है अब हमको घर चलना चाहिये। मुझे भूख भी लग आयी है और मुझे यकीन है कि वहॉ गॉव वालों ने हमारे लिये आग भी जला कर रखी होगी। जब हम उनके खाने के लिये इतनी सारी मछलियॉ ले कर गॉव पहुॅचेंगे तो गॉव वाले भी कितने खुश होंगे।"

वह सबसे बड़ा आदमी जबसे वह छोटा था तभी से वह उन सब का नेता भी था। सो सबने उसकी बात मान ली और वे सब चलने के लिये तैयार हो गये।

जब वे चलने लगे तो वह नेता बोला — "चलने से पहले हम एक बार अपने आपको गिन तो लें कि हम सब यहॉ पर मौजूद हैं या नहीं।"

सो उसने अपने सब दोस्तों को एक लाइन में खड़ा किया और उनको गिनना शुरू किया — "एक, दो, तीन, चार, पॉच, छह।

यहॉ तो हम केवल छह ही हैं। हममें से एक तो खो गया। ओह नहीं। जब हमने गॉव छोड़ा था तब तो हम सात थे और अब हम केवल छह ही रह गये हैं। ऐसा लगता है कि हममें से एक नदी में गिर पड़ा है और डूब गया है।"

असल में वह अपने आपको गिनना भूल गया था।

उससे दूसरा बड़ा बोला — "यह सही नहीं हो सकता। तुमसे जरूर कहीं गलती हुई है। मुझे तो याद नहीं पड़ता कि हममें से कोई नदी में गिरा है। अबकी बार मैं हर एक को गिनता हूॅ।"

उसने भी सबको एक लाइन में खड़ा किया और गिनना शुरू किया — "एक, दो, तीन, चार, पॉच, छह। यहॉ तो वाकई छह लोग हैं। तुम ठीक कहते थे। हममें से एक खो गया है।

जब हम लोगों ने गॉव छोड़ा था तब हम लोग सात थे पर अभी तो हम छह ही हैं। ऐसा लगता है कि हममें से एक यकीनन नदी में गिर पड़ा है और डूब गया है।"

वह भी अपने आपको गिनना भूल गया था।

सो उस खोये हुए आदमी को ढूॅढने के लिये सारे लोग नदी में कूद पड़े। जब उनको नदी में भी कोई नहीं मिला तो वे नदी में से निकल आये और एक बार फिर किनारे पर आ कर खड़े हो गये।

तीसरा बड़ा आदमी बोला — "इस बार मैं गिनता हूॅ। एक, दो, तीन, चार, पॉच, छह। यह तो सचमुच छह ही आदमी हैं। हममें से एक अभी भी खोया हुआ है।

हम सात थे और अब हम छह हैं। हमारा तो आज का सारा मजा ही किरकिरा हो जायेगा। हममें से एक की पत्नी बहुत दुखी होगी। इसलिये हमको पहले यह पता लगाना ही पड़ेगा कि हममें से कौन डूबा है ताकि हमको यह पता चल सके कि हमें उसकी पत्नी से क्या कहना है।"

जब सारे लोग इस तरह दुखी हो कर खड़े हुए थे तो एक बहुत ही बूढ़ा आदमी वहॉ से जा रहा था।

उसने उन सबको वहॉ उदास खड़े देखा तो बोला — "आज कितना अच्छा दिन है और तुम सब लोग उदास खड़े हो। क्या बात है? आज का दिन तो मछली पकड़ने और ज़िन्दा होने के लिये भगवान को धन्यवाद देने के लिये बहुत अच्छा दिन है।"

एक आदमी बोला — "यह तो आप ठीक कहते हैं पर यही तो परेशानी है। हम लोग जब मछली पकड़ने के लिये गॉव से चले थे तो हम सात थे।

हम लोगों ने सोचा था कि घर वापस जा कर हम लोग खुशियॉ मनायेंगे। पर अब हम लोग केवल छह ही हैं। ऐसा लगता है कि हममें से एक नदी में डूब गया है। अब हम लोग खुशियॉ कैसे मना सकते हैं जबकि हममें से एक ज़िन्दा नहीं है।"

वह बूढ़ा आदमी बोला — "अच्छा मैं गिन कर देखता हूॅ।"

उसने भी सबको एक लाइन में खड़ा किया और गिना — "एक, दो, तीन, चार, पॉच, छह और सात। तुम सब तो यहीं हो। जाओ, घर जाओ और घर जा कर खुशियॉ मनाओ।"

यह सुन कर सबसे बड़ा आदमी बोला — "तुमको भी हमारे साथ हमारे घर चल कर हमारी खुशियों में शामिल होना चाहिये। तुमने हममें से एक की ज़िन्दगी बचायी है।"

सो वह बूढ़ा भी उनके साथ उनके गॉव चला गया। इस तरह आखीर में आठ खुश आदमी गॉव लौटे और फिर उन सबने खूब आनन्द मनाया गया।

20 नौ भाई[68]

एक बार की बात है कि एक गॉव में नौ भाई अपनी मॉ के साथ रहते थे। वे सब के सब बहुत ही बेवकूफ थे।

एक बार किसी दूसरे देश ने उनके देश पर हमला कर दिया और दोनों देशों में लड़ाई छिड़ गई। तो इन नौ भाइयों ने मिल कर फैसला किया कि वे सब सेना में भरती हो कर अपने देश की रक्षा के लिये लड़ेंगे।

तो उनकी मॉ ने उनको समझाया "मेरे बच्चो, तुम लोग वहॉ जा तो रहे हो मगर सावधानी से रहना। अगर तुम लोग एक साथ रहोगे तो सुरक्षित रहोगे पर अगर तुम लोग अलग अलग हो गये तो तुम लोगों को कभी भी कोई भी नुकसान पहुॅच सकता है।"

उन्होंने मॉ की यह बात गॉठ बॉध ली और सबने एक साथ रहने का वायदा किया। फिर सबने अपने अपने कपड़े लिये, रास्ते के लिये कुछ खाना साथ में लिया और चल दिये सेना में भरती होने के लिये।

चलते चलते कुछ देर के बाद ही सबसे बड़ा भाई रुक गया और बोला "ज़रा रुको, हम देख तो लें कि हम सब यहॉ मौजूद हैं कि नहीं क्योंकि चलते समय हमारी मॉ ने कहा था कि सब साथ ही रहना।"

[68] Nine Brothers – a folktale of Jablawi Tribe of Ethiopia, East Africa

सो उसने सबको गिनना शुरू किया – एक, दो, तीन, चार, पॉच, छह, सात और यह आठ। और एक कहॉ रह गया? हम तो नौ भाई साथ चले थे।"

उसने फिर गिना, एक, दो, तीन, चार, पॉच, छह, सात और यह आठ। वह बार बार सबको गिनता था पर उसकी गिनती आठ से आगे बढ़ ही नहीं पाती थी।

वह बहुत परेशान हुआ और बोला — "यह तो बड़ी गड़बड़ हो गयी। हम लोग तो नौ भाई घर से चले थे और अब हम लोगों में से केवल आठ ही हैं। हम लोगों में से एक गायब है। कहॉ जा सकता है वह? मैं बार बार गिनता हूॅ पर मैं केवल आठ तक ही गिन पाता हूॅ।"

दूसरे भाइयों ने भी कोशिश की परन्तु वे भी आठ तक ही गिन पाये। असल में हर भाई अपने सब भाइयों को तो गिनता था पर अपने आपको गिनना भूल जाता था।

सभी भाई बहुत दुखी और परेशान थे। एक बोला "कहीं हममें से एक किसी पहाड़ी से नीचे तो नहीं गिर गया?"

दूसरा बोला "हो सकता है रास्ते में उसे कोई शेर खा गया हो।"

तीसरा बोला "या फिर उसे सॉप ने काट लिया हो।"

वे थक कर सड़क के किनारे लगे एक पेड़ के नीचे बैठ गये। वे सोच ही नहीं पा रहे थे कि वे करें तो क्या करें। बिना अपने नवें भाई को ढूँढे वे आगे नहीं बढ़ सकते थे क्योंकि माँ के कहे अनुसार अब उन पर कोई भी आफत आ सकती थी।

कुछ समय बाद वहाँ से एक अक्लमन्द आदमी गुजरा। उसने देखा कि नौ नौजवान लड़के एक पेड़ के नीचे मुँह लटकाये बैठे हैं। उसको यह कुछ अटपटा सा लगा सो वह रुक गया और उनसे पूछा "बच्चों, तुम लोग इस तरह से मुँह लटकाये क्यों बैठे हो? क्या तुम्हारा कुछ खो गया है?"

सबसे बड़ा भाई बोला — "हाँ, हमारा एक भाई खो गया है और वह हमको मिल नहीं रहा है। हम लोग उसी की वजह से परेशान हैं। हम लोग जब घर से चले थे तो हम नौ भाई थे अब हम केवल आठ हैं। एक पता नहीं कहाँ खो गया है।"

उस आदमी ने उन सबको एक नजर देखा और मुस्कुरा कर बोला "अगर मैं तुम्हारे इस खोये हुए भाई को ढूँढ दूँ तो तुम मुझे क्या दोगे?"

वे बोले — "हम अपना सारा खाना तुमको दे देंगे। तुम हमारा भाई ढूँढ दो।"

उस आदमी ने उन सबको एक लाइन में खड़ा कर दिया और सबको एक एक कर के गिना तो वे पूरे नौ थे। सभी भाई यह देख

कर बहुत खुश हुए। खुशी खुशी उन्होंने अपना सारा खाना उस आदमी को दे दिया।

वह आदमी भी उन भाइयों की बेवकूफी पर मन ही मन हॅसता हुआ उनका खाना ले कर अपने रास्ते चला गया और उधर वे भाई भी खुशी खुशी सेना में भरती होने चले गये।

22 एक राजा जो बूढ़ों से नफरत करता था[69]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के लाओस देश में कही सुनी जाती है।

बहुत दिनों पहले की बात है कि दूर देश में एक बहुत ही अक्लमन्द राजा रहता था। वह अपने आस पास बहुत सारे बड़े बूढ़ों को रखता था ताकि वह अपने फैसले करने के लिये उनसे उनकी सलाह ले सके।

उसका राज्य बहुत अमीर था और उसके राज्य के सभी लोग उससे बहुत खुश थे।

उसके राज्य में सब कुछ ठीक था सिवाय एक चीज़ के। उसके अपने बेटे को अपने महल के आस पास वे बूढ़े आदमी पसन्द नहीं थे, खास कर के वे बूढ़े लोग जो उसके पिता से मिलते थे।

एक दिन उसने अपने पिता से पूछा — "पिता जी, आप अपने पास इन सफेद बालों वाले लोगों को क्यों लगाये रखते हैं? ये लोग खुद तो बहुत पुराने ख्यालों के हैं ही और साथ ही दूसरी कोई नयी चीज़ देखना भी नहीं चाहते।"

---

[69] The King Who Hated Old People – a folktale from Laos, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=120
Retold and written by Mike Lockett.
[This story is similar to an incident happened to King Solomon. Read it in the Book "The King Solomon", and "The Queen Sheba of Ethiopia and the King Solomon" – both written by Sushma Gupta in Hindi, Delhi : Prabhat. 2019]

सच तो यह था कि उन बूढ़े लोगों को देख कर राजकुमार को लगता था कि उसका पिता बूढ़ा हो रहा है। बूढ़े राजा ने अपने बेटे को बहुत समझाने की कोशिश की कि किस तरह से ये बूढ़े लोग अच्छे बुरे समय से गुजरने के बाद होशियार हो जाते हैं पर उसका बेटा उसकी कोई बात सुनना समझना ही नहीं चाहता था।

वह बोला — "जब मैं राजा बनूँगा तब सब कुछ बदल जायेगा।"

इस बात को सच होने में ज़्यादा समय नहीं लगा। बूढ़ा राजा एक दिन बीमार पड़ा और कुछ ही दिन में मर गया। उसके मर जाने के बाद उसके नौजवान राजकुमार बेटे को राजा बना दिया गया।

जैसे ही वह राजा बना उसने वही किया जो वह कहा करता था। उसके राज्य में बहुत सारी चीजें बदल गयीं। उसने सलाह लेने के लिये अपने साथ नौजवानों को रख लिया क्योंकि वह अपने पिता की तरह से बूढ़ा होना नहीं चाहता था।

राज्य के सारे बूढ़े लोगों को राजा ने राज्य छोड़ने का हुक्म दे दिया। उन लोगों ने राजा से बात करने की कोशिश भी की पर राजा ने किसी से भी बात नहीं की। वह तो बस नौजवान सलाहकारों से घिरा हुआ था और बूढ़े लोग उन लोगों के लिये बेकार थे।

राजा का दिमाग बदला नहीं जा सका। राज्य के सारे लोगों ने अपने अपने बूढ़े माता पिता को दूर किसी गॉव में रहने के लिये भेज

दिया। कुछ बैलगाड़ी में बिठा कर अकेले छोड़ दिये गये। कुछ को सहायता की जरूरत थी सो उनके बेटे बेटियॉ उनको उठा कर ले गये। सारे राज्य में लोग रो रहे थे – सिवाय एक नौजवान के।

राजा के नये नौजवान सलाहकारों में से एक सलाहकार ने राजा की बात नहीं मानी। उसने अपने बूढ़े पिता को राज्य से बाहर नहीं निकाला बल्कि अपने घर में ही एक गुप्त कमरे में छिपा दिया।

उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी, मैं आपको कहीं नहीं भेज सकता। जब तक मैं बड़ा हुआ आपने मुझे वह सब कुछ दिया जिसकी मुझे जरूरत थी अब आपकी देखभाल करने की मेरी बारी है इसलिये मैं अब आपको कहीं नहीं भेज सकता।" और उसका पिता वहीं छिपे रूप से रहता रहा।

राजा के बूढ़े लोगों को बाहर भेज देने के कुछ समय बाद ही पास के एक ताकतवर राज्य से एक दूत आया।

उसने राजा से कहा — "हमारे राजा ने आपके पास एक सन्देश भेजा है। मैं अपने हाथ में यह एक छोटे से पेड़ की डंडी पकड़े हूँ। हमारे राजा ने पूछा है कि उस डंडी का कौन सा सिरा पेड़ के ऊपर की तरफ का है और कौन सा सिरा पेड़ के नीचे की तरफ का□

अगर आप इसका जवाब ठीक ठीक दे देंगे तो हम आपके राज्य को आजाद छोड़ देंगे और अगर आप इसका ठीक ठीक जवाब न दे पाये तो वे अपनी बड़ी सी सेना ला कर आपके राज्य

को जीत लेंगे और आपके लोगों को अपना गुलाम बना लेंगे। आपके पास इस सवाल का जवाब देने के लिये सात दिन हैं।"

अब राजा के पास तो सब नौजवान सलाहकार थे सो वे सब इस सवाल का जवाब ढूँढने के लिये इकट्ठा हुए।

राजा बोला — "तुम सब लोग नौजवान हो, होशियार हो। तुम लोग मेरे पिता के सलाहकारों के बेटे हो। मुझे इस पहेली का जवाब ला कर दो ताकि हम लड़ाई से बच सकें और अपने लोगों को दूसरे राजा का गुलाम होने से बचा सकें।"

पर उन लोगों ने तो कभी अपने पिताओं की तरह से खेत जोते नहीं थे और न ही कभी जंगलों में काम किया था। वे उस लकड़ी के बारे में कुछ नहीं बता सकते थे सो उनके पास उस सवाल का कोई जवाब नहीं था।

जवाब सोचते सोचते उन सबको छह दिन बीत गये पर किसी से कोई जवाब नहीं निकला। उस नौजवान राजा की परेशानी हर अगले दिन ज़्यादा ही बढ़ती जाती थी। वह कोई लड़ाई नहीं चाहता था लेकिन उसके पास उसको रोकने के लिये उस पहेली का कोई जवाब भी नहीं था।

वह नौजवान सलाहकार जिसने अपने पिता को छिपा कर रखा हुआ था एक दिन अपने पिता के पास आया तो बहुत परेशान था।

राज्य के अकेले बूढ़े आदमी ने पूछा — "क्या बात है बेटे, तुम इतने परेशान क्यों हो?"

बेटा बोला — "पिता जी, जल्दी ही अपने पड़ोसी देश से जो हमसे ज़्यादा ताकतवर है हमारी लड़ाई होने वाली है।"

और फिर उसने अपने पिता को उस देश के राजा के भेजे दूत और उसकी पहेली के बारे में सब कुछ बता दिया।

पिता बोला — "बेटे, जैसा मैं कहता हूँ तुम वैसा ही करो और तुम्हारी उस राज्य से कोई लड़ाई नहीं होगी। हमारा राज्य बिल्कुल सुरक्षित रहेगा।"

अगली सुबह, सातवें दिन, वह नौजवान मुस्कुराता हुआ राजा के सामने पहुँचा और बोला — "अगर आपको कोई ऐतराज न हो तो मैं इस पहेली को हल करने की कोशिश करूँ?"

राजा बोला — "अरे यह भी कोई पूछने की बात है?"

"तो आप मुझे एक कटोरा पानी मँगवा दें।"

राजा बोला — "भला इसमें ऐतराज की क्या बात है मैं अभी मँगवाये देता हूँ।" उसने तुरन्त ही अपने एक नौकर को पानी भरा कटोरा लाने के लिये कहा और वह नौकर भी वह पानी भरा कटोरा तुरन्त ही ले आया।

उस नौजवान सलाहकार ने उस दूत की लायी हुई वह डंडी उस पानी में डाल दी। पानी में डालते ही उस डंडी का एक सिरा पानी में डूब सा गया और दूसरा सिरा पानी से थोड़ा सा ऊपर उठ गया।

वह नौजवान बोला — "राजा साहब, डंडी का जो सिरा ऊपर उठ गया वह सिरा पेड़ के ऊपर की तरफ का है और जो सिरा पानी में डूब गया वह सिरा पेड़ के नीचे की तरफ का है।"

दूत ठीक जवाब सुन कर बहुत खुश हुआ और राजा को सिर झुका कर अपने राज्य जाने की इजाज़त माँगी ताकि लड़ाई शुरू होने से पहले ही खत्म की जा सके।

दूत अपने राज्य को चला गया और दरबार भी बरखास्त हो गया। तब राजा ने उस नौजवान से पूछा — "तुमको इस सवाल के जवाब का पता कैसे चला जब कि हमारा और कोई सलाहकार इस पहेली का हल पता नहीं चला सका?"

वह नौजवान बोला — "सरकार मैं झूठ नहीं बोलूँगा। मैं अपने पिता को बहुत प्यार करता हूँ और इसी वजह से मैंने आपका हुक्म नहीं माना और अपने पिता को राज्य से बाहर नहीं भेजा।

मैंने उनको अपने घर में छिपा कर रखा हुआ है। वह बूढ़े जरूर हैं पर आज उनकी अक्लमन्दी ने हमारे राज्य को बचा लिया।"

इतना कह कर वह राजा का हुक्म न मानने के लिये किसी भी सजा को मानने के लिये सिर झुका कर चुपचाप खड़ा हो गया। उसको बड़ा आश्चर्य हुआ जब राजा ने उसको कोई सजा नहीं दी।

नौजवान राजा बोला — "इतने सालों तक मैं कितना गलत था। मैं बूढ़ों को केवल इस लिये नफरत करता था क्योंकि मैं

सोचता था उनके साथ रहते रहते मैं भी बूढ़ा हो जाऊँगा पर ऐसा नहीं है।

अब मुझे पता चल रहा है कि अक्लमन्दी उम्र और तजुर्बे से आती है। अब मुझे बूढ़े होने और अक्लमन्द होने दोनों की कीमत का पता चल रहा है क्योंकि हम सब नौजवान हैं और कम जानकारी और कम तजुरबे वाले हैं।"

उसी दिन राजा की तरफ से एक नया हुक्म जारी हुआ कि सारे बूढ़ों को जिनको पहले राज्य से निकाल दिया गया था वापस ले आया जाये जहाँ उनको पूरी इज़्ज़त दी जाये।

उसके बाद जो राजा बूढ़ों से नफरत करता था वह बहुत लम्बी उम्र तक जिया और उसने बहुत सालों तक अक्लमन्दी से राज किया।

23 होशियार राजकुमारी[70]

अक्लमन्द आदमियों की लोक कथाओं में यह कथा यूरोप महाद्वीप के ऐस्टोनिया देश की है। यह बात वहॉ के राजा को ही नहीं बल्कि हर एक आदमी को मालूम थी कि राजा की बेटी बहुत सुन्दर थी।

और राजा को ही नहीं बल्कि हर एक आदमी को यह भी मालूम था कि राजकुमारी हाजिर जवाब और बोलने में बहुत ही चतुर थी। वह अपनी बातों से किसी को भी नहीं बल्कि राजा को भी चुप कर सकती थी।

यह सब देखते हुए यह जाहिर था कि राजा को उससे बहुत परेशानी थी। और वह परेशानी यह थी कि उसकी बेटी से कोई शादी नहीं कर सकता था जब तक कि उसकी बेटी की ज़बान काबू में न हो।

सो राजा ने वह सब कुछ किया जो वह उन हालात में कर सकता था। इस सिलसिले में उसने एक ऐलान कर दिया कि वह अपनी बेटी की शादी उसी से करेगा जो उसको बहस में हरायेगा।

यह सब आसान तो नहीं था पर फिर भी बहुत से राजकुमार वहॉ अपनी अपनी किस्मत आजमाने आये। और इतने सारे राजकुमार वहॉ आये कि लोग देख कर दंग रह गये।

---

[70] The Clever Princess – a folktale from Estonia, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.themuralman.com/estonia/estonia_folk_tale.html
Collected and retold by Phillip Martin

जैसे ही एक उम्मीदवार हार कर महल छोड़ कर जाता था दो और आ जाते थे।

जब इतने सारे राजकुमार राजकुमारी का हाथ माँगने आ रहे थे तो राजकुमारी की दासी को जैसे वह पहले बनाया करती थी राजकुमारी के बालों को वैसे ही बाल बनाने का समय ही नहीं मिल पा रहा था।

राजा की इस घोषणा से पहले राजकुमारी के बाल बहुत सुन्दर थे। पर अब समय न मिलने की वजह से उनकी खूबसूरती कम होती जा रही थी

और जब से यह बातचीत शुरू हुई तब से, क्योंकि राजकुमार बहुत सारे थे इसलिये यह बातचीत दिन के साथ रात में भी चलती थी, तो राजकुमारी को पूरा आराम भी नहीं मिल पाता था इसलिये उसकी आँखों के नीचे गहरे गड्ढे भी पड़ गये थे।

बातचीत में हर एक के साथ वह जीत जाती इसलिये हर राजकुमार को महल छोड़ कर जाना ही पड़ जाता। इस चक्कर में महल के रोजाना के काम काज में रुकावट आने लगी क्योंकि महल में रोज बहुत सारे आदमी आते।

हालत इतनी खराब हो गयी कि राजा को एक और ऐलान करवाना पड़ा — "कोई भी नौजवान जो राजकुमारी से शादी की इच्छा से महल में आता है वह अगर राजकुमारी से बहस में हार गया तो उसको कड़ी से कड़ी सज़ा दी जायेगी।"

राजा की इस नयी घोषणा से आने वाले नौजवानों की गिनती में एकदम से बहुत उतार आ गया। पहली बार राजकुमारी बहुत दिनों के बाद मुस्कुरायी। बहुत दिनों के बाद उसने अपने बाल बनवाये। पर राजा के चेहरे पर मुस्कुराहट नहीं थी।

वह सोचने लगा — "अगर मेरी बेटी को कोई नहीं हरा सका तो मेरी बेटी तो कुँआरी ही रह जायेगी।"

उसी समय कुछ ऐसा हुआ कि एक नौजवान भिखारी ने राजा का यह ऐलान सुना तो उसने सोचा — "मैं राजकुमारी से बहस में अच्छा क्यों नहीं हो सकता। अगर मैं जीत गया तो मुझे महल में रहने को मिल जायेगा और अगर मैं हार गया तो देखता हूँ कि राजा मुझे क्या सजा देता है।"

यह सोच कर वह भिखारी राजा के महल की तरफ चल दिया। जब वह जा रहा था तो रास्ते में उसने एक मरा हुआ कौआ देखा। उसने उसको देख कर मजा लेते हुए सोचा "क्या पता यह किस काम आ जाये।" और उसने वह कौआ अपनी जेब में रख लिया।

वह फिर महल की तरफ चल दिया। आगे जा कर उसको बीच सड़क पर पड़ा एक पुराना टब मिला।

उसको देख कर उसे याद आयी कि उसकी माँ ने कहा था कि कोई भी चीज़ बर्बाद नहीं करनी चाहिये। चाहे वह टूटा हुआ टब ही क्यों न हो, क्या पता यह कब काम आ जाये। यही सोच कर

उसने वह टब उठा कर अपनी पोटली में रख लिया और फिर आगे चल दिया।

महल जाते समय उसको कई और चीज़ें भी मिलीं सो उसने वे सब चीज़ें अपनी पोटली में उठा कर रख लीं और महल की तरफ चलता रहा।

फिर उसको एक डंडा मिला, एक हूप[71] मिला और एक बूढ़े बकरे का सींग मिला। हर चीज़ को उठाते हुए उसने यही सोचा कि पता नहीं कौन सी चीज़ कब काम आ जाये इसलिये उसने वे सब चीज़ें उठा कर रख लीं।

सो जब तक वह महल पहुँचा उसकी पोटली कई चीजों से भर गयी थी। जब वह महल के दरवाजे पर पहुँचा तो वहाँ खड़े दरबान ने उससे पूछा — "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

उस नौजवान ने जवाब दिया — "मैं यहाँ राजकुमारी जी से मिलने और उनसे शादी करने आया हूँ। क्या तुम अभी भी मुझसे बदतमीजी से बात करोगे जबकि मैं तुम्हारा होने वाला राजकुमार हूँ?"

यह सुन कर तो वह नौकर बहुत ज़ोर से हँस पड़ा और बोला — "हमारी इतनी सुन्दर राजकुमारी तुमसे शादी क्यों करने लगी? इससे पहले कि राजा के सिपाही तुमको देख लें तुम यहाँ से भाग जाओ।"

[71] Hoop – a large ring which is normally used to put on waist and turn it around it fast.

पर वह नौजवान भिखारी तो वहॉ उस नौकर की ना सुनने के लिये नहीं आया था। सो उसने उससे प्रार्थना की कि वह कम से कम राजकुमारी को यह तो बता दे कि कोई उससे शादी करने की इच्छा से खड़ा है।

काफी मिन्नतों के बाद वह नौकर उसको अन्दर ले जाने के लिये राजी हो गया। राजकुमारी को भी कई हफ्ते बीत गये थे किसी से बहस किये सो उसने उस नौजवान की प्रार्थना मान ली और उसको अन्दर बुला भेजा।

जैसे ही उस नौजवान ने राजकुमारी को देखा तो बोला — "सलाम, ओ मेरी राजकुमारी जिसके हाथ और दिल दोनों बर्फ के हैं।"

राजकुमारी ने तुरन्त ही उसको काटा — "मेरे दिल के साथ कोई गड़बड़ नहीं है। और जहॉ तक मेरे हाथों का सवाल है वे इतने गर्म हैं कि किसी कौए को भी भून सकते हैं।"

राजकुमारी ने सोचा कि उसकी यह बात उस नौजवान को चुप कर देगी पर उसको तो यह पता ही नहीं था कि वह नौजवान कितना होशियार है या फिर उसकी पोटली के अन्दर क्या है।

उस नौजवान ने आश्चर्य से पूछा — "क्या कहा? आपके हाथ एक कौए को भूनने के लिये काफी गर्म हैं? यह तो अच्छा है एक कौआ मेरे पास भी है। देखते हैं कि आपके हाथ इस कौए को भून सकते हैं या नहीं।"

राजकुमारी भी इतनी बेवकूफ नहीं थी। उसको आश्चर्य तो बहुत हुआ कि उसके पास कौआ कहाँ से आया पर उसने उसको अपने चेहरे पर झलकने नहीं दिया। वह हार मानने वाली भी नहीं थी।

वह बोली — "हम उसको अभी और यहीं भूनेंगें अगर हमारे पास कोई टब हो जिसमें हम उस चिड़िया को रख कर भून सकें।"

नौजवान भिखारी ने पूछा — "तो आपको टब चाहिये? इत्तफाक की बात है कि मेरे पास टब भी है। अरे वह यहीं तो था।" कह कर वह अपनी पोटली में टब ढूँढने लगा।

जब वह भिखारी अपनी पोटली में टब ढूँढ रहा था तब भी वह राजकुमारी शान्त बैठी थी।

जब भिखारी ने वह टब निकाला तो राजकुमारी ने उसमें एक दरार देख ली तो वह हँस कर बोली — "तुम क्या सोचते हो कि किसी टूटे बर्तन में चिड़िया पकेगी? यह तो शाह की बेइज़्ज़ती है।"

वह नौजवान मुस्कुराया और बोला — "ओ मेरी राजकुमारी, इस दरार को बन्द करने के लिये मेरे पास एक हूप और एक डंडा है।"

यह सुन कर राजकुमारी की बाँयी आँख फड़कने लगी और फिर तो वह फड़कनी रुकी ही नहीं।

राजकुमारी के पेट में हलचल सी होने लगी। उसने सोचा इस भिखारी के पास तो सब चीज़ों का जवाब है पर वह इस बात को अभी भी मानना नहीं चाहती थी।

वह बोली — "ओ भिखारी, तुम तो बड़े चिकने हो। तुम मेरे शब्दों को टेढ़ा कर देते हो और तुम किसी भी तरह फॉसे नहीं जाते।"

भिखारी मुस्कुराया — "चिकना और साथ में टेढ़ा भी। ओ राजकुमारी शायद ऐसा कुछ मेरी पोटली में भी है। हॉ यह है न वह। देखिये बकरे का यह टूटा हुआ सींग चिकना भी है फिर भी यह कितनी सुन्दरता से मुड़ा हुआ है। है न राजकुमारी जी?"

भिखारी अपने सवाल के जवाब का इन्तजार कर रहा था पर वहॉ तो कोई जवाब नहीं था। राजकुमारी इसके आगे कुछ नहीं कह सकी।

राजा के साथ सारे लोग आश्चर्य में पड़ गये। राजा ने अपने ऐलान के मुताबिक अपनी बेटी की शादी उस भिखारी से कर दी। सब उस शाही शादी में शामिल हुए।

और फिर उसके बाद तो किसी को कुछ याद ही नहीं रहा। शादी के बाद जब मेहमान जाने लगे तो राजा ने एक और ऐलान किया —

"मेरे मेहमानों, अपने दामाद से मैंने एक सबक सीखा है कि कभी यह मत कहो कि तुम अपना उद्देश्य हासिल नहीं कर सकते

और अपने सपने पूरे नहीं कर सकते। अगर तुम अपनी अक्लमन्दी इस्तेमाल करो तो तुम सब कुछ हासिल कर सकते हो।"

24 होशियार किसान[72]

अक्लमन्दों की ये कहानियॉ जो अभी हम यहॉ देंगे वे बहुत पुराने समय में यानी मध्यकालीन समय में बहुत लोकप्रिय थीं। यह पहली कहानी सिसिली की है।

एक बार की बात है कि एक राजा था। वह शिकार के लिये गया तो उसने एक किसान को अपने खेत में करते हुए देखा तो उससे पूछा — "तुम एक दिन में कितना कमा लेते हो?"

"चार कार्लिनी योर मैजेस्टी।"

"उसका तुम क्या करते हो?"

किसान बोला — "एक कार्लिनी मैं खाता हूॅ। दूसरी मैं ब्याज पर दे देता हूॅ। तीसरी मैं वापस कर देता हूॅ और चौथी मैं फेंक देता हूॅ।"

राजा यह सुन कर चल दिया पर वह किसान का जवाब भूला नहीं सो वह उस पर विचार करता रहा । वह जवाब उसको कुछ अजीब सा लगा तो वह वापस किसान के पास पहुॅचा और उससे पूछा — "जो अभी तुमने मुझसे कहा ज़रा मुझे इसका मतलब तो बताओ कि "एक कार्लिनी मैं खा लेता हूॅ दूसरी ब्याज पर दे देता हूॅ तीसरी वापस कर देता हूॅ और चौथी फेंक देता हूॅ।"

[72] The Clever Peasant. A tale from Scicily, Italy. Laura Gonzenbach (Tale No 50)

किसान बोला — "योर मैजेस्टी एक कार्लिनी का तो मैं अपना खाना खरीदता हूँ। दूसरा कार्लिनी मैं अपने बच्चों को खिला देता हूँ। तीसरे कार्लिनी का मैं अपने पिता को खाना खिला देता हूँ ऐसा करके मैं उन्हें वह वापस लौटाता हूँ जो उन्होंने मेरे लिये किया है।

और चौथी कार्लिनी से मैं अपनी पत्नी को खाना खिलाता हूँ वह मेरा बेकार जाता है क्योंकि उसको दिया गया मेरा पैसा तो बेकार ही गया न।"

राजा बोला — "यह तो तुम ठीक ही कह रहे हो। तुम मुझसे वायदा करो कि तुम इस बात को तब तक नहीं किसी और से नहीं कहोगे जब तक कि तुम मेरा चेहरा सौ बार न देख लो।"

किसान ने वायदा किया और राजा खुशी खुशी घर वापस चला गया। एक बार राजा अपने मन्त्रियों के साथ मेज पर बैठा हुआ था तो उसने सबसे कहा — "मैं तुम लोगों को एक पहेली देता हूँ। एक किसान चार कार्लिनी रोज कमाता है। उसमें से एक वह खुद खा लेता है। दूसरी वह ब्याज पर दे देता है। तीसरी वह वापस लौटाता है और चौथी वह फेंक देता है। इसका क्या मतलब है।"

कोई भी इसका जवाब नहीं दे सका। कि अचानक एक मन्त्री को याद आया कि परसों राजा एक किसान के बारे में बात कर रहे थे सो हो सकता है इसका पता उनके उसी से चला हो। सो उसने उसी किसान से उसका मतलब जानने का प्लान बनाया।

वह किसान के पास पहुँचा तो उसने किसान से इस पहेली का मतलब पूछा पर किसान ने जवाब दिया — "अफसोस यह बात मैं तुम्हें नहीं बता सकता। मैंने राजा साहब से वायदा किया है कि मैं इसका जवाब किसी को नहीं बताऊँगा जब तक कि मैं राजा साहब का चेहरा 100 बार न देख लूँ।"

मन्त्री बोला — "अच्छा। तो अगर मैंने तुम्हें राजा साहब का चेहरा 100 बार दिखा दिया तो क्या तुम मुझे वह बात बता सकते हो?"

"क्यों नहीं।"

"तो मैं तुम्हें राजा का चेहरा दिखा सकता हूँ।" कह कर उसने अपने बटुए में सौ सिक्के निकाले जिन पर राजा की तस्वीर बनी हुई थी और किसान को दे दिये।

हर एक सिक्के को देखने के बाद किसान बोला — "अब मैंने राजा साहब का चेहरा सौ बार देख लिया है अब मैं तुम्हें इस पहेली का जवाब बता सकता हूँ।" और उसने उसको जवाब बता दिया।

मन्त्री यह जान कर बहुत खुश हुआ और खुशी खुशी वह राजा साहब के पास गया और बोला — "योर मैजेस्टी। मुझे इस पहेली का जवाब पता चल गया है।" और उसने उन्हें पहेली का हल बता दिया।

राजा बोला — "यह सब तो लगता है कि तुमने खुद किसान के मुँह से सुना होगा।"

उन्होंने किसान को बुलाया और उससे पूछताछ की — "क्या तुमने मुझसे यह वायदा नहीं किया था कि तुम मेरा चेहरा जब तक सौ बार नहीं देख लोगे तब तक तुम यह बात किसी को नहीं बताओगे।"

किसान बोला — "पर योर मैजेस्टी। आपके मन्त्री ने आपकी तस्वीर मुझे सौ बार दिखा दी थी।"

उसके बाद उसने वह सिक्कों का थैला भी राजा साहब को दिखा दिया जो उसे मन्त्री ने दिया था।

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ और उस किसान की होशियारी से बहुत प्रभावित हुआ। उसने उसको इनाम दिया और ज़िन्दगी भर के लिये उसको अमीर बना दिया।[73]

[73] Almost the same story has been given by Giuseppe Pitre with the title "The Peasant and the King". (Tale No 297).

List of Stories of "Intelligent Men in Folktales"

1. Stories of Narsinh and Raam
2. The Clever Snake Charmer
3. The Foundling Prince
4. Anansi's Fishing Expedition
5. Story of Larry Goreman
6. Horse With the Golden Dung
7. An Intelligent Shepherd
8. A Story of a Student
9. Amin and Gul
10. How the Tiger Got Its Stripes
11. A Calf That Was Sold Three Times
12. Egory the Brave and the Gypsy
13. Half Sunshine and Half Shade
14. Birbal Goes to Heaven
15. The Smartest Man in all the Land
16. Crack, Crook and Hook
17. Creative Division: the peasant and the geese
18. The Wife Who Was Alive on Air
19. Money is Everything
20. Seven Happy Villagers
21. Nine Brothers
22. The King Who Hated Old People
23. Intelligent Princess
24. The Clever Peasant

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2020

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022